

CHUNILAL GANDHI VIDYABHAVAN
SURAT.

Manuscripts Library

S. D. P. B.

Coll. No. 559

(a) Viśva prakāśa.

Title (b) Ekakṣara māma-
māla.

CHUNILAL GANDHI VIDYABHAVAN, SURAT

Shastri Dinmanishankar Pustak-Bhandara

No. : 559 Subject : Lexicography

Title : (a) visva prakāśa
(b) Ekāksara nāmamālā.

Author : (a) Mahesvara.
(b) Amara. Scribe : (b) Devanama

Date of the work : - Date of the Ms. : 25.8.983

Place of the work : - Place of the Ms. : -

Size : 9.9" by 5.9" Extent : 112 fol.

Language : Sanskrit Script : Devanāgarī

Remarks : -

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ श्रीकृष्णाय नमः ॥

1914

1871

68-112-412

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ सुवीमहिमहामोहकेशांतक निषण्णं ॥ त्रैधा
 नुकनिदानं ॥ सर्वज्ञं दुःखशान्तये ॥ शाकलाविलासा नकरंद बिंदु मु
 द्राविनिद्रेहदयारविंदे ॥ याकल्पयंती रमते कवीनां देवी नमस्मामि स
 रस्वतीतां ॥ १॥ कवी प्रकुमुदानंद कंदो मसुधाकरं ॥ वाचस्पतिमति
 स्पृष्टिसे मुरवी चंद्रिको हलं ॥ ३॥ दुध्या तक्षी रात्रि कलो जमालो ध्या
 सियशः श्रियं ॥ गुरुं वंदे जगद्वं गुणरत्नै करो हणं ॥ ४॥ श्रीसाहसाक्ष
 नपतेरनवद्यविषयैघांतरंगमपदद्वयमेव बिभ्रतं ॥ आसीदसीमवसु ॥ १॥
 धाधिषवंद नीये तस्या न्वये सकलवैद्यकुलावतंसः ॥ शक्रस्य दस्त
 वगाधिपुराधिपस्य श्रीतल्ल इत्यमलकीर्तिलतावितानः ॥ ६॥ संक
 ल्यसंमिलद नत्यविकल्पजल्यः कल्यातलाकुलितवादि सहस्र
 यश्चंद्रचारुचरितो हरिचंद्रनामा स्वव्याख्याचरकतंत्रमलं चकारा ॥ ५॥ ३४

पुः ॥ तर्कत्रयत्रिनयनसनायायदीयो दामोदरः ॥ समतव द्विषजावरेण्य ॥
 तस्या तव सुनुरुदारवाचो वाचस्पतिः श्रीललनाविलासी ॥ सदैव विद्या
 नलिनीदिनेनाः श्रीमल्लः सत्कुमुदाकरेण ॥ ८॥ यज्ञातजः सकलवैद्य
 कतत्वरत्नरत्नाकरश्रियमवाप्यचकेशो नूत ॥ कीर्तनेति केतनमति
 छपदप्रमणवाकाप्रपंचरचनाचतुरानन श्रीः ॥ ९॥ तल्लस्य तस्य च सुत
 स्मितपुंडरीकसंज्ञातपत्रपरतागयशःपताकः ॥ श्रीब्रह्म इत्यविकला
 त्ममुखारविंदसो ह्यासलासितरसाद्रसरस्वतीकः ॥ १०॥ तस्यात्मज
 सरसकैरवकांतकीर्तिः श्रीमान्महेश्वर इति प्रथितः कवी प्रः ॥ तिः
 षवां जयमहासर्वपादश्चाशष्टागमांबुरुहखंडरविर्बनूवा ॥ ११॥ मः
 साहसां कचरितादिमहाप्रबंधतिमणि नैपुण गुणयं तगौरव श्रीः ॥
 ग१

स्य२

यो वैद्यकत्रयसरोजो जे सरोज बंधु बंधुः सताच कवि कैरवकान्तमंदु ॥१२॥
वयो नृतिस्तस्य महे श्वर वैद्यसिंघोः पुरुषोत्तमाना ॥ देदीप्यतां दुर्लभमले
पुनित्यमाकल्पमाकल्पित कौस्तुभश्रीः ॥१३॥ लघैः कथंचिदतिजातसुव
को४ एकारलीलेन शशतर लघिशशरलैः ॥ विश्वप्रकाश इति कांचनबंधु
शोभा बिभ्रन्मयात्रघटितो मुखमंडपः ॥१४॥ फणीश्वरो दीरितशेष
कोशरत्नकरालोडनलाहिताता ॥ सैव कथं नैष सुवर्णीरो लोवि ॥१५॥
श्वप्रकाशो विबुधाधिपाना ॥१६॥ भोगींद्रकात्यायनसाहकवाचस्प
तिव्याडिपुरसराणां ॥ सविश्वरूपा मरसमलानां सुभाद्रुजोपालितना
गुरीणां ॥१७॥ कोशावकाशात्प्रकटप्रभावसंतापिता नर्चगुणः स एष ॥
संपाद्येन्यतिवांछिर्था न कथं न चिंतामणितां कवीनां ॥१८॥ आमित्र

द१

तो१

दि४

शैलचरमाचलमेकलाद्रिकैलासचूमिवलयाघदिहास्तिकिंचित ॥ एक
त्रसंस्तमगोचरशशरत्नमालोकातां तखिलं सुधियः कवीद्रा ॥१९॥ य
द्यसिवाद्वा यमहात्मवमंथनेछात्रासुं पदं फणिपतेर्यदि कौतुकं
वः४ वौ ॥ विश्वप्रकाशमतिशंतमिमनिषेव्यसंताप्यतां परमशाहिकरोखर
श्री ॥२०॥ सतां पुस्तकसंभारभारमोहः ॥ दत्ततो मया ॥ नामानुशास
नमिदं संपूर्णं तत्त्वतां दुतां ॥२१॥ एकदित्रिचतुष्पंचषट्कानुक्रमो ह्येत्ये ॥
नं५ कातादिवर्गेर्तानार्थः संग्रहो यं वितन्यते ॥२२॥ नानार्थः प्रथमां तां
त्रसर्वत्रादौ प्रदर्शितः ॥ सप्तम्यंते पुशष्टे पुवर्तमानः सुनिश्चितः ॥२३॥
शशं२ दृष्टं तेन सहकापि सप्तम्याधार एव च ॥ स्पष्टां लिङ्गते दा यक्काप्य
त्रपुनरुक्तता ॥२४॥ कैकै को ब्रह्मात्मानिला क्के पुशमनेशर्वनामिवा

य२

पाव के चमयूरे चसुखशीर्षजलेषु कां॥२४॥ कदि। अकपापे चडः रेवेच
शकोरा जन्मदेशयो॥ बकसु बकपुषे स्यात्क के श्रीदेवरहसि॥२५॥
शुको व्याससु ते कीरे रावणस्य च मन्त्रिणि॥ ग्रंथिपर्णे शरीरे च शुक्रः शिरीषे३
स्यात्को के कचित्॥२६॥ द्विकः को के च का के च स को बाणानिलो त्यजे।
अर्कीर्क पर्णे स्फटिके रवौ ताम्रे दिवस्य तौ॥२७॥ कर्कः कर्क मते वदो
शुक्ला श्वेदपीणघटे॥ तर्कः कांरा वित कीह क मने दे मु की त्तते॥२८॥
श्रीको यशसि पद्ये च लोकसु तु वने जने॥ स्तो को त्ये चा त को कश्चक्रे ॥३०॥
वृ३ के न्ये ऐरवर्जरी दु मने दयो॥ आरो को दीप्तो बिलेरो को नो कात्रय को३
एनेदयो॥३१॥ के च स्या तौ कंचाप त्पुत्रयो॥३२॥ उ॥ ठो के विदग्धे छे क विश
स्त म गपहि तौ॥ रे को विरे के श कायारे क स्यादध मे पिचा॥३३॥ का

कः स्याद्यय सेवृ ह प्रजे दे पीठ सर्पिणि॥ शिरो वहा तने मान विशेष दीपने दयो॥
वे स वारे च धृष्टे च ज्येष्ठ त्ना तरि चैष्यते॥३४॥ का का स्यात्का क ना सयो का को
ली का क जंघयो॥ रक्ति का यां सु लिह्यो च का क मा च्यो प्रकिर्त्ति ता॥३५॥ का क
स्त्री रत बाध स्यात्का काना मपि संह तौ॥ पाकः शिशौ जरा मिष्टपचन के दनेषु॥३६॥ च५
शा को दीपां तरे शक्तौ न पदु म विशेष यो॥ शा के हरित के चापि ना कः स्वर्गो ॥३७॥
तरिह्यो॥३८॥ मू को प्य वा अतौ दीने शुको नु क्रोश सुहृदो॥ नू कश्चिन्ने च का ॥३९॥
ले चने को मंडू मेघयो॥४०॥ ए कंज के बले श्रेष्ठे इतर स्मिं श्रवा च्यवता ॥४१॥
शो के शुक्र समूहे च स्त्रीणां वकरणं तरे॥४२॥ अक स्ताने तिके मे तौरूप को
संगलं ससु॥ नाट कादि परि छेदे चित्र युद्धे च नृषणे॥४३॥ कः कः कः कः कः कः कः
ख्या तो लो हृष्ट एततां तयो॥ न कः प र्याण नागे स्या नू दी पात्रे च जंगुरा॥४४॥

रंकः कपि च ने दे स्यान्मानांतरस्वनित्रयोः॥ कोपेसि कोशे नंघा यो दे कणाया
 वरारणे॥४७॥ रंक सु तपणे मले पंकः कर्द मपापयोः॥ न्यं ऊ र्म गेरु चो नाऊ वामि
 रगिरो सुनौ॥४८॥ शंऊ की ले शिवे स्ने च संख्या यादः प्रनेदयोः॥ कस्तः पापाशये पा
 पेदे से विट किट्ट योरपि॥४९॥ वत्कं तु वत्क ले र्वं डे शं कं श कल वत्क योः॥ मु
 क्तं घटा दिदे ये स्यात् जामा तु बंध के पिचा॥५०॥ निष्क मष्टा धि क स्वर्ण शते
 दी नार कर्षयोः॥ व तो लं करणे हो मया त्रे हे मप ले पिचा॥५१॥ मुष्कोऽड कोशे संघा
 ते मुष्को मोह कपादये॥ किष्कु र्वित स्तोह से च प्र कोष्टे कु सिते पिचा॥५२॥ त्रिका
 क पस्य ने मो स्या त्रि कं दष्टा धरे त्रयोः॥ लं कार तः पुरी शा रवा डां कि नी ऊ त्र टा ॥५३॥
 सुचा॥५४॥ शं का त्रा से वित के च रा का उ सरि दे तरे ॥ ५५॥ तुरे को च नारे च का
 ॥५६॥ क कू न वर जं क न्या पू र्ण ड पू र्ण मा सुचा॥५७॥ क त्रि क न के

चंपक चंपके गौरे पीत पुष्पे च चंपकं २

चंपके स्वर्णे किंशु के नाग के सरे॥ धं तू रे का च नारे च का ली ये पि क्क चि
 न्तं॥५८॥ कर कस्तु कर के स्याद्वा डि मे च क मंड लौ॥ पक्षि ने दे करे चापि
 कर का च च तो पले॥५९॥ नर को निर ये दे त्य सर कः सी धु ता जने॥ अठिना
 धग पं तौ च सी धु पा ने च सी धु नि॥६०॥ ख न कश्चित् वि त्तं जे संधि चौर तव ४
 च मूषि के॥ जन कः पिट्ट राज र्षी र्मु त कं संश ये युगे॥६१॥ यौ त के चलन ता ५
 ५५ प्रि च स्त्री व स्त्रां च ल यु क्त योः॥ तप कः कर्ष के फाले रज को भा व के शु को ५६॥
 वंदि ४ मधु को बिंडु ने दे स्याद्घृष्टा के विहगां तरे॥ मधु को मधु प र्ण स्या दणु को ५७॥
 निपु णा त्य योः॥५८॥ व सु कः शिव मध्यो स्या द र्क प र्ण च रो म के॥ शि शु ५९॥
 कः शि शु मारे स्या द्वा ल को धू कि नोर पि॥६०॥ क्र मु कः पट्टि का लो ध्रे न ६१॥
 द्र मु स्त क पू ग योः॥ फले कर्पा सिका मा श्र क्र मु को ब्रं ह दा रु णि॥६२॥

बहुकः कर्कटे के चरासूहे जल खाद के ॥ धनिके साधु धन्या धनेषु धनिका स्त्रिय ॥ ५॥
 प्रियकः पीतसाले स्यान्नीये चित्रमृगलिनि ॥ ऊँकु मेव प्रियगोचरं युक्तश्चिपिदे
 शिशो ॥ ५॥ यमके यमजेशाले कारे संयमे पिच ॥ मराकः कथ्यते हृद्गंजु
 रोगविशेषयोः ॥ ५॥ ऊँकु के उ पटोले स्यात् श्लोक संबध गुठ के ॥ ऊँकु कश्चुके
 श्रेष्ठ वल्मी के का कतिंदु के ॥ ६॥ तिल के चित्र के प्रादुर्लभा मे तिल काल के ॥
 रोगाश्च दूमने देषु व्योम्नि सौवर्चले पिच ॥ ६॥ ऊँकु को मार्गने दे स्यात् रुम
 ने दे ऊँकु त मे ॥ ऊँकु कः स्यात् सुनौ तैल शेषे सार्ज्य पृष्ठ मो ॥ ६॥ चषके उ सु ॥ ५॥
 रापात्रे मधमघत्र ने रयो ॥ चटकः कलविके पिचट का स्त्री स्वपत्ययो ॥ ६॥ क ॥ ५॥
 टके वलये सा नौरा जधाती ते वयो ॥ समुद्र लवणे दे त मंडने दे तिना मपि ॥ ६॥
 कडु के कडु रोहिण्यो व्योपे पि कडु के स्मृता ॥ चतुः प्रज्ञे तौ तांडने दे चुलु
 निर

३ चसौव
 के ५
 धन ५

कवमतः ॥ ६५ ॥ पुलकः त्रिने दे स्यात् तन्वर्क मणि दोष यो ॥ गजान्त्र पिदे रो मा
 चे हरिताले शिलोतरे ॥ ६६ ॥ चरु के मंगल द्रव्ये ग्रीवा जरा एतयोः ॥ इक्के बी कर
 ज पूरे चर्चल विडंग यो ॥ ६७ ॥ रोचताया चरु चक मश्चा जरा एतयोः ॥ हुरकः
 को किलारव्ये स्याद्गो हुरे तिल कद्र मे ॥ ६८ ॥ कामुकः कामने शो के पाद पेचा
 ति मुक्त के ॥ पात्रुकः पात मालौ स्यात् प्रपात जल हस्तिनो ॥ ६९ ॥ आन कः
 पटहे जे र्पा मट्टे दे ॥ आठ के मानने दे स्यात् तनु वर्या माठ की मता ॥ ७० ॥
 तारकः कर्त्तु धारे च दे त्वे च दिशितार के ॥ कनीनिका योन रुत्रे तार के तार
 का पिच ॥ ७१ ॥ दूरकः क ॥ त्रिप्रोक्त मादा वपिकार के ॥ चारकः
 पाल के श्वादे स्यात् संचारक बंधयोः ॥ ७२ ॥ वाराको श्वगता वश्व विशेषे च नि
 पेध के ॥ जाह को घो घ मज्जरि व द्वा का उडि का सुच ॥ ७३ ॥ पाव को गो सदा
 ६४

^{जे १} चोर वस्त्रि मंथे च चित्र के ॥ न जात के विडे जे च सायकः शर ख डुयो ॥ ७३ ॥ नाय को मे
^{जे ३} तरि श्रेष्ठ हार मध्य मणव पि ॥ प्राण कः सत्व जा तीये जीव के द्रम शा वयो ॥ जाय
 के कोर के प्रोक्त उ लाये जा निनी फले ॥ आना ये दे ने दे च वस्त्रे ने दे च जा नि का ॥
 ७५ ॥ बाल को जे शिशौ के शो वाजि वारण बाल भौ ॥ अंगुली य क की वेर पारि हा ^{धान ५}
 रेषु बाल के ॥ ७६ ॥ बार्द के दृढ संघा ते दृढ ते दृढ कर्मणि ॥ माम के म मता यु ते
 मानु ले माम के स्मृतः ॥ ७७ ॥ याज को यज्व निख्या तो याज को राज के जरे ॥ ग्राह को घाति
 विह जे व्याधाना च गृही तरि ॥ ७८ ॥ दार को ने दे के प ते रात्र के पंच रात्र के ॥ येन ^{॥ ६१ ॥}
^{सो ३} ^{कि २} वे श्या गृहे नी नो व सरः सूत्र रात्र कः ॥ ७९ ॥ लास को विल स के ला स्प कारिण्य पि
 मयूर के ॥ शार्क के श क रा पि डे डुग्ध फे ने च शार्क कः ॥ ८० ॥ हार कः किं वे चौर गघ तर
 विज्ञान ने द यो ॥ ८१ ॥ सकार व्याच चर्चि को ज ला देर पि बु दुदे ॥ ८२ ॥ प्रात कस्तु
^{चा १}

^{क २ वृ १} ^{मु ३} ^{को ३} शिला ने दे वि रग्ध घोष के पि च ॥ नाम को जंबु के धर्त सूर्या वती र म ने द यो ॥
 ८३ ॥ पिण्या कः सिद्ध के हिं गो तिल कु के च उ उ मे ॥ पिना को हर को दंडे पां मुवर्ष
 त्रिशूल यो ॥ ८४ ॥ का व कः कृत कौ वो स्या त्यौ मस्त क का क यो ॥ हार कः पक्षि ^{त ३}
 मस्या दि पिठ के जाल के पि च ॥ ८५ ॥ पाट कः स्या न हा कि कौ कटे को तर वाद्य
 यो ॥ अक्षा दि णे ल ने मू ले र व्याप च य रो ध सो ॥ ८६ ॥ वार कः संगरे शो चो पेश ^{वरा कः ४}
 को द्र तर ख डु यो ॥ पुला कस्तु धान्ये स्या सं दे पे नूक्त सिद्ध के ॥ ८७ ॥ विपा
 कः की र्त्य ते स्वा दौ परिणामे च डुर्ग तो ॥ निपा कः पचने स्वे दे प्य सत्व र्म फले
 पि च ॥ ८८ ॥ लंपा को लं पटे देशे किं पां प्लव मूर्ध यो ॥ शम्या कस्त क के ध रे सु म्या
 कश्च उरंगुले ॥ ८९ ॥ मोच कः कदली सिंघु निर्मोच क क्षिरा गिणु ॥ पेच को जलो
 मूल मूल प र्यंत घू क यो ॥ ९० ॥ मेच को चर्हि चंद्रे स्या मेच कः स्या मेले पि ^{श्या म २}
 चाति मिरे त ल व र्णो उ मेच क वाच व द्र वे त ॥ ९१ ॥ सूच कः सी वन द्र यो
^{शि ३}

बोधकेष्टपदंशके॥ पिशुनेशुनिकाकेचसेचकसेचमेष्टयो॥ १॥ धा॥ लो॥
चकोमांसपिडेस्यादहि॥ तारचकजला॥ ललाटा॥ नरतो॥ स्त्रिणा॥ क॥ र॥ ली॥ नी॥ ल॥
वस्त्रयो॥ १॥ शनि॥ बु॥ धौ॥ क॥ र्ण॥ पू॥ रे॥ च॥ मो॥ व्य॥ न्नु॥ श्र॥ थ॥ क॥ म॥ ए॥ ॥ मो॥ द॥ को॥ ह॥ र्ष॥ के॥ रे॥ प॥
खा॥ घ॥ ने॥ दे॥ च॥ मो॥ द॥ के॥ ॥ ३॥ ॥ खो॥ लो॥ क॥ पा॥ क॥ व॥ लो॥ क॥ म॥ ग॥ को॥ श॥ शि॥ र॥ स्त्र॥ के॥ ॥ ४॥ स्त्रि॥ ४॥
गो॥ ल॥ को॥ वि॥ ध॥ वा॥ पु॥ त्रे॥ ज॥ रा॥ च॥ म॥ ए॥ के॥ गु॥ ले॥ ॥ १॥ ॥ क॥ प॥ को॥ गु॥ ए॥ व॥ हे॥ स्या॥ तै॥ ल॥
पा॥ त्रे॥ ऊ॥ ऊ॥ द॥ रे॥ ॥ उ॥ द॥ पा॥ ने॥ च॥ ता॥ या॥ च॥ क॥ पि॥ का॥ नो॥ ग॥ तो॥ प॥ ले॥ ॥ १॥ ॥ क॥ ल॥ क॥ ह॥ मि॥ शै॥ ले॥
च॥ प्र॥ ती॥ र॥ ॥ स्त्र॥ य॥ यो॥ पि॥ ॥ रूप॥ क॥ ना॥ ट॥ के॥ ध॥ र्ते॥ का॥ व्या॥ ले॥ क॥ र॥ ए॥ वि॥ डु॥ ॥ १॥ ॥ च॥ त॥ क॥ ॥ १॥ ॥
क॥ प॥ के॥ प्या॥ मे॥ सू॥ त॥ क॥ स्त॥ न॥ नो॥ ॥ भू॥ त॥ की॥ स्या॥ त्य॥ शो॥ चि॥ त्रे॥ सू॥ त॥ क॥ प्रा॥ व॥ दे॥ से॥
की॥ च॥ को॥ दे॥ ॥ त्य॥ ने॥ दे॥ च॥ शु॥ क॥ वं॥ शे॥ द्र॥ मा॥ त॥ रे॥ ॥ की॥ ट॥ क॥ ह॥ मि॥ जा॥ तो॥ स्या॥ नि॥ श्रु॥ र॥
की॥ ट॥ को॥ न्य॥ व॥ त॥ ॥ १॥ ॥ जी॥ व॥ क॥ पी॥ त॥ सा॥ ले॥ स्या॥ त॥ ह॥ प॥ ए॥ व॥ धं॥ जी॥ वि॥ नि॥ ॥ से॥ चि॥ ॥ ४॥
नि॥ प्रा॥ ण॥ के॥ प्या॥ हि॥ उ॥ उ॥ के॥ पा॥ द॥ यो॥ ॥ १॥ ॥ त॥ रे॥ ॥ १॥ ॥ आ॥ लो॥ वे॥ जी॥ वि॥ का॥ मा॥ ऊ॥ जी॥

प५

स४

वंत्यामपिऊत्रचित्॥ दीपकं वागलेकारेदीपकोदीप्तिकारके॥ वीरकोधिंक्रिया
लेखेपतंग्यावीरिकासता॥ सेकस्तुप्रसेवेस्यात्अनुजीवीनिचान्यवत्॥ १॥
अशोकोवजुलेमानेद्रमनिःशोकयोर्मतः॥ अशोकाकटुरोहिण्याअशोकपा
दैरेस्मृता॥ २॥ आलोकोदर्शनोद्योतः॥ आलोकोबेदिनापणो॥ पेटकंपुस्तकादी
नामंजृषायाकदंबके॥ ३॥ हेरुकोबुद्धनेदेस्यामहाकालगणोपिच॥ भैरुकंक
रणोस्त्रिणाधेतुनामपिसंहतो॥ ४॥ विवेकःस्माजुलद्रोण्याविचारैपिरहस्यपि॥
गैरिकंकनकेधौतौप्रसेकःसचनेश्रुतौ॥ ५॥ वैजिकेशिगुतैलेचहेतौसद्योऊ
रपिच॥ कोरकंऊजलेविधात्ककोलकमृणालयो॥ ६॥ कौतकेचाजिलोषे
स्याडुसवेनमहर्षयो॥ परंपरासमायातमंगलेचऊतहले॥ ७॥ विवाहसूत्रगी
तारितोगकामेषुचस्मृता॥ कौशिकोनऊलेव्यालगाहेगुगुलशक्रयो॥ ८॥ वि
श्रामित्रेचकोशतोवृकयोरपिकोशिका॥ कोशिकीचंडिकायाचनदीनेदे

विजेशे४

चकौशिकी॥१॥प्रतीकौवपवेप्रोक्तप्रतिकूलविलोमयो॥भूतीकमपिभूति
 वेदीप्यकपूरकर्तणे॥१॥अनीकः कामुकेरुने कवौचनयवर्जित॥बन्नी
 कोवामतूरस्यान्मुनिरोगविशेषयो॥११॥अनीकंरुणेसैन्यव्यलीकोनाग
 रस्मृतः॥बन्नीकमप्रियाकार्यविलक्ष्येपिपीडने॥१२॥नालीकपन्नखंडेहेता
 लीकःशरशिख्यो॥अलीकमप्रियोप्रोक्तमलीकममृतेदीवि॥१३॥अनू
 केउऊलेशीलेप्यनूकोगतनमनी॥अलूकःऊरुयोधेस्याल्लेपकेजंनते
 नि॥१४॥शंभूकोगजऊनांतेदैत्यनेदेपिघोषके॥बंधुकबंधुजीकेस्याबंधुक
 पीतसालके॥१५॥मंडुकबंधुनेदेपिडुडुरेशालकेविड॥मंडूपाण्यामंडूकीवली
 कश्चारणेस्मृतः॥१६॥विलेपनेचेरनेपिवर्णकेस्यादधानिकः॥डिनेमूर्खतः
 शेनूणेवर्तकोश्वरपुरेखगे॥पुष्पकचौरिकानेत्ररोगयोरन्नकंकणे॥
 ऊबेरस्यविमानेचकासीसचरसांजनो॥१७॥लोहकोस्यमृदंगारशकया
 शांशे१
 शक्ति१
 लोकहत्या१

मपि१
 पुष्पक॥पूतक॥खर्चूडेस्यान्नाशाठिल्यानुपूर्णाका॥१८॥दर्शकःस्यात्प्रतीहारे
 दर्शयिचप्रवीणयो॥पन्नपन्नकाधेनविदुजालकयोर्मत॥१९॥दीपकचाजमोरे
 स्याधनानीवर्हिचूडयो॥संस्पकःस्यान्मसौरखडेनाधिकेलेस्यचांतरे॥२०॥रक्त
 कोस्रानबंधकरक्तवस्त्रानुरागिपुचित्रकःस्यात्तरुव्याघ्रनेदयोर्नेषजोतरे॥२१॥
 वशिकसुरुणेराशौशूककोटेतथौषधे॥अंशुकंमूलावस्त्रस्याहस्त्रमा
 त्रोत्तरीययो॥२२॥अतिकेनिकटेचुल्यमेतिकासातिलोपधे॥तथाये
 एतगिन्याचनाघोत्पोंकीर्त्यातंतिका॥२३॥स्वस्तिकोमंगलद्रव्येचउक
 गृहनेदयो॥पिष्टकस्यविकारेचस्वस्तिकोरततालिके॥२४॥कंचुकोवारवा
 णेस्यान्निर्मोकेकवचेपिचा॥वर्दापकेगृहीतांगस्थितवस्त्रेचबोलके॥२५॥
 अषधोकेचुकीचाधवंचकरवलधूर्तयो॥जंबुकेगृहकानौचगसकळेकनि
 ह्नयो॥२६॥बंधकःस्यादिनिमयेपुश्वलीस्यान्नबंधकी॥गांधिकलेखकेप्रा
 खेन१

^{वी१}
 ऊः सुगंध व्यवहारिणि ॥ १२८ ॥ अधिक पिपली मूले ग्रंथि को गुणु लडु मे ॥ माद्रे ये च करी
 र च दे व जे च प्र कीर्तिता ॥ १२९ ॥ बाह्मिको देश जे दे श्वे बाह्मिके धीर हि गुनो ॥ अनयो
 र पिवाकी को याज्ञिको या ज के ऊ ॥ १३० ॥ वार्षिकं त्राप माते स्या दृषा काल न वे
 न्य ॥ १३१ ॥ खड्ग को महिषा क्षीर फेन सौ निक योर पि ॥ १३२ ॥ आह्निके दिन निर्व त्ये नो न
 ने नि त्य क म ति ॥ १३३ ॥ गंड को मल ने ध लौ कालोक्ति स्नेह पात्र यो ॥ १३४ ॥ गंड क खड्गि
 नि र्वातः संख्या विद्या प्र ने द यो ॥ अव ठे दे तरा ये व गंड की सरी दे तरा ॥ १३५ ॥ तंड क खज
 ने फे ने समा स प्राप वा चिनि ॥ गृह दारो तरु स्के ध मायो बहु ल योर पि ॥ १३६ ॥ कंठ क रु ^{या १}
 द्र शत्रो च कर्म स्थान क दोष यो ॥ रो मां चे व द्रु मां शे च कं ट को ॥ १३७ ॥
 मर के पि च ॥ १३८ ॥ तक्ष क फणि ने दे स्या इ दी कि द्रु म ने द यो ॥ पक्ष क पात्र प हे च पक्ष
 दार च पक्ष क ॥ १३९ ॥ शंख के वल ये के बो शिरो रोगे च शंख क ॥ नंद को हरि ख
 ऊ च हर्ष के कुल पाल के ॥ १४० ॥ शीत कं शीत काले च सु स्थि ते रा र्घ्य सू त्रिणि ॥
^{धमात्रे १}

^{कारिणि १} ^{त्र २} ^{न १}
 उल्ल क स्तु ति दाघे स्या दाउरे हि प्र कर्मणि ॥ १४१ ॥ दुष्कु को गंध कुघो स्या दिहा राघ
 व काश के ॥ १४२ ॥ उड क शोण के त्रे रुद्र क स्वल्प निच यो ॥ १४३ ॥ पिष्ट को ने रोगे स्या दा न्या दि
 च म से पि च ॥ न सम क रोग ते दे स्थि वि डंग क लघौ त यो ॥ १४४ ॥ चुंब क स्या कडु गुरु धू
 त पि स्का त का मु के ॥ जंबु क फेर वे नी चे प्र ती वी दि क ता व पि ॥ १४५ ॥ दुडु को बाघ से
 दे स्या दा त्व हे म द म त्त को ॥ तुर कः सिल के स्नेह जा तौ श्री वा स के क चित् ॥ १४६ ॥ का
 मु के वंश धनु षो कर्म स ते उ वा च्य व त् ॥ निर्मो को मोर के व्यो म्नि स ना हे सर्प
 के चुं के ॥ १४७ ॥ इ स्वा ऊ क दु उ व्या च सूर्य वंश न पे पि च ॥ क ची ऊ स्तु दुरा ध र्षे ड ॥
^{ह ४} शी ले च विलेश ये ॥ १४८ ॥ ऊं शा ऊ र्म ऊं टे ता नौ परो ता पि नि पा व के ॥ १४९ ॥ सु
 र्ग श्वि के व्याघ्रे चित्र के च सरी स्ते पा ॥ १५० ॥ सदा उर नि ले व जे रा वा ग्यो प्रति सूर्य
 के ॥ गोर ऊ प र्म जा तौ उ न वे न्न ग्ग क बं दि नो ॥ १५१ ॥ त्रिश ऊ शल ते रा ज वि शे
 ष ह दे श के ॥ पत्न्य को मं च परि र्थ क वृ षी प र्म स्ति का सु च ॥ १५२ ॥ कर को म स्त के

ससेनातिकरफलास्तिनि॥ कलंकोर्केपवोदेचकांलोपेन मर्त्यपिच॥ ४९॥ तां
 लां ककरपीनेस्यातशाकनेदेचरोहिते॥ महालहणसंपृणपुरुषेकछयेहरे॥
 ५०॥ वषांकः शंकरेसाधौ नधातकमहध्वयोः॥ आतंकोरोगसंतापशंकासु
 मुरजधनौ॥ ५१॥ पालं कः शधकीशाकनेदयोपादपहिणि॥ आलकेधिवत्वाके वाजि ४
 स्याद्योगोन्मादितउकुरे॥ ५२॥ उदकं एषत्कालीयफलेमदनकं केदे॥ संपर्कसु दके ५
 रतेष्टतौवितर्कसंशयोहयो॥ ५३॥ अंबिकापर्वतीपांडुजनमोरपिमातरि॥ अं
 धिकाकैतवैसिद्धेश्वर्यामपि कीर्त्यते॥ ५४॥ अम्बिकातित्रिडीकाम्बोजारेचां
 गिरिकासुच॥ मृथिकासानुकेपुष्पविशेषपिच॥ ५५॥ राजिकापिचकेशरेराज ॥ ५६॥
 सर्षपरेखयो॥ रसिकाधिसालामांकांचिरसनयोरपि॥ ५७॥ रुंडिकाधारपि
 आचदृतिकायोरणहितौ॥ नमिकारचनायां स्यान्मूर्त्यंतरपरिहे॥ ५८॥ कलि ४
 काकरिहस्ताग्रेकरमध्यांगुलावपि॥ क्रमुकादिठटोशेचकणिकाकर्णसु
 यथिका ४ ग्र २

रुणकसुदने
 विनेस्मरणे
 पुणेरणे ५

षणो॥ ५९॥ बीजकोशेसरोजस्यकुहिन्यामपिउत्रचित्॥ कणिकाकथ्यतेत्यंत
 सूक्ष्मवस्त्वग्निमंथयोः॥ ६०॥ गणिकायूथिकावेश्यातर्काकोरीकरिणीपुच॥
 गणकोपिचदेवनेकारिकानटयोपिति॥ ६१॥ त्तौविवरणश्लोकेयातना
 यांचकारिका॥ नापितादिकशल्पेचजातिजातिनिर्फले॥ ६२॥ नटनामश्मरवि
 तांगरक्षिण्योचजालिका॥ गिरिसारेजलौकायामपिस्यादिधवास्त्रियां॥ ६३॥ जा
 लिकपुनरुद्दिष्टोग्रामकूटेचधीवरो॥ नीलिकानीलिनीरुद्रो गसेपा
 लिकाखपि॥ ६४॥ कालिकायोगिनिजिदे॥ कात्येगोयांघनावत्तौ॥ ६५॥ क्रमदे
 यवस्तुमूल्येधूमरितवमेघयोः॥ पटोलशारवारोमालीमांसीकाकीपुका
 लिका॥ ६६॥ तथावृश्चिकपत्रपिमालिकासरिदंतरे॥ ग्रैवेयेपुष्पमालायां
 पद्मिहमेचमालिका॥ ६७॥ चालिकावालुकावालापिछेलाकर्णचूषणे॥
 दलिकाकथितालेख्यकूर्चिकावलशययोः॥ ६८॥ चूलिकाजाटकेस्यो

ते कर्णमूले चरति नो॥ मधिकाट ए श्रुत्येपि मीन म त्या न ते द पो॥ ६६॥ मत्रि
 को हं स मे दे च क्रिही का मित्रि का पि च॥ विलेपन म ले मि ह्या मा त प स्म रु चि स्म
 ता॥ ६७॥ वातु का सि क ता सु स्या दातु के त्वे ल वातु के॥ न गि का पि कु मा री
 स्या द थ र प ए वं दि नो॥ ६८॥ न स को धे नु को ध नौ स्त्री करे ए प्र सु त यो॥ रे
 ए का पि हरे एो स्या क्र म द मि स्त्रि या म पि॥ ६९॥ ज नु का जि न प त्रा यो ज नु के
 हि गु ला ह यो॥ क चि का सू चि का यो च त्र लि का यो च उ झ ले॥ ७०॥ क पा य
 उ ट के ही रे वि रु ता व पि क चि का॥ ना त्रि का धा त्रि का मा त्रि का का
 रणे स्व रे॥ ७१॥ प ता का वै ज यं त्यो च सौ ना गे क ध जे पि च॥ स्या तु त्रि का
 त्र लि का ड हि त्री या व द ल के॥ ७२॥ पु त्र कः सर ते धू ते शौ ल व ह प्र ने द यो॥
 उ ष्ठि का म ति का नां उ ने रे पि कर त्र स्त्रि पा॥ ७३॥ वि डि का ज ल वि वे स्या तं
 मा ए के को मु क स्त्रि यो॥ श मी का लि का यो च रा मी को नां उ व ह यो॥ ७४॥

नि१

ना ५
॥११॥

३१
 उ पि का लू ति का यो च उ पि का ने यो म ले॥ उ र्मि का तं गु ली ये स्या द स्व तं ग त र ग यो॥ त
 यो हा ड के पि स्या ड र्मि का म धु प ध नो॥ ७५॥ स्या ठि ला का पि म द न सारि का श ल्य यो॥ शि
 रं दे रं पं ज र का र्घा च शां ल की प श्रु ट ह यो॥ ७६॥ न र्त की ला सि का यो च करे ए वा म पि
 न र्त की॥ न र्त के के लि के पो ट ग ल चार ण यो र्ने टा॥ ७७॥ चु लु की शि श्रु मा रे पि उं उ त्ते
 उ लां त रे॥ च उ ष्ठी म क ह र्या च च उ ष्ठी म ष्टि को त रे॥ ७८॥ क च अ ल स कः पि के ते
 के म धू के प ध के से रे॥ न वे द लि पि को तं गे को कि ले र ति हि डि के॥ ७९॥ स्य तः ऊ रू व कः
 शो ण म्ना न फि टी प्र ने द यो॥ न वे म रु व कः पु ष्य वि शे षे द म न दु मे॥ ८०॥ ब ल्हा र को
 गि रो मे धे दे त्य ना ग वि शे ष यो॥ न म र को ए ले तं गे गि रि के चू र्ण उं त यो॥ ८१॥ व
 रा ट कं सू लं जौ प द की जे क प र्दे के॥ शृ ग ट कं न वे दारि के ट के उ ष्य थे॥ ८२॥ गो कं च ३
 को गो रु र के सु पु टे च ग वां रु रे॥ आ क त्य क स मा जो ह ग यो बु क लि का मु रो॥ ८३॥
 आ षो प को नि ल बा धे व्या धे नि दा करे पि च॥ प्र च ला क श रा घा ते ब र्हि च द्रे नु जं गे

न
 मो॥८॥ वंरारक सुरे अष्टमनो जे पुरन्यवत॥ निपा मक कर्मा धारे पोत वाहे नियंतरी
 ८॥ विनायक सुहेरं बे ता री विवे जिने गुरो॥ निश्चरं कायरी कस्य हये अरि समा री
 १०॥ ८॥ नहार क सुरे राति कथित श्व तपो धनो॥ दासर क स्यात्करने दासी पुत्र
 च धी वरो॥ ८॥ अंगार के ऊजे विद्या दु सु कोशे ऊरंटे के॥ अंगार के हु कांडे स्यात्को
 र के किं श्रुक स्य च॥ ८॥ दलार्द क सु ऊं दे स्यात्करि कर्ण शिष्यो॥ स्वयं जाते ति
 ले फेने खात के नाग के सो॥ ८॥ वा त्या यां प्रश्रिका पां चौरिके च महत्तरो॥ न वे
 ५ पा ल्पानि कं पूर्ण पात्रे पट हं त्रयो॥ ८॥ प्रकीर्ण कं ग्रंथ ने दे चामरे विस्तृत्ये॥ सुरे
 त पुष्कल को गंध मगे रूपण की लयो॥ ८॥ कोशी त क चो ज्यो स्त्री पटो ली घो ॥ १२॥
 ष के पुत्र॥ कोशा त की वाणिज को वाड वाग्नौ वृणि ज्यपि॥ ८॥ निर्ग्रथ क स्यात्त पण
 निफल पपरिष्ठे॥ स्याद श्रमं त क मुक्षने नालु का छंद ने पिचा॥ ८॥ कटि ह्व कस्तु पण सि
 वर्षा नू कार वेधयो॥ कपर्दी को वराटे स्यात्कटा जूटे च धूर्जटे॥ ८॥ गो मेद कं पी त म

नो पर
 णिका को ले पित्र के पिचा॥ मंडोद के चित्र रागे न वेरा त पण पिचा॥ ८॥ शतानि का
 मुने ने दे व दे चाथ खरा लिक॥ ग्रामणि नं डि नारा च प्र धाने पुत्र यु ज्यते॥ ले
 रवी ल को ले ख दीरे पः स्वहस्त विलेख मे ता ले खेषु पर हस्त न त्रा प्येष प्र दशि
 त॥ न वे मंडल के विवे ऊ ए ने दे च दर्पण॥ ८॥ पिष्य लं कं स्तन वं ते म त सी वन सूत्र के
 पिंडी त क स्यात्त्र गरे मदन द्रौ फणि ज के॥ ८॥ त्रिवर्ण कं गो रु र के त्रि फला पा क दु
 त्रिके॥ शाला व कः शृगाले पि सार मे ये बली मु खे॥ ८॥ कौले य क ऊ ल अष्टे स्या
 दिंद्र मंह का मु के॥ सुप्र ती कं शो न नागे न वे दी शान दि गा जे॥ ८॥ जे वा न क त शो च
 द्रे ने ष जा पु म तोर पिार त द्वि कं स्याद्वि व से सु ख स्ताने ए मंग लो॥ ८॥ वै ना शिक
 स्यात्त रुणि के पर त॥ त्रोर्ण ना ज यो॥ वै दे ह को वाणिज के श्रु द्वा द्वे ग्या सु ते पि चा॥ ८॥
 चित्तो लु कं बु ध्या त के तथा ना य म लो ष धो॥ गो कृ णि कः के करे स्यात्त क सु गो
 गो व्य पे ह यो॥ ८॥ नार्या टि को न वे द्रा य नि र्जित हरि णो तरे॥ का पोटि को न्य म म
 विदु न २

विद्या ब्रह्मिका निख्या मरु वस्त्र प्रनेदयोः ॥११॥ व केरु का बला कानितु वा ताजित शाख
 योः ॥ स्मृता घघरिका रुद्रघटिका चैष्ट धान्ययोः ॥१२॥ वा घघने देवादि त्रदंड योरा पगां तेषां कपं ॥
 स्यादा कुरित केहासन रवाघा तप्रनेदयोः ॥१३॥ गो जा करी कमित्या दुर्मंगले कंड कारके ॥
 स्यात्किं मिदे के कंचिना विडंगो डंबरे पुचा सुव संतर्क इत्येष वा सं त्या मदनो सवे ॥१४॥ कका
 वेह कमि कंति शुद्धां तो घात पातयोः ॥ द्वा रपाले कवौ सिंगेर गजी विन्यपि कंचिता ॥१५॥
 नाग वारि कउदि शेर जंजर हस्ति योः ॥ माणि क्यरा जे गरुडे चित्र मे खल के कंचिता ॥१६॥
 स्याद्भी हिराजिक का मलिका या वी न धान्य के ॥ शीत चंपक शो यं स्यादा र्पि रा दी पयो ॥१७॥
 अथो जल कर क स्याद्वा लिके रफ ले बुदे ॥ शंखे जल त ता यो च कप्य ते जल ना य कः ॥१८॥ ॥१४॥
 का का चीरा जश फर म स्य योः ॥ कट रवा द कः ॥ रवा द के का च कल शे बलि पुष्टे च जं बु के ॥१९॥
 स्यात्त्रै ली मालिका कंठे दे रव घात विधु तो ॥ स्यान्न व फलिका न के न वजा तर ज स्त्रि
 योः ॥२०॥ स्यात्तु त पर्विका इवा वच यो रूप कारिका ॥ पिष्ट ने दे गे हे रा तां उप कर्त्ता म

चिज

पीष्यते ॥२१॥ स्याद्य व हारि काले कयात्रा समाज्जनी गुदे ॥ स्यादे म शुष्पिका
 युथ्या चंप के दे म शुष्प कः ॥२२॥ कष्यट ॥ लूता मर्कट क पुत्र्या न व मा ल्या ल
 वे ग मे ॥ सिंदूर ति ल को ना गे सिंदूर ति ले का स्त्रियां ॥२३॥ वर्णा विलो ट कः श्लो ३७
 के छाया हारिणि कुं तिले ॥ मा ड ल पुत्र को धूर्त फले स्यात्ता म का ल जे ॥२४॥ ग्रा
 म मरु रि का श्रं ग्या ग्रा म युदे च की त्य ते स्या मदन शिला का पिसा र्यां का मो
 द योष धौ ॥२५॥ इति कोत वर्ग प्रथम ॥ खे के ॥ ख मिद्रिये सुखे स्वर्ग श्रूत्य विद्वा
 विहाय सि ॥ पुरे संवेदने हे त्रे कु ण हे ल फले कंचिता ॥२६॥ खदि ॥ नख कर रुहे सु
 डे ग घद्र ये न ख नखी ॥ मुखे ती सर रो व त्रे प्रा रं नो पाय मोर पि ॥ सुख श मी
 शि ना के च सुखा पुयां प्र चेत सः ॥२७॥ ले खो ले ख्य सुरे ले खालि पि राजि कयो
 र्मता ॥ नू ख सपत्न नो ते स्या सा म्ना षट् प्र रा वेष्ट पि ॥२८॥ शंखो ति ध्यं तरे क बुल
 ला व स्थि न रवी पुचा ॥ शिखा शि फा यो चू ड या ज्वा ला या मग्न मा त्र को ॥२९॥ लो ग त

विश्वरूप
विशेष
२

पादपांशोतिकेपिचा॥ प्रेरवापर्यटनेन त्वेनवेदश्चगता वपि॥ ४२॥ १२ वीखागतिविशेषेच२
कांचशाखायांचडायांचशिरवडिनः॥ सरवामित्रेसहायेचशाखापतांतरेनुजे॥ ४३॥
शाखावेदविनागेचैश्वर्यसिंहाचनेत्तने॥ मुखस्यामांलाचारेशिरागयेनये
रपि॥ ४४॥ रेखास्यादत्यकेष्ठप्रन्यानेगोलेखपारपि॥ त्रिशिरवशिखरेविंघात्रि ॥ ४५॥
लेराहसांतरे॥ ४६॥ मुमुखस्तार्पतनयेकैलितेरेचंपडिते॥ दुर्मुखेनागराजेपि
मुखरेवातराश्वयो॥ ४७॥ गोमुखकुटीलागारेवाघनाडेनुपते॥ प्रमुखःप्रथमेष्टे
ष्टुविशिरवस्तोमरेशरे॥ रथ्याखनित्रोविशिरवातालिकाग्रामपिक्वचित्ता॥ ४८॥ वि
शाखस्तर्ककेस्केदेविशाखर्हकैष्ठके॥ मयूरवस्त्रिद्वकस्वालेवैशाखोराधमय
यो॥ ४९॥ अग्निमुखेद्विजेदेवेतत्रातेचित्रकेक्वचित्ता॥ पंचनखोगजेकुर्मेशिली
मुखोतिबाणयो॥ ५०॥ नवेद्याघनेखकुंदगंधव्यविशेषयो॥ महाशखोनरा
स्त्रिस्थान्निधिसंख्याप्रतेदयो॥ ५१॥ ३३लेखामतासोमलताशशि कलासुच॥ श
शिलेखाकलात्रागेवागुशवत्ततेदयो॥ ५२॥ अग्निशिरवालांगलिकाकुंकुमेनि

॥खत्रि॥३

वैशाखोमा

विंघात्रि

शाखोराधमय

श्मनोः६

॥४५॥

शिरवमतं॥ बद्धशिरवोच्चटायांस्याद्वालेबद्धशिरवमतः॥ ५३॥ खचा॥ स्यान्मलिन
मुखप्रेतेगोलांगूलेनलेखले॥ अथशीतमयूखोपिशशोकघनसारयो॥ ५४॥ स
र्वतोमुखमारव्यातमेतरिहेचपाथसि॥ विधिहेत्ररुद्रेषुकथितः सर्वतोमुख
पथाइतिखातवर्गागोस्वर्गेवषत्रेश्मौक्लेचंद्रमसिस्मृतः॥ ५५॥ अर्जुनीनेत्रदिवा
रात्तूग्वारिषुगोर्मतागदि॥ अगशैलेदुमेनातौगवत्पवताशने॥ ५६॥ खगःसूर्यग्रहे
देवेमार्गरोचविहंगमे॥ नगमैश्वर्यमाहात्म्यज्ञानवैराग्ययोनिषु॥ ५७॥ यशोवीर्य
प्रयत्नेछाश्रीधर्मरविमुक्तिषु॥ युगहस्तचतुष्केपिरथसीरांगयोयुगः॥ ५८॥ यु
गंनतादोयुगलेवर्द्धिनामौषधेपिचा॥ पशौकुरंगेचकरिनरुत्रतेदयो॥ ५९॥ यां
चायांमृगयायांचमृगीनुवनितानरे॥ ६०॥ अक्रैप्रपानेचजमदमोपिनाकि
नि॥ ६१॥ नागोरूपाईकेप्रोक्तेनागधेयैकदेशयोः॥ नागंउसीसकेरंगेस्व
बंधकरणंतरे॥ ६२॥ नागःपन्नगमानं गक्रुशचाहिषुतोयदे॥ नागकेसरउ

न५

शो ५ यो ३

त्रागनागदंतकमुस्तके ॥५॥ देहनिजवने देहश्रेष्ठे स्यादन्तरे स्थितः ॥ रागोत्तरको
 आश्रये केशादौ जो हिनादिषु ॥६॥ गांधारादौ नृपरागस्यागोवर्जनदानयो ॥ यो
 गः सुखे धने चाहं शरीरफलमिति ॥६॥ पातने न्यवहारे च निवेशे पण्योषिता ॥ योगी
 पूर्वार्थसंप्राप्तौ संगतिज्ञानपुक्तिषु ॥६॥ वापुं स्तैर्यं प्रयोगे च विष्कं नादिषु नेषजे ॥
 विश्रब्धघातिनिद्रव्योपायसन्नहनेष्वपि ॥६॥ वेगोजवे प्रवाहे च महाकालफलेषु
 चापूगस्तु क्रमुके वंदे चंगं न नदहयो ॥६॥ आंगात्रांतिकोपायप्रतीकैष्वप्र
 धानके ॥ टेकं तपेण नैरे च जघायां च खनित्रके ॥६॥ उंगपुत्रागनगयो ॥६॥
 बुधे स्यादुन्नते न्यवत ॥ वच्चैरा निशयो सुगीवेगं सी स करंगयो ॥६॥ रव
 जः कार्पासवात्तकिवेशे नेरे पुनापित ॥ लिंगं संगे च सिद्धे व्यंगोहीनागने कयो ॥६॥
 गिर्धर्तक लाया स्यादिंगिते च प्रसाधने ॥ नंगस्तरंगस्येदे जयविपर्ययो ॥ नंगाशरण
 रव्यसस्येपि नंगाधूम्याटसिद्धयो ॥६॥ मधुव्रतेपि नगश्च केशराजगुडत्वयो ॥

स्वि ३ नेदे २

॥१६॥

कामलेपिच
 योगस्यादौ
 गऊष्टोषधे
 गदे ५

रंगोरणां स्वतोरान्तरं नृपुण्यपि ॥७॥ लिंगं चिह्नं उमानेपि सारव्योक्तप्रहतावपि ॥
 शिवमूर्तिविशेषेपि मेहने च प्रयुज्यते ॥१॥ अंगप्रनुत्वे शिखरे चिह्ने क्रिडां बुधे च के ॥
 विषाणोत्कर्षयोश्चाप्यश्रंगः स्यात्कूर्चशीर्षके ॥१॥ अंगीविषाया मृषने स्वर्णमीनवि
 शेषयो ॥ गंगा सुगंगा सन्नते नीमशक्तिधरेपि चा ॥१॥ पिंगः पिंगंगे पिंगी उग्रम्यापि
 सुवालके ॥ समंतेनालिकायां उपिंगागोरोचनो मनामयो ॥१॥ खड्गो गंडकशृंगासिपु
 नेरे पुगंडके ॥ दुर्गस्या दुर्गमे दुर्गगौरीलिकयोरपि ॥१॥ स्वर्गस्तु निश्चयाध्यामा मोहो
 स्माहात्मसिद्धिषु ॥ मार्गो मगमदे मासप्रनेरेत्वे पराधनो ॥१॥ शार्ङ्गिकार्मुकमात्रेपि
 विलोरपिशरासने ॥ वल्गुकागे मनोहे च वल्गुनापितमन्यवत ॥ फल्गुप्रोक्तमलघाचनि
 सासारे फल्गुवाच्यवत ॥ अंगीवराभ्रातकयोः कर्कशामपि विश्रुता ॥१॥ गंगीमुनिविशे
 पे स्यात्तद्वेषे किंचुलकेपि च ॥ गजि ॥ पन्नगमुद्राकाशे स्यात्पन्नगोपि नुजंगमो ॥ जे वेगे
 वातरेनेके सारथो नो हरी धिते ॥ ब्रह्मगो मंदं सर्वे विहंगश्चाश्रुगेरवगे ॥ सर्वगं सलि

लेख्या तसर्वगः शंकरविनो ॥ ८० ॥ आयोगो वरुण छत्रे पूर्णता यन्मयोरपि ॥ आयोगो व्यास
 तौ गंधमाव्योपहार रोधयो ॥ ८१ ॥ आयोगो विधुरे कूटे विश्वेषे कटितो यमे ॥ आयोगो मा
 रुते बाणेषु द्वे गं क्रमुकी फले ॥ ८२ ॥ उदे गोप्युदाहुल कोद्वेज नो जमनेषु च ॥ संयोगो सु
 रते नोगे संयोगो जिते नशासने ॥ ८३ ॥ परागः पुष्परजसि धूलि स्नानीय योरपि ॥ गिरि प्र
 जेदे विख्याता बुपरागे पि चंदने ॥ ८४ ॥ प्रयागः स्तीर्थ जेदे स्यात्पर्ये शत मरवा श्रये ॥ प्र
 योगः काणो प्रोक्तः प्रयुक्तो च निदर्शने ॥ ८५ ॥ वातिगः कथितो नंद्यां धाउर्वादि निवातिगः ॥
 तद्राकस्तु जलाधार विशेषे यत्र कूटे ॥ ८६ ॥ पुनागः पुरुषः श्रेष्ठे पांडुनागे सितो मले ॥ ८७ ॥
 जाती फले च पुनागो निसर्गः शीलसर्गयो ॥ ८८ ॥ विसर्गः स्थागवद्वा ने विसर्गो मलनिमि ॥ ८९ ॥
 विसर्जनो येष्य यन प्रनेदे पिविता वसो ॥ ९० ॥ उमर्गो विजने त्यागे सामान्य न्याय
 दानयोः ॥ त्रिवर्गो धर्म कामार्थे त्रिफलायां कटु त्रिके ॥ ९१ ॥ वृद्धि स्थान रुये सत्त्व
 रजस्तमसि चेष्यते ॥ तातगुः सुद्रता ते स्यान्ननयि तृप्ति तपि च ॥ ९२ ॥ अनर्गो

३१

मदने नंगमाकाशमनसोः स्मृतं ॥ मृदंगः पटदे घोषे मृदंगः सिद्धसर्पयोः ॥
 ॥ ९३ ॥ पतंगः शयने शालिप्रजे देविदुर्गे रवौ ॥ पतंगं पारदे कापितरंगस्त
 वरंडुके ॥ ९४ ॥ शोफे तरंगमप्याहुर्निषिङ्गः संगतृणयोः ॥ विडुंगं हनि घेरया
 तं विडुंगो नागरे न्यवत् ॥ ९५ ॥ कलिंगः पूतिकर जैधूम्याटी नीवृदंतरे ॥ क
 लिंगं कौटज फले कलिंगा यो पिति स्मृता ॥ ९६ ॥ आपांगं संगदीने स्यान्नेत्रा
 च ॥ तैलिके पि ॥ वरंगं यो निमातंगं मस्तके पुगुडत्वचि ॥ ९७ ॥ पत्रांगे पत्रके तृष
 पत्रांगं रक्तचंदने ॥ रथांगं शक्रवाके पिरथांगे चक्रमिष्यते ॥ ९८ ॥ रक्तांगं विदु
 मेनौ मेविंघा क्तपि धीरयोः ॥ रक्तांगं अपि जीवत्यां मातंगं श्वपचै गजे ॥ ९९ ॥
 लिगो नृमिक कौरो दंतौ लनुजंगयोः ॥ कालिगी राजक कर्कशां धारां गखड्ग तीर्थयोः ॥
 ॥ १०० ॥ हेमांगो हिरण्यो तास्ये नारंगं पिष्यतीरसे ॥ नागरंगे विटे जेतौ यमजे पिप्रकीर्ति
 तं ॥ सारंगं श्वतके चंगे कुरंगे च मतंगजे ॥ पहिते देपि सारंगः सारंगः शबले न्यवता

१०॥ प्रियं गुः फलिनी कं गुमिषली राजिका सुच॥ नीलं गुः समिजातौ स्यात् न नराती सु
 शालयोः ॥ १॥ उरगी चाश्च गंधायां उरगश्चि नैवाजिनो॥ चक्रांगी कडुरो रिण्यां चक्रां
 गोमानं कसि ॥ १॥ गचि ॥ इह मृगो व के जंतो प्रने दे रूप कस्य च ॥ मधुना गो नू मातं
 गवास्याप नमु ना वपि ॥ १॥ उपरागः परी चो रे राडु ग्रस्तार्क चंद्रयोः ॥ दुर्गि ग्रह कध्वो
 लेः पावर्ग स्वाग मोहयोः ॥ ४॥ क्रिया वसान सा फलेष्वपवर्ग प्रपुन्यते ॥ उपसर्गः स
 तो रोगने दोष व प्रोरपि ॥ ५॥ समायोगस्तु संयोगे समवाये प्रयोजने ॥ संप्रयोगे र
 तेर विद्या दन्वि तौ कौर्मणो पिचा ॥ ६॥ दीर्घा धर्म श्रुत्वा ले प हारे च ने व व त ॥ अजि लके
 षंगो यश मये स्यादा क्रोशे पराजने ॥ ७॥ उच नने गोपि वै धं ये स्वातं अनुपनाशयोः ॥ कटं ॥ १२ टी ॥
 गस्तु सस्यानां हस्त छेदे न पात्यये ॥ ८॥ गं पो ॥ कथा प्रसंगो वा तू ले विष वैद्ये च वाच्य वत ॥
 नाजो का कोले हि उ के तर हि उ के ॥ ९॥ इति गातवर्ग ॥ घटि ॥ अघं उ व्यसने प्रोक्त म
 उरितं उरवयोः ॥ अर्घः पूजा विधौ मूल्ये पाद दू ममूल यो ॥ १०॥ उघो वं यो वेगे दु तर्तयो

नाडी तरंगः इति पाठः २

प १

वात्रियां ३ देप १

पदेशयोः ॥ उघः परंपरायां च मेघः स्यान्मुस्तके घने ॥ ११॥ लघुर्मनो रुनिः सारायु
 बुप्रथितो लघुः ॥ हस्ता गुरुणि शीघ्रे च स्फका यो सं स्मृता लघुः ॥ १२॥ उघः स्यात्पवि
 केर स्तपुट के दे ह जानिले ॥ मोघा पिपाट लापो स्यान्मोघो निःफल दीन यो ॥ १३॥ म
 घामघी च नरुत्रे नैष जे च यथा क्रम ॥ श्लाघा मता प्रशंसा यो परिचर्या निलाष यो ॥ १४॥
 घत्रि ॥ अनघो निर्मला पाप मनो जेषु च ने व व त ॥ पलिघः काच कलशे पेट प्राकार गो
 पुरो ॥ १५॥ परिघो योगने दो स्त्रे मुजरे गल घात यो ॥ प्रतिघा प्रतिघाते स्यात्तरो च प्र
 तिघो मृतः ॥ १६॥ वाचिघः कांचने प्रोक्त स्य मंडे मूषिके पिचा ॥ महार्घस्तु महामूये ४५
 तथा च व कप हि रि ॥ १७॥ निराचो मी फ काले स्यादुल्लेख दोषु नोर पि ॥ उघा घोपि शु
 चो हृष्टो दहनी रोग योर पि ॥ १८॥ सर्वाघो गुरु वेगार्थ सर्व सन्न हानार्थ यो ॥ १९॥
 घात वर्ग ॥ अघो न्या र्थे समाहारे समवाये समुच्चये ॥ पहेष्य हे पुनरर्थे मपाश
 र्थ मनुके ॥ २०॥ अयार्थे वा कचि स्तारे प्रसंगे पाद पूरणे ॥ सप्तापने नाल्य शेषे च

॥ चैकं ॥ २

अमोघः सफले मोघा विडंगा
अययोः स्मृता ३

शशपरिपयतो ॥ ११ ॥ चक्षि ॥ कचः केरो गुरो पुत्रे बंधे मुधु वणे कचः ॥ कचा करिणो का च सु
 मणो सिके म्दंतरो ॥ १२ ॥ नेत्रो गोचनी च सुचा मरे पामरे स्मृतः ॥ मोचरो नो
 जने प्रोक्तो मोचा शास्त्रमतिरंजयो ॥ १३ ॥ पिबुस्तुले च कर्षे च उष्टरो गे सुरांतर ॥ मे
 रवस्यास्य जेदे च पिबुकापि प्रकीर्त्तिता ॥ १४ ॥ कर्चो विकृते मध्ये च बोः श्मश्रुणि
 कैतवे ॥ क्रौंचः स्वगनगदीपप्रजे देषु प्रपुन्यते ॥ १५ ॥ चंचो नडिदिनिमणि चंचो
 नृणामृष्टेषा चंचो पांचो गुले नोघा गोडी चति पयते ॥ १६ ॥ शुक्तिः शुद्धे नृपहस्त ॥ रोनाडी चेपि
 श्मशरापाठमो सिते ॥ ग्रीष्मे तु तव हे पि स्यादुपधा शुद्ध कर्त्रिणि ॥ १७ ॥ रुचिर्मयूरे
 शोभाया मनिघंगा निनाषयो ॥ बीचि स्वत्येतरंगे स्यादवकाशे सुरेव पिचा ॥ १८ ॥ ॥ १२ ॥
 शूची कराद्यभि नये नारीणां करणांतरो ॥ सूची च सीवनद्वये शोचो द्रोण्यां श
 तावरो ॥ १९ ॥ कां चि स्यान्मेखला दामिगुं जायां नीवदंतरो ॥ कचा स्यादुग्रगंधा
 यां सारिकायां शुक्ले वचः ॥ २० ॥ अचपिना प्रतिमयोश्च ॥ चस्त्रि स कचिंतयो ॥

चर्चिकायां च रुकशो नाकिरो क्का सुकथ्यते ॥ २१ ॥ त्वक्कर्मवत्कयोश्चार्के न्यकनी चेनि
 म्नाका सूर्ययोः ॥ वाग्गचने सरस्वत्यां नापागी नरिती यथा ॥ २२ ॥ चत्रि ॥ कचवोगर्दनी
 डे स्यात्सन्नाहे पटहे पिचा ॥ विकचः रूपरो केतुग्रहे वस्फुटिते न्यवता ॥ २३ ॥ कचः क
 रपत्रे पिगंथिलारव्यदु मे पिचा ॥ संकोच मपिका श्मीरे संकोचो मीनबंधयोः ॥ २४ ॥
 नाराचो लोहवाणे स्यान्नाराचो जलहस्तिनि ॥ नाराच्येषां कायां च सम्यक संगत
 हृद्ययोः ॥ २५ ॥ प्रधंच संचये प्रोक्तो विस्तारे च प्रतारो ॥ मरीचिः स परो दीप्तावधि
 जेदे च दृश्यते ॥ २६ ॥ मारीचोरहसो जेदे कंकोले या कदिजे ॥ मारीची देवता जेदे न मुनिः
 स्मर ॥ देत्ययोः ॥ २७ ॥ कणीचिः पुष्टितलता गुंजयोः ॥ शकटे पिचा ॥ अवीचिर्नरकान्ति
 म्योर्विपंची केलिवीणयोः ॥ २८ ॥ प्रागुदक्प्रत्यग्गीत्येते दिदेशकालतो व्यो प्राच्यो
 दीच्यप्रतीच्या नो वाचकं स्याद न व्ययो ॥ २९ ॥ चचा ॥ मलिम्लुचो निले चौरजलस
 चिर्जलौकसे ॥ शृंगार्दशि श्रुमारे च कंकोत्रा टिभे पिचा ॥ ३० ॥ चपां देत नारी

चरयेष कथितोरतिवृत्ते ॥ कुकुरे रतिनारी च सीतारो वरयोषिता ॥ ४७ ॥ इति
 चानवर्गः ॥ छद्दि ॥ अलं स्फटिकनक्षत्रकविमालेश्वरमवययं ॥ अग्निमुखेयक
 षः स्यादन्ते तु न कद्रुमे ॥ ४८ ॥ नौकां जे परिधानस्य पश्चादं च लपध्ववे ॥ कक्षा
 उचारिकायां च वाराद्यां च निगद्यते ॥ ४९ ॥ स्याद्बुद्धः स्ववके स्तं बेहारने दकाया
 लयोः ॥ पुत्रः पश्चात्प्रदेशे स्यात्तोगूले पृष्ठमिष्यते ॥ ५० ॥ म्लेच्छपापरते जातिने दे स्या
 दपनाषहा ॥ पिठउशात्मनी वेष्टे मष्टे चाश्च प्रदानयोः ॥ ५१ ॥ पत्तौ पूगठय कोश
 मोचा विजयिलेषु च ॥ पिठं पुठे महाकठः समुद्रे प्रचेतसि ॥ ५२ ॥ इति छानवर्गः ॥ य
 य ॥ ५३ ॥ जराकाश सरस्वत्या पिशाच्यां नवने पिचा ॥ जदि ॥ कजः के शे विरंचे च कं
 पीयूषपद्मयोः ॥ ५४ ॥ अजो हरौ हरे कामे विधौ छागे रघोः सुते ॥ ब्रजो जो घाधरे देषु
 निजमात्मीयनित्ययोः ॥ ५५ ॥ धनश्चिद्रेयता कायो धनः शौडिक शोफयोः ॥ खड्गो मे
 स्वजं रक्ते स्वजः प्रस्वेद पुत्रयोः ॥ ५६ ॥ द्विजो विप्रे उजे दंते मागारे एकयोर्द्विजा ॥ बीजरेत

॥ ५० ॥

सिसत्वे च हेता वं ऊरकारणे ॥ ५७ ॥ आधाने पिच सक्तं स्या संनदे संनते पिचा ॥ वाजं घृते
 पिच ज्ञाने वाजो निःस्वन मरुयोः ॥ ५८ ॥ वाजं जले मुनौ वाजो व्याजः शाय्या देशयोः ॥ ५९
 जः पारणे च वाहौ च कुजः स्यान्नरकारयोः ॥ ६० ॥ अजोध च तरे चंद्रे निचुलेशं खप
 दयोः ॥ अक स्यादथ कुजो पितृकु स्यात्पादपां तरे ॥ ६१ ॥ मुकुट कर्मरं गे स्यात्मुकु
 प्रोक्तः कुशश्चुचि ॥ अधोमुखे च कुके च वाच्यवराजिरिष्यते ॥ ६२ ॥ स्मरे समाव नौ
 पुद्गराजिः स्यात्संक्तिरेजास्युर्नष्टधानेषु वाजा स्याद्दार्द्रतं दुर्लभं ॥ ६३ ॥ उसीरे लाजमुद्दिष्टप्रजा
 सेतानलोकयोः ॥ गुंजापि पटहे प्रोक्ता का कचिं च्यांकलधजो ॥ ६४ ॥ गुंजा खनौ सुरा
 हे स्याद्गोडागारराधयोः ॥ गुंज कुंजो निजं के पिह नौ दंते च दंति नो ॥ ६५ ॥ शंज प्रजा
 पतोरुद्रे लजः स्यात्पटकठयोः ॥ कुंजी वले महो साहे खजा मंथप्रसूहयोः ॥ ६६ ॥
 पिनातूले हरिद्रायां पिजस्तु व्याकुलेऽयवता ॥ पिजो वधे वले पिंजरकुर्वेत्पांगुलोस
 तः ॥ ६७ ॥ खर्जू कक्षां च कीटे च खर्जूरी पादपे पिचा ॥ मर्जु स्यात्तरज के श्रुदोः सर्जु

निनिविद्यति॥६॥ ॥जत्रि॥करजस्तकरंजेस्यानखेव्याघ्रनखेपिचा॥कुवजोवृत्तने
 देस्यादगस्यद्रोणयोरपि॥६॥सहजस्तुनिसर्गस्मात्सहोचेपुनरन्यवत्॥नीरजंके
 पस॥मलेकुष्टेजलजंशंखयो॥६॥बलजंगोपुरहेत्रेसस्यसंगरयोरपि॥बलजावरयो
 षायां वसुमत्यामपिस्मृता॥६॥कारुजःशिल्पिनांचित्रेकलनेनागकेसरे॥स्वप
 जाततिलेफेनवल्मीकेगौरिकेपिचा॥६॥बाहुजःहृत्रियेकीरेस्वपंजाततिलेपिचा॥
 वनजोमुतकेपयेवनजंवनजोगे॥७॥वनजामुद्रपण्यांचवशिष्याणि॥मृज
 विनि॥कलिकरणनेदेचवशिष्यायामपीष्यते॥७॥सामजस्तगजेप्रोक्तसामोठेपु
 नरन्यवत्॥नृमिजोनरकैगारेसीतायामपि॥७॥नृमिजा॥७॥गिरिजंवात्रकेय्या ॥२॥
 तंशिलाजडसुगंधयो॥नोहेपिगिरिजागौरीमारुतश्रोदीरिता॥७॥कंबोजोहसि
 त्रदेपिशंखंदशविशेषयो॥अगजरुधिःनेगेकेशपुत्रमदेगजः॥७॥कंबोजसु
 गेसोमवत्केपुत्रागपादयो॥कंबोमाघपण्यांचहिगुपआमपिक्वचित्॥७॥

उजहकलासेस्यातगेमीनेनुजंगमे॥कसूर्यामंडजाप्रोक्तापरंजस्तेलपत्रके॥७॥क
 नेचकवालेचपुरंजःकुरिकाफले॥हिमजापिशदीगौरीमैनाकेहिमजःस्मृता॥७॥
 जच॥जगन्यजो॥अनुजेसूदेनारदाजःस्मृतासुनौ॥द्रोणचवनकण्यास्योना
 रदाजीठकथ्यते॥७॥वीरुषधजोमहादेवेहेरंबेपुण्यकर्मणी॥नरदाजोगुरोपुत्रेव्या
 ध्रायस्यविहंगमे॥७॥कस्मीरजाख्यातिविषाकुष्टकुंठमयोक्षरे॥हीराधिनेव
 सामुद्रलवणेमौक्तिकेक्वचित्॥७॥हीराधिजाश्रियां प्रोक्ताचंद्रेहाराधि
 जोनवेत॥क्षिराचशशधरेसुपर्णेनेतजोगिति॥७॥धर्मराजोयमेबुद्ध
 मराजोपुधिर॥रक्तराजःकुबेरपिसावजौमेधारके॥नेगराजसुमधु
 मार्कवेविहगांतरे॥महराजोरवोचंद्रेयहिनुकेकिताहीयो॥यहराद
 वकसखेमध्वानारंगवत्वयो॥७॥जप॥मनिनेषनमगसिहरितक्योव
 लंबेना॥रुषत्रधजशशेसोशकचाहंदंतरे॥॥इति॥नंतवर्गः॥७॥हिान

ब्राह्मणादीनां ववर्धने ॥ ४० ॥ चतुःपथे च राजादिशासनांतरपीडयो ॥ प
 क्षीतनाट नृपापदीनां साप्रसारने ॥ ४१ ॥ ऊर्ध्वचरो दनेरावेक एत
 तक्षयो ॥ ४२ ॥ शृमांशं सितपूज्यतमे प्रियतमे भवत ॥ ४३ ॥ इष्टं संस्कारयोगे
 चक्रनुक्रमणि ॥ ४४ ॥ रिष्टं होमां शुभानां वक्तृपाशेषु प्रवक्ष्यसे ॥ स्त्रियमव
 क्तवाचि स्यान्निष्टं स्त्राने न्यवमत ॥ ४५ ॥ दिष्टं देवे च काले स्यादिष्टं सष्टं उनि
 र्मिते ॥ ४६ ॥ पुक्तं निश्चितयोः प्राज्ञे द्वेष्टे द्वेष्टिते वमत ॥ ४७ ॥ रोमां चिते प्रहसि
 ते जातहर्षे च विस्मिते ॥ ४८ ॥ व्युष्टिने प्रभाते च फले पथुषिते पित्रा ॥ त्व
 ष्टाश्रित्य निदेवादेस्तथावर्द्धकिं सूर्ययो ॥ ४९ ॥ इष्टिः स्यादन्तिनास्येपि सम ॥ ५० ॥
 हस्तोक्तपागयो ॥ ५१ ॥ विष्टिः कर्मकरे न द्वेष्टे प्रेषणे चेतनेपि च ॥ ५२ ॥ दिष्टिः परिमा
 णमुदोर्ध्वेष्टिपरिमां वीदर्शनाक्षिपु ॥ ५३ ॥ रिष्टिः स्वर्द्धे समुदो च त्रिष्टिः
 त्कर्षणे बुधे ॥ ५४ ॥ स्रष्टिः स्वभावे निमाणे पुष्टिर्द्धो च पोषणे ॥ ५५ ॥ पृष्टिः

रतताशस्त्रनेदयोर्ध्वदंडके ॥ ५६ ॥ नाग्यां च मधुयथां च मुष्टिर्वर्द्धकरे
 फले व्युष्टि रुक्ता प्रबुधौ च नियमादिफलेपि च ॥ ५७ ॥ नृष्टिः स्याद्भर्जने
 शून्यवाटिकायां च नापिता ॥ ५८ ॥ रिष्टे प्रसूताभ्यां वराहलोतयो
 रपि ॥ ५९ ॥ इष्टिः स्याद्द्वर्षणे विष्णुः क्रोता स्पर्द्धाकिरिषपि ॥ ६० ॥ जटाले मकचे
 मूले म्रुमं सिकयोर्जटी ॥ ६१ ॥ सटाजटाके सरयोः फटाच फणहस्तयो
 बोय स्याद्ददरे पुगे धटी षडे च वाससः ॥ ६२ ॥ परी सार्थजलायां च धटः गूरि
 निष्पते ॥ ६३ ॥ पटी पेटविशेषे स्याद्वायुलौजिकादुमे ॥ ६४ ॥ स्यात्कोटिरश्रौ
 चापाग्रे संख्यानेदप्रकर्षयो ॥ ६५ ॥ स्यात्तटिः संशये लेशे स्रष्टे लाकाल
 मानयो ॥ ६६ ॥ त्रोटिः स्यात्कटफले च त्वां खगमीनविशेषयो ॥ ६७ ॥ खाटिः
 किणो शबरधैखाटिरेकग्रे स्मृता ॥ ६८ ॥ नदीहृदविनासि स्यान्नर्त्तकिं शा
 णके नटः ॥ ६९ ॥ रत्रिः ॥ अवटस्याश्विगे कपे ऊह कजीवी नि ॥ ७० ॥ विकटः

सुंदरप्रोक्तो विशालविकरातयो ॥१॥ करदोगजगंडेः स्यात्कुसुंने निचज
 वने ॥ एकादशश्राद्धे विउदुरे पिचवायसे ॥१॥ करदो वाद्यनेदपि नि
 र्दो निर्दये स्मृतः ॥ परापरादसंयुक्ते निर्दो निः प्रयोजने ॥१॥ चिपिट
 रवाद्यनेदपि पिचिटे विसृते न्यवत ॥ जकुटो मलयेरया तो वाक्ता के ऊ
 सुमेश्रुति ॥१॥ निष्कटस्तु गृहोद्याने के दारक कपाटयो ॥ ऊर्मटक
 ठपे सुप्ये पुकेट स्त्री व्रमत्तयो ॥१॥ चर्पटः स्फारविपुले चपेटे चपी
 पिचा ॥ पर्पटः पिष्टवित्तौ पर्पटो नेष जातरे ॥१॥ पिचिटे नेत्रो गेपि
 पिचिटे सीसके चपौ ॥ अंगटं शिक्वेने दे चधौ तां जन्मा मपि स्मृतं ॥१॥ ॥१॥
 कटः करहाटे स्यात्क सस्कारपोरपि ॥ तपीट मुदरे नीरे काप्यदो ज
 उकार्पिणो ॥१॥ ऊकुटस्ताम्रचूडे स्यात्ऊकुने पिक्के रोपिचा ॥ विषाद
 श्रुद्रो पुत्रे तालमध्यचऊकुटो ॥१॥ रसोनस्ये प्रनेरे स्यात्ऊकु वारने

वर्ज्ययो ॥ विराटः चौकणे विलावर्गदोन गतिगति ॥ कर्कटः करणो स्त्री
 रणराशिने दे कुलीरयो ॥ शल्मलीफलवालुको धूत दीनारपोरपि ॥
 वस्त्रोद्योगायने चित्रकरे स्त्री ततजीवने ॥ नावदो नावके साधुनि
 वंशे कार्मुके पिचा ॥ शोलाटो दे वले सिंहे श्रुक्का चकिरातयो ॥
 शोराटः कथिता गायत्रने दे मगलुब्धके ॥ वैशालवटिके पि स्यात्वा रा
 टश्चातका श्रयो ॥ मोरटं उजवे दे रुमूलां डोटप्रसूतयो ॥ सप्तरा
 त्रात्यरे हीरे मूर्त्तिका पाउ मोदरावे कटः स्यादे कटिकेतया सं
 जातमो वनो ॥ वैरयो मिश्रिते नीचे वैरलवदरी फलो ॥ त्रिकटं सिंधु
 लवणे चित्रकटश्च सुवेलके ॥ नाकटः कप्यते मीने ने दे शोला
 तरे पिचा ॥ अरिष्टफेनिले निबेलुने का कवकयो ॥ अरिष्टसूति
 कागारे वतके चिद्रु श्रुने श्रुना ॥ संसरसगते विद्यातस श्रुदे

वमनादिना॥ अवटुः कथिता वाट कपुगर्तेषु सरिति॥ परीष्टिः परिच
 र्पायां प्रा का म्येपिग वेषणे॥ वरदाहं स योषायां धोऽस्या वरदावणि॥
 ४॥ त्रिपु टा मल्लिकायां च सू त्तैला त्रिव तौरपि॥ सा ती न के च ही
 रे च त्रिपु टः समुदाह तः॥ ५०॥ चर्वटी ब्रीहनेरे स्या द र्च टी पुण्ययोपि
 ति॥ पर्वटी नून फले पूगादेः स्वरुपा र पे॥ ५१॥ मर्कटी वानरी श्रुक शि
 म्यो स्या त्कर् र जां तरे॥ मर्कट सू र्ण नाने स्या त् का पो स्त्री करे पि च॥
 ५२॥ ऊर दा दारु पु त्रां च ऊर दो द्रि टि को तरे॥ चिरी टी उ सु वा सि
 न्या स्या द्वितीयः स्त्रियां॥ ५३॥ ट च॥ श्रुति कटः प्रा च लो हे प्रा प
 श्चि च नु जंग पो॥ उच्चिग टो मी ननेरे तथा को पन पूरु षे॥ ५४॥ ऊ
 ट न ट स्तु शो ना का वती मुस्त के पि वा॥ स्या खड्ग री त ट फल का सि

॥२५॥

धारा व्रजत क्षारि णो॥ ५५॥ ऊंड कीट स्तु ना र्वा क व च ना नि ह पूरु षे॥ जारज ब्राह्म
 णी पु न दा सिका मु क यो र पि॥ ५६॥ नारटी को स्म की रे स्या ख द ता शो वि ह
 रि॥ कार्य पु ट स्या हे प णे म ता न र्थ के रे णु पु च॥ ५७॥ काम कट स्तु वे र या यां त्रि
 य वि न म यो र पि॥ चक्र वाटः क्रिया रो हे प र्य ते च शि खा त रो॥ ५८॥ चर्क राटः क
 टा हे स्या त्तरु णा दि त्य रो चि पि॥ स्त्री णां ष यो ध रो सं गे कां त द न स्ते पि च॥ ५९॥
 कर हा टो कुं दे स्या त् पु ष्य रु रु प्र ने द यो॥ पर पु ष्टः पर च ते पर पु ष्टा प ण स्त्रि
 यां॥ ६०॥ प्रति हृष्टं म तं गु ष्ठे दि रा रु त्या च क र्षि ते॥ प्रति शि ष्टः प्रेषि ते स्या त् प्र
 या ख्या ते च वा च्य व त॥ ६१॥ शि पि वि ष्ट स्तु प ख ल तौ शि वे डु श्र म णि स्त
 ते॥ च उः ष षीः र्ब द्ध चे पि च उः ष षि क ला ख पि॥ ६२॥ स्या त् गा ट मु ष्टिः हा
 णे ह मा णा दि षु चे ष्य ते॥ गंध ऊ षी रा यां च बु धा द्या य त ने पि च॥ ६३॥ व ला
 को टि र्मान्ने हा र्बु दे स्या नृ पु रे पि च॥ श्री॥ ट पं॥ ५॥ अथ स्या द रा नो कि

होनिश्चासाधरचुबयो॥६४॥ इति दानवर्गः॥६५॥ कः स्वरेऋतां दस्यादत्त
 धेरवादिनो॥ मुनावपिहो वारिपण्यास्यासनेपिचा॥१॥ शोमध्यपु
 पुरुषेशो धुस्तरधूनपो॥ शोलसेचमुखेचकुंठोकर्मण्यर्चयो॥१॥ पाण
 स्याम्येनोविहकर्मपापपिपय्यते॥ कंगोलेसत्रिधानेधनोमदनपादो॥३॥
 वः स्यादहतो दोहखर्वेकतायुधेपिचा॥ रश्चरममात्रेस्यात् देहस्याव
 यवोतरे॥४॥ कोष्टं मूलेचापिमीपकृतेरतगहस्यचा॥ ऊष्टेरोगेसुगधेच
 गोष्टोस्नानकेमतं॥५॥ ज्येष्ठं श्रेष्ठेपिचदेचज्येष्ठोमासांतरेपिचा॥ गृहेगो
 ह्योर्ज्येष्ठोवैश्रवणेवरे॥६॥ कोष्टादारुहरिहरिद्रापोकालमानप्रकर्षयो॥
 स्यादिशिस्नानमात्रेणकाष्टमाख्यातमिधने॥१॥ निष्ठातिष्ठतिमाशांतया
 ज्ञानिर्वहणेपुचा॥ षष्ठिषष्टांचपुरण्यांकात्यामपीष्टते॥१॥ ऋत्रि॥ कमठः क
 ठपेनाडेनेदेचकमठमतं॥ कर्कशोपांजो जटः कठिनेन्यवत॥१॥ नर्मद

॥१६॥

शुबुकेसिंगोवेकुंठः हहशक्रयो॥ श्रीकंठः खंडपरशौ श्रीकंठः ऊरुजोगवो॥१॥
 वष्टिष्टः स्यात्तदुवजरेविशित्तिरवेपि॥ वरिष्टं परिचेतामेसाधिष्टोनिष्ट
 र्पयो॥१॥ अंबेष्टोदेशनेदेपिविप्रावेश्यासुनोपिचा॥ वरिष्टं परिचेता
 अचष्टाचासुलोस्यास्याप्युपिकपोरपि॥१॥ कनिष्ठोविसृतकार
 नृपकक्षांतरेपिचा॥ ऊर्ध्वरादधरेचापिप्रतिष्ठास्नानमात्रके॥१॥ गो
 रचेपागनिष्ठतिचउरहरपद्यपो॥ मऊष्टोव्रीहिलेदेस्यात् मऊष्टोमोर
 रेमवता॥१॥ च॥ दतराटः स्याजंवीरेकपीठकमरंजके॥ नागार
 गोपिचांगेण्यांस्मृतादंतशषबुधैः॥१॥ सूत्रकेणोदिजेप्रोक्तः खजरीटकयो
 वयो॥ हारिकंठपरचते हाराचितगलेपिचा॥ कालकंठस्तदाभ्युहेक
 लविंकेचखजके॥ शिनामोगेहरेपीनसारकेनीलकंठवता॥१॥ कल
 कंठः कलधानेहसैपारावरेपिचा॥ पूतिकाष्टंउसरलदेवदारुमहीरुहो॥१॥

कालपृष्ठनवोचोणचापेकोदंडमात्रके॥कालपृष्ठोयुसारंगविशेषकक
 पक्षिणि॥११॥इतिगंतवर्ग॥उद्दिश॥गुडस्याडोलकेहस्ति सत्रोहेतुविका
 रयो॥गुडासुहीगुडकपोर्गडोमीनांतराययो॥१॥जडोमुखीहमग्रसो
 श्रूकशिब्योमडीमता॥गुडपृष्ठगुण्डेऊऊपउपेयावरेनिदि॥१॥व्याडो
 हिस्त्रपशौसर्पताउस्ताउनघोषयो॥मुष्टिमेपनरणादौचताडीताली
 रलदुमो॥१॥नीउंस्तानेऊलापेचसकारःपूर्वकोत्तिके॥क्रौडःश्रव
 रपातेधोक्रौडकायपवहसि॥४॥चोडोदेशविशेषस्यातचोडप्रो
 वरणंतर॥हैउःकर्णधमेधानेगरलेऊटिलेपिचा॥५॥लोहिताक
 फलेहैवउघोषपुषेसुरासदे॥याधानांसिंहनादेउहैडास्यादेश
 शत्यके॥६॥अंडखगदिकोशेस्यातमुष्टेवीयेपिचकचित्ता॥स्यात
 उःशकलेचैतुविकारमणिदोषयो॥७॥गडःकपोलेपिचकोपागनेदे

॥११॥

य४॥

चगंडके॥गंडःप्रवीरेचेहैस्यादश्चनूषणबुहुदे॥८॥चंडोदेत्यांतरती
 वेचंडोदासेयमस्यचा॥चंडाधनहरीशखपुष्पोत्यगेतिकोपने॥९॥
 चंडीकात्यायनीहिंसाकोपनस्त्रीषुसंमता॥खंडचसादिसंघातेम
 डस्याडोपतावपि॥१०॥उडैदेवजलघानेपिठरेकयमंडलो॥ऊंडीऊंडस
 तोराजासतिपनीसुतेपिचा॥११॥दंडोयाममाननेदेतंगुडेदूमसत्ययो॥
 व्युहातेदेप्रकांडेश्रकोणमथानयोरपि॥१२॥अग्निमानेगदेडदश्च
 डोशोप्रारपाश्र्वके॥गोडःपामरजाचबदनाचौचवाच्यवत॥१३॥पि
 डंडेबलेषोगहोगेजीवनासो॥पिंडोदेहेजपापुष्पेनिवासिहकेपिचा॥१४॥
 पिंडीस्यातगवेलावरुर्जरीनेदयोरपि॥पंडःखंडेधियांपडीपाड
 ऊतिवतौसिते॥१५॥मडमस्तनिशाकेचमंडस्यासारपिसयो॥
 एरंडेनुषणोचार्यमंडाधाआमुदीरिता॥१६॥मुडोदेत्यांतराहोमुद

मुडितयोरपि॥ शौडोमनेपिविख्याते शौडोपिष्यतिसेव्ययो॥ ११॥ कांडना
 लेनरुस्कंधे बाणे वसरतीरपो॥ अस्मि ते रहिते स्तंवे कोडं वर्गे पृदाइतः॥ १२॥
 नांडं नृषणमात्रेपि नांडं मूलवलिधने॥ नदीपत्रे उरंगाणां बाषण
 भाजनेपि च॥ १३॥ उडा वाचिगे वे दौरा विला च दुयोपिति॥ कीडा के नि
 प्रसारे स्यान्स्वेला वज्ञानयोरपि॥ १४॥ चूडा शिखाया वलनौ चूडा
 बाहुविषेष्टे॥ पीडा तपाशिरोमालापमदं सरलदुषु॥ १५॥ नाडिना
 ले शिरागंडे दुर्वयो स्याद्गुणतः॥ नाडी पुरुषा काले स्यात्त्रयार्थोक्तः॥ १६॥
 कस्य च॥ १७॥ रंडो मुषिके पण्यो चरडा विधवयोरपि॥ चंडापियां शुभा
 पां स्यान् दंडो हस्तदि वर्जिते॥ १८॥ मुडा लहस्तिनां मदिरा करिहये॥ १९॥
 नलिन्या वरयोषायां शुडस्तु मदनिनेरी॥ २०॥ उत्रिगा रुडं स्यान्मरकते
 विषरशास्त्रे गुभरुडा॥ डा विडं स्याज्जनपदे वेधमुख्यक संख्ययो॥

प्रचंडे डवहे चेतकरवीरे प्रतापिनि॥ पिचंडे मुदरे विद्यातपशोरवयवेपि च॥ नरंडो व
 रिशां सूत्रवद्वस्तु निनेलके॥ वरंडो प्यंतरावे दौ संदो हमुखराख्यो॥ पूत्यंडो
 गंधकीटे पितथा गंधमृगेपि च॥ मातंडं स्तपने कोडेशिखंडो बहूचूडयो॥ प्रको
 डो विटपेशस्त्रे मूलस्कांधांतरे तरो॥ कोदंडो नृलतायां स्यात्तदेशने देवका
 मुके॥ २१॥ सरंडं सरदेधूर्ते सरंतो मूषणांतरे॥ मारंडो डेजमानां मार्गो गोमयमं
 डले॥ २२॥ करंडो मधुकोशसि कारंडवलदलायके॥ कृष्णंडो गणने देपि च
 लोककारुकेपि च॥ २३॥ कृष्णंडो त्वौ गौर्धने रुडो निमदर्शने॥ मेरुडा
 देवता ने देय रुणी निदिचेप्यते॥ २४॥ बाहसे कपात्रे स्यान्मलेदकं योरपि॥
 गणस्त्रवाजे वारुंडो दारपिद्यां मुदीतो॥ २५॥ तितिडी नृरुहे कालदासे दत्ता
 तरे पुनः॥ श्रीतितिडं स्तितिडी स्यात्त्रिचा व हांतयोरा॥ २६॥ वरडा सारिका
 वती खड्गधेधुषुक्यते॥ वितंडा वाहुने दे स्यात्कधी शकेशिलादये॥ २७॥

वितंडाकखीर्याचनिर्गुडीसिंडवारके॥नालसेफसिकास्यायोंचकरहाडेपिकुत्रवि
 ता॥३६॥उच॥४॥नवेदातखुडोवात्यावामयोवावशोणिते॥पिठलस्फुटिकायांउदेव
 ताउसुधोषके॥३॥सैहिकेयेपदेवापिदेवताडोडुताशन॥चक्रवाजोद्विनेदेस्यातच
 क्रवाउंउमंडले॥३॥जलरुडोजलवर्त्तपयोरणेभुजंगमे॥अयोगंडमिश्रुकेविक
 लांगेतितीरुके॥३॥इतिगंव॥६॥दि॥६॥स्त्रुलेतशेगतेप्रगाठेपिहठेमत॥
 बांढेप्रतितायांमूढसंदितबालयो॥गुंढेरहसिगुह्येचसंवतेपुनरभवत॥बूढसंहतिवि
 न्यस्तपृथुलेषुचनेयवत॥शेढेवर्षधरेकीवेगोपतौबंधपुरुषे॥बोढस्याझारिकेसनेसोढ
 मर्षणशतयो॥३॥राढसुषुशोनायांढढंष्ट्राविलाषयो॥माढिपत्रादिनगेस्यामाढिदे ॥३॥
 न्यप्रकाशने॥४॥॥६॥त्रि॥आषाढेवृतिनांदडेमासेमलयपर्वते॥वारुढसंबलेपिस्या
 त्वस्त्रांचलकपाटयो॥पंजरेजठरेचायप्ररुणेजठरेस्मृत॥बढमूलेपिरुढस्त्रसंजति
 अउरेभवत॥समूढप्रजितेनुमेसद्योजातेनुपसुते॥उदूढकलेढेस्त्रुलेस्यादूषोढेनिक

दोढयो॥विगूढगर्हितेगुप्तेप्रमीढेमूत्रिकेवेने॥सरुढेऊरितप्रौढेप्रगाढे
 हढतब्रयो॥अधूढततसापत्यानापमिधूढरश्मरे॥॥६॥च॥अध्या
 रुढसमारुढेअधिकेचापिनेयवत॥इतिगंत॥॥६॥दि॥कणेतिसू
 सैधान्यांशेनह्लाजीरकयोःकरणा॥वक्रस्यमहिकायांचरणःकोणः
 कणादिषु॥पणोवराटमानेस्यामूल्येकर्षणेप्रदे॥क्रव्यशाकाटिका
 दतेव्यवहारेनतोधने॥गणःसमूदेप्रमयेसख्यासैन्यप्रनेदयो॥आरां
 ध्रौतेचनासायांकाणःकोकैकहृषे॥४॥बाणःस्यात्केवलेकोडेकोडावम
 वदेत्ययो॥बाणोक्रिद्यंसतोधीरेस्तणेमाषचउष्टये॥५॥कर्षणेकरपत्रे
 चशाणीप्रावरणांतरे॥त्राणांउत्रापमाणायांरहोरहितेपिच॥६॥प्राणे
 हमारुतेबालेकाव्यजीवेनिलेचने॥वाच्यवरपूरितेप्राणाप्राणास्त्वसुषु
 कीर्त्तिता॥३॥दूणांचापेचसुडेचदूणेवश्रिकनंगयो॥दूणीकठपिका

योचजलद्रोणामुदाडा ता॥८॥द्रोणः क्षपीपतोत्तलकाकेस्यादाठकेमि
 वा॥आटचापकऊकेचद्रोणीस्यात्री॥वदंवेरा॥६॥द्रोणीकाशंबुवाहिया
 गवाघानुजिस्तिता॥गोणःशुक्लफलेतक्रमहिकाहिकरउयो॥१०॥को
 णवाद्यप्रनेरेस्यातकोणोमोक्षगुडेःकजि॥वीणादिवादनापापेप्येक
 देशाहस्यच॥११॥शोणःयेनाकरनपोःशोराःकोकनरठवो॥लो
 हितेचक्षुशानोचनूणास्त्रीगर्भडिनपो॥१२॥तीक्ष्णसामुद्रसवरावि
 षलोहिदिशुक्लके॥तीक्ष्णहारेवतिगमात्मत्यागिनीवाच्यवक्त्रवत्॥
 कर्णाःपृथाज्येष्टसुतेश्रवणाजोश्रुतावपि॥१३॥ऊर्ध्वश्रेष्ठचवरा ॥१४॥
 कोचनपक्षयो॥१४॥वर्णदिजातौश्रुतादौस्तुतोरुपमशोकत्वमे॥
 विलेपनेचकधातोवरुस्यागमनेदयो॥१५॥गवोयानेसहापेचम
 तत्र्यारुहेषुच॥पक्षवेषुतरुणांचपक्षशष्टप्रकीर्तितः॥१६॥पर्या

गेलुनटेगायनेचदिह्युदतिरिउर्दमे॥वृह्मि॥६॥

पावकिश्रुकेपत्रेशास्तिविशालयोः॥पूस्वशष्टेसमप्रेचचपूरिवापिवा
 च्यवत्॥१७॥चूर्णहोदहारनेदेचूर्णदिवासयुक्तिषु॥कीर्णवेत्रपरि
 हिचिहिसितेकीर्णमिथ्यतो॥१८॥जीर्णपक्षेपुराणेचदीर्णदारितनीतरी॥
 रचायजिह्वस्य उल्लास्यादानयेग्रीष्मेदहेतल्लसुकेशके॥१९॥यासेर्जुनेपिकेकाकेस
 क्लेशैर्केवसुदे ॥२०॥मरिचलोहयोः॥तल्लाडद्रौपदीनीलाकराद्राहाडकथ्यते॥२०॥वा
 च्यवमेचकेतल्लजिह्वःशक्रेधनजमे॥जित्वास्तुयादवेमेषेवलिःपापउचं
 उमो॥२१॥पाल्लिःपाश्चात्यनागेपादमूलेन्यदस्त्रियोः॥सेनाष्ट्रेचऊल्योचं
 ह्यालिसापियासयोः॥२२॥ऊर्ध्वमेखादिमिस्पादतरावर्तकेऋवो॥मा
 णिर्मेलेहेमनागरद्वानगलस्तने॥२३॥अणिराणिवदहायकीले
 स्यादहिसीमयोः॥ऊर्णिक्रनकटहेपिऊर्णःस्यात्बकुरेन्यवत्॥२४॥
 ऊर्णिक्रमुकनेदपिउष्ट्रेदेवश्रुतावपि॥श्रेणिपंतौशोपात्रेशोणिः

स्यात्कारसंहतौ ॥२६॥ वाणी स्याद्बृतिनारव्योवाणी मूल्येवलाहके ॥ वेणीव
 वस्यवेवेस्यातनदीनोचलकेपिचो ॥२७॥ देवताउचतलीवनीत्यां वरुणानि
 षांके ॥ २८॥ गुप्ताहपयोफाणिगुडकहयो ॥ २९॥ शाणयवाग्वापकेउश
 एखुणायसिस्मता ॥ प्रतिमायां ग्रहस्तेनोवीणावधकीविद्यतो ॥ ३०॥ वे
 णुचुपांतरेवंशोस्त्राणुःकोलेस्त्रिरेहरे ॥ रेणुःपर्यटकेधूम्योमल्येणुध्रीहिसुकी
 यो ॥ ३१॥ एत्रि ॥ अरुणोव्यक्तरागे स्या संभारागे कसारथो ॥ निःशेषकपिले
 ऊष्टेसूर्यद्रव्येचवाच्यवत् ॥ ३२॥ अरुणातिविषारया मंजिष्टात्रिवृत्तासुचो ॥ ३३॥
 करुणस्तरसेवदेत्तपायां करुणामता ॥ ३४॥ धरुणः सतेनीरेस्वर्जोकेपर
 मेष्टिनि ॥ तरुणः स्यान्नवेयुनिकुक्कुपुष्टेरूबूकपो ॥ ३५॥ वरुणस्तुरुजेदेष्टुप्र
 ताचीपनिसूर्ययो ॥ वरुणस्तिक्तराकेपिशकारेवरणंनता ॥ ३६॥ वरुणो
 बहुचादौ स्यामूलैगोत्रेपदेपिच ॥ वरणंनरेद्रौचरणंरासनेध्वजौ ॥ ३७॥

लवणोरसरक्तोस्त्रिनेदेषुलवणाविषि ॥ करुणंसाधमहेत्रकायसु कर्मसु ॥ ३८॥
 गीतांगहारसंवेशक्रियानेदेद्रियेषुचा ॥ चालदौचकरणः स्मृतः ॥ श्रुद्राविशो
 सुते ॥ ३९॥ नरणंजीरणाजजीहिगुसौवचलेषुचा ॥ धरणंमाननेदेपिधार
 णंधरणीनुवि ॥ ४०॥ रमणं स्यात्पटोलस्यमूलैपिरमणः प्रियो ॥ शरणं वध
 रक्षितोशरणंरक्तो गृहे ॥ ४१॥ कणं कर्त्तुंनेदेचवारिपणोचकणं ॥ पंच
 णस्यात्रियमनेबंधनेरक्तोपिचा ॥ ४२॥ प्रघणस्ताम्रकुंनेस्मादलिदेवोहमुद्र
 णादुघणमुद्रैपि स्यादुहिवपरवश्वधो ॥ ४३॥ प्रवणं श्रुक्रमरिभौर्व्यामायमि
 चचवुष्यवो ॥ प्रगुणोपिहोपि स्यादीरिश्रुत्यऊषरे ॥ ४४॥ ग्रहणं वृषलब्धौस्मा
 दादरेग्रहणंकरे ॥ ग्रहोपरागस्वीकारबीदीषुग्रहणंमता ॥ ४५॥ रक्षणंदश
 नेदष्टौप्रोक्तंसेवनेवधे ॥ लक्षणं नामिचिद्वेचसोमित्रेनापिलक्षणं ॥ ४६॥
 लक्षणंलाहनेनामिरामनातरिलक्षणं ॥ लक्षणोपधिसारसोसश्री

केत्यनिधेयवत् ॥ ४५ ॥ दक्षिणः सत्त्वो मपरं देहानुवर्तिषु ॥ वा श्रवदक्षिणाघाचीय
 रुदानप्रतिष्ठयो ॥ ४६ ॥ दक्षिणं काचनेविचेद्रविणं च पराक्रमे ॥ मसुलोशिवशिव
 कर्कशेस्त्रिधेनुमायामसुलाजनेवत् ॥ ४७ ॥ ऊषणमरिचेख्यातेकलायामृषणा
 जवेत् ॥ धिषणास्त्रिदशाचोर्ध्वधिसणाधिपिसंमता ॥ धषणस्यात्परिजनेरतेस
 बुधिर्षिणि ॥ नीषणोदारुणोपटिनीषणसर्वकीरसे ॥ ४८ ॥ हरणायौतके
 येनुनेपिहरणोडौ ॥ हरिणोरेतसिस्त्रोवराटेचदिरण्यवत् ॥ ४९ ॥ हरिण
 स्यात्कुरंगेपिहरिणपांडुरेन्यवत् ॥ हरिणीहरितायांचचारुस्त्रीवत्तनेदयो ॥ ५० ॥
 सुवर्णप्रतिमायांचहषणाक्षिफलावरे ॥ हर्षकेमोगनेदेचश्राद्धनेदेपिचकचि ॥ ५१ ॥
 त्वा ॥ ५२ ॥ श्रवणोपतिनेदेपिश्रवणोनिद्यजीविनि ॥ सुदशनासुषुलताया ॥ ५३ ॥
 सीषुश्रमणांविदुः ॥ ५४ ॥ कल्याणमरुपस्वर्लकल्यामंगलेपिच ॥ तपाणो
 सौक्यपणिनोडुकायातुकर्त्तरी ॥ ५५ ॥ सिहाणं काचपात्रेस्याध्वोहनासि

कयोर्मले ॥ पुराच्यवत्प्राक्पुराणोपचलरुलो ॥ प्रमाणंनित्यमर्मादासत्यवा ॥
 दिप्रमाच्यु ॥ एकतायामियत्तायाहेतुशेषुस्मृता ॥ ५६ ॥ निर्माणावारणादेशेमे
 हेचनिर्गमेपिच ॥ निर्माणंनिमित्तौसरिनिर्माणंचसमंजयो ॥ ५७ ॥ निर्वाणम
 स्तागमनिवृत्तौजगमजने ॥ यश्रवर्गेचऊर्वाणोत्तचकारकयोरपि ॥ ५८ ॥ दौ
 वीणंष्यणोस्याडुर्वायाश्रवरेपिच ॥ वारणप्रतिनेदेस्यात्वारणश्रवणं
 यो ॥ ५९ ॥ कारणकरणेहवुवधयोरपिकारण ॥ कारणपातनायाक्षपणउ
 सितेचमो ॥ ६० ॥ कारणमंत्रतत्रादियोजनेकर्मकारके ॥ मागणंप्रायेनेचे
 नातिकेलेचधर्मलोहिद्वनेदयो ॥ ६१ ॥ कोकलोदेशनेदेपिश्रास्त्रनेदेपिकौ
 कला ॥ कंकणशेखरेहस्त्रेसूत्रमंडनयोरपि ६२ ॥ पुरणपुरकेपिषृजेदेपूरण
 मुच्यते ॥ पठारेतकसूत्रेचशास्त्रौपूरिणीमवा ॥ ६३ ॥ सुणखरईस्या
 विष्णुसुग्रीववैद्ययो ॥ रोषणंपारदेहेमघषणोषरपि ॥ रोषणोपिविषाणोउक्तौ

डेदिरदंतयोः पशोः श्रेयोविषाणीतुमेष श्रेयाप्रकीर्तिता ॥ कणुर्मजहसि
 न्योः कर्णिकारेपिचकेचित् ॥ हरेणुस्तु सतीत्यस्या तरेणुः काकेल्योपि
 तो ॥ ६॥ सुवर्णस्वर्णमात्रेपिसुवर्णकषवत्तमौ ॥ सुवर्णश्च सुवर्णसिं
 तुत्तलागुरुतरांतरोर्द्वी ॥ सुपर्णः चूणे स्यागुरुं देहं तमावके ॥ सुपर्
 णकमलीन्याच सुपर्णता र्क्षमा तरि ॥ ६॥ श्रीपर्णमग्निमयेके श्री
 पर्णशास्त्रमौहदेउवर्णश्चकवर्णस्याद्वा लुकेरजतेपिच ॥ १० ॥ पक्षो राधौ
 तकोशेपक्षोः शोणकेपिच ॥ संकीर्णनिचितेकमश्रुदेवापिनेद्य
 वत् ॥ ११ ॥ अरणि वक्रिमयेपिस्तु नो मय्यदासुवर्णि ॥ तरणिसरणेना ॥ १३ ॥
 नौकुमार्यपिताकयोः ॥ १२ ॥ विपणिपण्यवीय्याच जवेदापणपण्ययोः ॥ म
 रणीशोणकेरुके नरणावेतनेनतौ ॥ १३ ॥ प्रवेणीर्वणि कुययोः सरणिः पक्ति
 वर्त्मनो ॥ निश्रेणिरधिरोहिण्यां खर्जरीपारपेपिच ॥ १४ ॥ चमणीनाली
 कायाचज्जामेपीपण्ययोपितो ॥ धारणीनाडकायास्यादुधोक्तेमत्रजिद्यपि ॥ १५ ॥

चमणीरंडीकायां कीटाद्यायामधिशितुः ॥ ग्रामणी जोगिकेपत्यौ प्राधानेना
 पितेपिच ॥ १६ ॥ रद्राणी करणे स्त्रीणां पौलोमीसिंदुवारयोः ॥ एषणी ब्रह्ममा
 र्गसारिण्यां च लुलाजिदि ॥ १७ ॥ क्षेपणी जालनेदे स्यान्नौ का देउ च कथ्यते ॥
 वारुणागंडुवायां प्रतीचीणसुरयोरपि ॥ १८ ॥ सारिणी स्वल्पसरिति प्रसा
 रिण्यां च सारणि ॥ सारणस्यादती सारे सविवे रावणस्य च ॥ १९ ॥ काकणीयण
 तुयांशे मानदंडे च काकीणी ॥ कृष्णलेकवराद्योः स्यादुमातांशकेपिच ॥ २० ॥
 ब्राह्मणीपुडि कासुके दिजपत्नीषु विश्रुता ॥ विप्रेतु ब्राह्मणे वेदे ब्राह्मणादि
 जसंहतौ ॥ २१ ॥ यद्विणिपूणिमाया स्यात्पक्षिणी कीदिनि ॥ खन्या श्रोवत् शाखा
 मानाह पुकार्यानि शिपक्षिणी ॥ २२ ॥ रोहिणी कउरोहिण्यां रोहिणीलोहि
 तागतौ ॥ कंठरोगांतनेदे सोमवक्त्रं च रोहिणी ॥ २३ ॥ एव ॥ आतर्पणं च
 सौपत्ये विद्यादालिखनेपिच ॥ अथर्वगोथयवत्त ब्राह्मणेपिपूरोधसि ॥ २४ ॥

आशेषस्यासौपानेसमारोहेप्ररोहणे॥रत्नरेणुस्तस्मिन्दुरेपलाशकवि
 कोहमे॥८६॥उहेयलचच्यनेभान्यमदनवस्तुनि॥उदरलसमुदारवाता
 नाभूलनेष्यपि॥८७॥निगरणेनोजनेपिगलेनिगरणेमत॥निसरणेस्याना
 रणेपायनिर्पणमुत्तिष्ठु॥८८॥संसरणेणारनपुरनिर्गमणेपुरे॥घटापये
 चसंस्तारेयसंबाजभूगसौ॥८९॥निसरणेस्यादुपायेननिस्तारेनिर्ग
 मेपिच॥विदारणरणेनेदेविडवेचविदारण॥९०॥निरूपणस्यादालोकेवि
 चारेचनिदशने॥नारायणोऽच्युतेजीरुगौर्षोनाशमणीविदुः॥९१॥परायण
 मन्त्रीष्टस्यात्तेत्यश्रयपौरपि॥परायणसमासंगेकास्त्र्यपारेगतावपि॥९२॥
 कार्पाणकाधिकेस्यात्यणषोडशंकेपिच॥कागुणःस्त्वोरागेविषयाभी ॥९३॥
 गयोरपि॥९४॥पा॥रीरणस्यात्कमदडेचपरशाटके॥समीरणस्यात्यवने
 पथीकेचफणीचफणीरुके॥९५॥पर्वणीनांनुपर्वस्मृतिरापाष्टनकंभले॥

पणचूरारसेपिस्यात्यर्तरीणंतुपर्वणी॥९६॥तंडुरीणःकरीमात्रेबरेतंडुलोदके॥
 मीनांस्त्रीणोर्दुशनेमीनांस्त्रीणस्वजने॥९७॥प्रचारणनिषेधेस्यात्कास्या
 दानेप्रवारण॥जुदुराणेनलेधयैरिहाणेहेखरे॥९८॥देवमणिःशिवेऽश्व
 स्यकठावर्त्तेचकोस्तुने॥चूडामणिःशिरोरत्नेकाकचिंचाफलेपिच॥९९॥प
 रवाणिस्त्वोधर्माच्चकवसरपौरपि॥शरवाणिशरमुखेपापिष्टशरजीवि
 नि॥१००॥लेबकणःस्त्वतःकोठ्यादपेठगलेपिच॥हस्तिकसारिबुकेस्यात्पला
 शरणेरेयो॥१०१॥चीर्षमर्त्तस्तुनिबेपिखजूरीनूरुहेपिच॥रागवृत्तस्मरे
 दंतधावनेरतलावुके॥१०२॥तैलपणीमलयजेश्रीवासैसिद्धकेपिच॥पीलुपणी
 चबिबाभांमूषपिमोषधिनिदिः॥१०३॥दाहायणीत्युत्सर्पणरोहिण्यानारकासु
 च॥पुष्करिणीसरोजिन्यांहस्तिन्यांचजलाशये॥१०४॥खिरीणीस्यादौमात्यांर
 सालावृत्तनेदयो॥स्त्रीरत्नेमखिमलायांचप्रोक्तासिखरीणाबुधै॥१०५॥

गारिणी ॥ हसं न्योच नास्वर व्यक्त रित्यपि ॥ स्याद्वैतरणी नद्यो प्रेतानां पातु मातृ ॥ ४॥
 एष ॥ अवयव रणमिथ्या ॥ प्रतिरोधे प्यनादरे ॥ प्रतिदार एमाख्या तं संगमे च वि
 दारणे ॥ अवदार ए च नूतान दिग्देव स्त्रा च लार्चने ॥ रोहर्षणमित्येतद्रोमा
 चेपि विनिर्गतके ॥ परिभाषणमात्नापनिपमे परिभाषण ॥ निदेत्यालं न वच
 ने परिभाषणमिष्यते ॥ मत्त वारणमिच्छेति दान कि न कटदिमे ॥ महा प्रासा
 दविष्णो नावरं डे च पाश्रये ॥ ८॥ वाचराय एतन्मते निप्रमो जनपुरुषे ॥
 कोडेर करपत्रे चा कूटे च शरसंक्रमे ॥ ९॥ मंडुपणोरिबुके सोरा के च केपी
 तने ॥ मंडुके पणो मंजीष्टा बास्ती गो जीदिका सुच ॥ १०॥ राषट् ॥ दोहद
 दल रुणंगर्जे वपः संधौ च दृश्यते ॥ पौवन लक्षणा स्यात्वा वण्ये च पयोध
 रे ॥ ११॥ पुष्पसाधारणः श्रुत्वा वसंते परि कीर्त्यते ॥ ॥ इति शाबर्ग ॥
 तदि ॥ ततं वितत वद्यामे विश्वे ते वाच्यं न वन्मता ॥ ततं वीणादि वाद्ये च पव
 स्तु ॥

॥३५॥

माने ततः पुनः ॥ इतंगते स्याद्विजातेरतं सुरतगुह्यमो ॥ ततमुक्त शिलेतोये
 दाप्ते साव्यनिपूजिते ॥ ततं मूगोपि पर्याप्ते विहिते हि सिते फले ३॥ चतमा ज्येष्ठदी
 प्ते च सलिले पिष्टं मतं ॥ मृतं स्याद्विहिते मृत्यो मृत्यु मृत्यनिधे पवत ॥ ३३॥
 गतं याता रागोर्मतं पूजितं समते ॥ मृतं त्यक्ते विधूते च तं कं पित न सि
 ते ॥ ३४॥ पूतं पवित्रे सलिले पूतं च बहुलीकृतं ॥ श्रुतं शास्त्रा वध तपोरयुत
 जनप्रसेवयो ॥ ३५॥ न तं स्याद्वाच्यं व्रजे न तस्मिन् गरपादये ॥ मृतं शीघ्रे विली
 ने च विद्राणे चा निधेयवत ॥ ३६॥ पुनं हस्त चङ्गुलैः स्याद्दूतं युद्धे पुनं पृथक् ॥
 स्थितं मूर्ध्नि गव्यभावे सप्रतिहेषु निश्चितं ॥ ३७॥ सितः समाप्ते धवले विबध
 स्तानमो रपि ॥ शतं शाते च निशिते तशोरा तं च शर्मणि ॥ ३८॥ हितं धृतं
 गवे पथे सुतः पार्थिवपुत्रपो ॥ मृतं उरंगमग्नौ समाविष्टे त्रिमात्रिके ॥ ३९॥
 लोते उगुफिते वस्त्रे तोचूता तरे मते ॥ सूतसु सारथौ तत्ति प्रसूते पोरि

तेपिच॥४॥ कत्रिया त्रवहणी जेपिसूत पारद्वं नैदिनो॥ अतस्सुवहुक्के
 तोदीपादिनेदयो॥४॥ अतस्सुवहुक्के तोदीपादिनेदयो॥४॥
 मानेसत्या अहितसाधुषु॥४॥ सतीपतिव्रतागौरयैरैतः कर्तुरागतो॥ तातो
 चकंपेन न के जातं जलौघजमनि॥४॥ पातस्यात्यनेनातेघात कांडप्रहारयो॥
 पोतशि शौबहित्रौ चलोतमश्रुणि नौरितो॥४॥ गी तस्यादशहिते गाने प्रीव
 हुक्षितमर्मणो॥ वीतं त्वसारदस्याद्विवितमं ऊशकर्मणि॥४॥ नीतयेनम
 युतेवाच्यवत्यरि किर्त्तितं॥ नूतं क्सादौ पिशाचादौ न्यासं त्योपमानयो॥४॥ ये
 तोदेवलेके प्राचै वत्तयोरनिधेयवत्॥ केतुर्धौ पताकायां यसौ त्वादिलक्षसु॥४॥
 सेउ मौलोचवरणे कउर्धरे मुनेर्निदि॥ धात्रस्यादश्नवित्त निविषये धिद्विपे ॥४॥
 सुवा॥४॥ नू वादिरसरत्तादि श्लोषादिव सुधारिषु॥ वत्तैते धात्रश्लोषादिव ॥४॥
 शोषादस्मि गैरिके॥४॥ सेउ स्त्री कसुमेनासिवसंदि सुवीरयो॥ गाउ पुष्को
 ता१ सा४

किलेचंगेगधवै शेषलोपिच॥५॥ मंत्रः स्यादपराधे च मनुष्येपि प्रजायतौ॥ धूर्त
 स्माश्चंडलवंशवधुस्तुरयोऽपि॥५॥ पूर्तं त्वपूरिते कत्रपूरतं खातादिकर्मणि॥ मू
 र्तं मूर्त्तिमतिप्रोक्तं मुक्तालेकठिन्यवत्॥५॥ गर्तः स्त्रिगर्तः शो स्यादवटे च ऊ
 ऊदरे॥ आप्तः सत्ये लषे वप्राप्तं विने स मंजसे॥५॥ व्याघ्रखाते समाक्राते पु
 रक्षितगूढयोः॥ लिप्तविषाक्ते नुक्ते च वाच्यवस्याद्विलिपिते॥५॥ दीप्तनीनासि
 तेदग्धे वदति कलितेपिच॥ असंदिग्धे गते प्रोक्तं मस्तपश्चि मनुधरे॥५॥ गस्त
 ग्रासितेपि स्यात्तलघुपणपि दोदिदा॥ पुस्तं उच्यते कले लेखकमविज्ञानयो
 रपि॥५॥ शस्त्रे मे प्रशस्ते च व्यसं व्याप्ते च संकुले॥ हस्तौ न कत्रने दे स्यात्क
 नकरयोऽपि॥५॥ कवात्यरकलापार्थे सप्रकोष्ठवत्तागुलौ॥ विहं स्याते ध
 ने वल्ले विहं स्ताने विचारितो॥५॥ तत उ वेष्टि चिन्ने दत्तविश्राणिते विते॥
 वत्तोतीते वटः स्यातो वर्तुलेपि सूते वते॥५॥ वाच्यवदत्तने वत्तचरिच

६६ सोरणि॥ अतः प्रांतेति केनाशेस्वरूपेति मनोदरे॥ ६७॥ वृत्तं प्रसवबंधस्या
 तथेयधारकचाग्रयो॥ ६८॥ इतो निकं जेदशने दंतसातुनिकथ्यते॥ ६९॥
 इती स्यादौषधी नैदे स्वातं चेतसि गकरे॥ ७०॥ अंत प्रासे चंड नावे
 सुद्रज तो गवेध के॥ ७१॥ अतीयांड प्रियायां च शल्लक्या गुगुले क्रमे॥
 का तो रम निगरे चारौ का ता उफलि निस्त्रियो॥ ७२॥ शी तो र
 स शेषे स्यादति मुक्त कदा तयो॥ ७३॥ उक्ते मे का हर ब्रह्म स्य च
 द्वा षिते पि च॥ ७४॥ श्रुतो म्रै यरुषे प्र ते व्यक्ते स्फुट म निषिणा॥
 लि को रसे सुगंधे च तित्त पपट के स्मृतं॥ ७५॥ तित्ता उक्ते रुरो हि
 एव्यारिते का न न श्रुत्यो॥ ७६॥ रक्त स्यात्तु उक्ते मे ता म्रै प्रा चि नाम वै
 के स जि॥ ७७॥ अनु रगिणि नी ल्या दि रु चि ते वा हि ते न्य व त्
 य ता ह स्ति प के सू ते वे द्या पि त रि पा व के॥ ७८॥ त्र ता यु गे गि त्रि

॥३९॥

तये ज्ञात्ता स्वामिनी धारके॥ ७९॥ शा स्ता च शा सर के पु दे व क्ता वा ग्मि नि
 पंडिते॥ ८०॥ मुक्ता उमो क्तिके मु त प्रा मु क्तौ व मो चिते॥ ८१॥ कृता श्रू
 दा श्व वेश्या जे प्रति हारे च सारथी॥ ८२॥ मु नि ष्या त न ये रु ता नि यु
 क्ते च प्र जा स जि॥ ८३॥ धा ता हि रण्य सूर्य स्या त्पा ल के त्व नि धे य व त्॥ ८४॥
 मा ता पृ थ्वि प्र सृ गो षु ब्र ह्मा ण्या धा र्क मा त रः॥ ८५॥ ल ता सो ती ष्म ती
 स्य क्ता शा खा व ह्नी प्रियं पु षु॥ ८६॥ ल ता क स्त रि का या च मा
 ध वी ह र्व यो र पि॥ ८७॥ ल ता पि पी लि का या स्या दु र्म ना जे ग दा
 त रे॥ ८८॥ पी ता स्मृ ह रि द्रा या पी तं स्या त्पी त गौ र यो॥ ८९॥ सी ता
 रा म के ले त्रे स्या त्था ला ग ल य द्ध तौ॥ ९०॥ ना नौ न द्या च सी
 त स्तु वा नि र ब हु वा व यो॥ ९१॥ शी त हि म गु रो प्रा दु वा च्य व त्
 शी त ले ल से॥ ९२॥ चित्तं च त्रै लिका यां चित्ता सं ह नि च यो॥

वातावीतिगणे वता वार्ता रुषा धृतं तयो ॥१६॥ वृत्तिमन्त्री रुषा व
 वार्ता मारोग्य फलु नो गति मार्गे दशायां च ताने प्रा न्युपाययो ॥
 वृत्तिमन्त्री रुषा वता वार्ता मारोग्य फलु नो ॥ गति मार्गे दशायां
 च ताने प्रा न्युपाययो ॥१७॥ नाडी चरण शरणं च मति धीका
 स्मृतिष्वपि ॥ वृत्ति समूहे चित्यायां दिति स्यात् बहुनेदो ॥१८॥
 पतिः प्रनो गतो मूले द्रुति श्रम पुटे तथे ॥ यति निर्कारे मति नि
 पाठे दक मेयति ॥१९॥ शिति तले सिते मूर्जे नृति नृरण मू
 लयो ॥ दिति निवास मेदिन्या स्या न मात्रे पिबे हिति ॥२०॥ धृति ॥२१॥
 योगे तरे धैर्ये धारणा धरतु विषु श्रुतिः श्रोत्रे तथा म्राये वाचायां
 श्रोत्र कर्णे ॥२२॥ स्मृति कारिणो र्म मरिताया मपि स्मृतिः ॥ रति
 स्मर विमारा गे च सुरतेर पि ॥२३॥ रुति गतो जुगुप्सायां स्पृहा

क्ति विन्तागे मेवायां पक्ति गौरि नपा कयोः ॥२४॥ मुक्तिः स्या न्मो वने मे
 दो युक्ति न्ययि च योजने ॥ पंक्ति ईशा नर छंदो दश संख्या वली अपि
 ॥२५॥ शक्ति वने प्रजावा दौ शक्तिः प्रहरणांतरे ॥ शक्ति कपाशं क
 लेन रवा श्वावतं गोरपि ॥२६॥ मुक्ता स्फोटे च दुर्गमा शं रचं रचन रवे पुच
 ॥ तत्रि ॥ अमृतं यज्ञ शेषे स्यात्पा युषे स लिने द्युते ॥२७॥ अया चिते च मोने
 च धनं तरे सुपर्वणि ॥ स्मृद मृ तापथ्या दू व्या मल की पु च ॥२८॥ अम
 तं नपा वस लेप्य जित कम लापतौ ॥ अनि युते चा न्यु तस्त्रि ते स्यादु
 उद्यमे ॥२९॥ अहितं याचिते रे पे वात व्याधौ च हि सिते ॥ अरुतं चा पि
 ला जो पु रु ती या प्रत ता वपि ॥३०॥ अहिसि ते यि चा त्पा त स्त दा त्वे
 पवने पि च ॥ आघ्रा त सि विते द्राते व्याख्या त ना पिते निदि ॥३१॥ आ
 ध्या त पवन व्याधौ दध शक्ति तयोरपि ॥ आमु त स्ना त के प्या हव

सादरेचिते॥६॥ अचित शक दोमेये पलानामयुतदये॥ छिनेपि सग
 हातेस्मादाहवतु मषार्थके॥७॥ आहतगुणितेपि स्यात्तादितं नान केपि
 च॥ स्यात्पुरातन वस्त्रे च नू न वस्त्रे प नारतो॥८॥ आतोदिशनेदेच नृत्य
 स्थाने जने रणे॥ आवर्त्त आवर्त्तने स्याच्चितने चांन। सो न मे॥९॥ संव
 त प्रत्यये प्रोक्तो विनित कतरावपि॥ त्रिगतः स्यात्त न दे विवक्तौ गुणि प ५
 तां तरे॥१०॥ न वेदुर्बुरिका पांनु त्रिगती का मु क स्त्रिया॥ विवर्त्त समुदा
 पे स्यादावत्तन न व्ययो॥११॥ उत्तमं शुक्रमो संपि संतमेपि परिश्रव
 उचितं प्रोक्तमन्यस्तेमिने ताते समेज सो॥१२॥ स्यादुद्धतं उ वृत्तितेपरि
 क्तोक्तितेपि च॥ उचितं वृद्धियुक्ते च प्रोद्यतो लून्यो र पि॥१३॥ उचितं
 व्युषिते दक्षे सुषितं पंडिते कृते॥ उद्यतः कर्म ते पादस्त्रव लने समु
 पक्रमे॥१४॥ प वनाभ्यासयोगा प ऊन कादि त्रयेपि च॥ उद्गमे सु

॥३॥

॥

मंगल योरपि॥ वृत्तिः स्याद्दररो वाटे सुतिगर्मै न मार्गयो॥१५॥ मति
 माने मनिष्य वहेदे तति कर रा हि सुयो॥१६॥ रतिः प्र वा सेरु वे स्यादति
 वृद्धादिषु सुचौ॥ वीतिगंतौ च दीप्तौ च धावने ब्रजने शरे॥ गीतिः
 ठं रसिगात्रे च नीति सुप्रापणे नये॥१७॥ रीतिः प्रचारे स्पंदे च लो ह कि
 दासू कुटयो॥ पीतिः पाने उरं च नीति साधु सुका म्यपो॥१८॥ प्री
 ति योगा त प्रेमि स्मरपत्रि प्र मोदयो॥ नूति मातंग शृंगारे जा तौ मस्म
 निसंपदि॥१९॥ स्मृतिः सीवन संस लो रुतिः स्यू तो चरु ह्ये॥ हेतिः स्या
 रायुधे काले हेति स्तरणिते जसि॥२०॥ वृत्ति विवरणे जी व्यै केश क्य
 दिषु चेष्यते॥ तत्ति शर्मत्व बोर्ज तत्ति का पां च कीर्ति ता॥२१॥ प
 तिपदा तौ गमने वीर सैन्य प्रने दयो॥ विनित रति विचारे च लान
 संनव योरपि॥२२॥ वृत्ति नानि रधो जा गे स्यान्निरु हातरे पि च॥२३॥

सुवस्त्राहामाहुः केचिन्नम्रितोऽर्थः॥ निनिःक्रेप्रदेशे च संधिनागावका
 शयोः॥ प्राप्तिः संवरणप्राप्त्योप्राप्तिजानेमहोदयोः॥ २१॥ गुप्तिः कारा
 गृहे प्रोक्ता नृगर्तैरुपमे॥ सुप्तिः स्पर्शितायां च स्वापे विश्रान्ता
 तिन्याः॥ २३॥ शान्तिः शमैपिकल्याणकोशो नान्निवाषयोः॥ जातिः
 रसिसामान्ये प्रालिप्यागोत्रतन्मनौः॥ २४॥ जातिजातीफलध्याना
 बुद्धीकंपिजयोरपि॥ जातिः सतोत्रपितरिव्याप्त्यव्यापनत्वनयोः॥ २५॥
 सातिदाने च साते च प्राप्तिः पूर्तिप्रदेशयोः॥ वतीदीपदशादीपगात्रा
 नुलेपनपुत्राः॥ २६॥ वत्तिनिषजनिमणोनयनां जननखयोः॥ अचि ॥ २७॥
 पिशभनुः कोद्योमूत्तिकाटिन्यकामयोः॥ २८॥ कीर्त्तिप्रसादप्रशसा
 विस्तारे करमेपि च॥ जातिर्मिथ्यामतोख्याताचमणे चामवस्थितौः॥ २९॥
 रजतमौनचर्कचयउसरितिवर्त्मनि॥ तत्किर्विनागे सेवापाप

ऊरेपि स्यादुदितं प्रोक्त उक्तते॥ २५॥ स्यादुद्धितं संजाते समुद्रवृद्ध
 योः॥ रजतं विशदेदंतिदंतयोस्तारहारयोः॥ २६॥ सुरतं स्यान्निधु
 वने वैदेवत्वे सुरतामता॥ प्रजातं वितते सुहृदुसंहतं सगते दृष्टे॥ २७॥
 सितं सुवर्णादिश्वचिते स्मरुते॥ पलितं शैलजे तापे पांडुके शोचक
 दमोऽलितं हारने स्यादीप्तिः तलितं पिच॥ सवलितं कलितं वि
 षेकलेते विदितं मयोः॥ २८॥ कलितं तासुरे रग्धे त्वरितं प्रजवेदुते॥
 स्मिते च चले जिह्वार्मि वंस्तिमदुग्धयोः॥ २९॥ सुरितोतिहिते च मि
 मूर्धितं सोढयेदृष्टे॥ दुषितं विस्मिते प्रीते प्रणते हृष्टो मणिः॥ ३०॥
 गजितामभतंगे गजितं लदधनौ॥ वर्द्धितं प्रसूते छिन्नपूरिते चापि
 वदितौः॥ ३१॥ स्थापितं निश्चितं न्यस्तं चेष्टितं गवि चेष्यते॥ वेष्टितं
 सकेरुद्धे स्त्रीणां च करणावतरे॥ ३२॥ नारितं नासिते प्राप्ते वि

रिते बुद्धि तार्थयो ॥ विहितं कुटिले प्रोक्तं व्याच्यवद्विद्युते सुते ॥ १४॥ ग
 थितं युक्तिं तहंसितेषु समीरितं ॥ मथितं निर्जलोदस्त्रिन्यालो
 डितं निष्ठुष्टयो ॥ १५॥ प्रार्थितं माचितं शस्ते संरुद्धे निहिते पिच ॥
 ज्ञितं करणे स्त्रीणां इहा सुरितयोरपि ॥ १६॥ केदितं स्यात्तमाकाने
 हितं रुदिते पिच ॥ प्रोक्तं निर्दुते सिते वापितं मुडितं मतं ॥ १७॥ बीजा
 तते रशितं स्तुष्टवर्मितयोरपि ॥ कारितं स्त्रावितं कारैरनिशस्ते
 च शंसितं ॥ १८॥ सुतं च श्रुते पुण्य सुविधाने च वाच्यवत् ॥ नितं
 विप्रलब्धे स्यात्तं च विप्रतते पिच ॥ १९॥ वित्तं तो संसुते पिस्यात्तवी
 नसो रोगिते पिच ॥ २०॥ अर्द्धजलो च प्रसृतो जवायां प्रसृतो मत्ता ॥ २१॥
 २१॥ सुतं मंगले सत्ये प्रियवाचि च सूतं ॥ २२॥ प्रसृतं वाच्यव
 त्जाते प्रसृतं कुसुमे पिच ॥ विश्रुतं तात संक्षेप प्रतीते धनि

॥ ४१ ॥

धेयवत् ॥ २३॥ निर्मुक्तस्य क्तसंगे स्यान्मुक्तं कंचुकं जोगिनि ॥ अव्यक्तं शंके
 रविक्ता वयं क्तं मरुदादिके ॥ २४॥ आत्मन्यपि स्यादव्यक्तं मस्युदे त्वनि
 धेयवत् ॥ विविक्तं स्यादसंख्यं विविक्तो र्यितपूतयो ॥ २५॥ वाच्यव
 दशितो धीरे विविक्तं रसि स्मृतं ॥ रोहिस्त्रिधरे धीरे रुद्रशक्रशरसो ॥ २६॥
 रोहितो मीनमृगयो नैरोहीतकद्रुमे ॥ रोहितं रुधरे लोहितं कुकुमे
 रक्ते मृगशीर्षे कुचंदने ॥ २७॥ लोहितः स्यान्नदो नौ मेव लोहितं वाच्य
 वत् ॥ पुरितं स्यादस्तिपुटे पाटितं स्य तयोरपि ॥ २८॥ पीडितं व्याधितं स्त्रीणां
 करणे वापि मत्रिते ॥ पिडितं गलितं सांद्रं मंडितं सिद्धं के कवौ ॥ २९॥ हारितं
 पक्षि नैरे स्यात्तु नि नैरे च के तवौ ॥ प्रणीतं संसुते वक्षो विहितं च प्रवेशि
 तं ॥ ३०॥ निहितं चोपसंयत्ने प्रणीतो जेद्यवन्मत्तः ॥ प्रतीतः सादरे ताते प्रख्या
 तः स्यात्तुष्टयो ॥ ३१॥ वाच्यवत् स्यत्तं प्रमीतु मोहिते पिमृते पिच ॥ विनि

तमुपनीति स्यादपनीते जिते द्विये ॥४२॥ वणिजे सुवहा श्वेच निरुते चाभि धेय
 वत ॥ पृषतो हरिणे विंदौ पृषतश्चा श्वरो हिते ॥४३॥ नवेत पृषदिवं श्वेते वि
 दुयुक्ते च वाच्यवत् ॥ नरतो नाद्यशमास्त्रे पिदौ श्वो तोशवरे नटे ॥४४॥ रा
 रीनुजे पि नरतस्तुं वाये पि च क्वचित् ॥ नारतं मय नैदे स्या जं बुदीयेपी
 नारत ॥४५॥ नारती उ सरस्वत्यां य कृणी वृत्ती नैदयो ॥ पुर्जाते व्यसने श्रो
 क्त मसम्प्राजात वस्तु नि ॥४६॥ परेतो नूत नैदे स्यात् परेतो वाच्य वक्तव्ये ॥
 कपोतः परापते पि स्या क्त विकार्य विहंगमे ॥४७॥ व्याघ्रा तो योग नैदे स्या
 दंतराम प्रहारयोः ॥ संघातः संहतौ घाते संहा तोर कांतरे ॥४८॥ रैव तस्तु सु न४
 वणलौ शैल नैरे पि श्रूति नि ॥ स्या किरा तस्तु नू नि बे म्ने के चाप्य तना व
 पि ॥४९॥ मदा किनां किरा ती स्या त ऊ द्वि न्या मपि दृश्यते ॥ आयौ स्फोटश्चा क
 पत्रे स्या फोटः को विदार को स्फो ता गिरि कर्णो विन मा ल्यां च वि श्रू ता ॥

च१

॥४२॥

उदात्तः स्वर नैदे स्या का बालं कार हृद्यो ॥५०॥ उदात्तो दा त म ह तो निर्मि चंदे उ
 तम लो ॥ उ न्त उ न्मा द व ति ध चूर मु च ऊ र यो ॥५१॥ प व तः शैल दे व ष्यो
 ३ पा प्रती नि र्ज र न्तो ॥ प र्वा त्तं उ प ये चे स्या त कृ तौ रा क्ते नि वार णो ॥५२॥ जी मू
 तं स्या द्भु ति करे रा क्ते दो घो ष के घ ने ॥ जी वा उ जि वि ते न के जी वा उ जी वि तौ
 ष धि ॥५३॥ आ प स्त स्ते जि ते हि से के शिते ऊ पिते ह ते ॥ निर स्त प्रे शिते ह स्या
 त्रि ष्टु ते त्व रि तो दि ते ॥५४॥ सं त्य के च प्र ति ह ते वि श्व स्तो मि न ते स्म तः ॥
 वि श्वा से यो ये वि श्व स्तो वि श्वा स्ता वि ध्र व स्त्रि यो ॥५५॥ नि वा तो द ठ सं न्ना हे वा
 तां ते चा श्र ये पि च ॥ अ नंतः शेष वि ष्वोः स्या द नं तं सु र व र्त्त नि ॥५६॥ अ नंतं
 स्या द न वि धौ वा च्य व स मु दा ड तं ॥ अ नं ता सा रि वा य ष्या वि शा ल्या लां ग ली
 पु च ॥५७॥ अ नं ता है म व त्यां च ग ड् च्यां च चि ता व पि ॥ श ऊ तं प रि नै दे स्या का
 स प रि वि हं ग यो ॥५८॥ दृ षं तः शा स्त्र उ न यो सु दा हर णे प्र की र्त्ति ता ॥ त

तां तोयमसिद्धांतदेवाकशलकर्मसु ॥५॥ निशांतः कलितेशांते निशांतो नव
 नाषसो ॥६॥ चोत्तोरसरे नावेकास्यवात्ताविषेशयो ॥६॥ चोत्तप्रक्रियायां
 चक्रचिदेकांतवाचक ॥७॥ उदातो निर्मदागजे समुद्रीर्णववाच्यवत् ॥८॥ अ
 दातो तपुरेराजोरहः कस्तूतरेपिच ॥९॥ अश्वंतमश्रुते बुद्धामरणेन वधाव
 पि ॥१०॥ त्रेपिकथिते स्वतं मुदंतः साधुवार्तयो ॥११॥ जयंतः शंकरेपि स्याज्जयंत
 पाकशासने ॥१२॥ जयंतीपादपे गौर्यामिन्द्रपुत्रीपताकयो ॥१३॥ गोदंतो हरि
 तां लेस्याहं शितोर्मिते ॥१४॥ नासंतः सुदराकाचे नासपक्षिणि ॥१५॥ महद्वा
 विशांते च महती वल्लकीतिरि ॥१६॥ मरुदरे समीरे स्यादहं ज्ये
 तपिच ॥१७॥ जगदारव्यास्यतावाते विष्टपे जंगमेपिच ॥१८॥ जगती लुबने क्वा
 पांठो नेदे जनेपिच ॥१९॥ पिसत्यपि न्यटिषु ने नोपतने क्व विहंगयो ॥२०॥ ह
 रिक्कज निवर्णे चटणवावजिविशेषयो ॥२१॥ हरितेपि वडुवायां हरिद्वर्ण

॥४३॥

तेन वत् ॥२२॥ विद्यसौ दामिनी संघो निप्रनेत्यत्रिधेयवत् ॥२३॥ मुमु
 वर्णवतयोरो हि स्युलता निदो ॥२४॥ नृनरदे शो ले चपत त्या
 कपक्षिणो ॥२५॥ ककत्तमणि न्ये स्यादकुवत्कसिते न्यवत् ॥२६॥ अ
 तीकुंदना स्याच वाम्यां चपरिकीर्त्तता ॥२७॥ श्रीमान्निलकवृहे स्यामनो
 निकटे न्यवत् ॥२८॥ भीमान्वाचस्यतौ धीरे नास्वारसूर्ययो ॥२९॥ सर्वता
 सुखसंबोहा सुरन्याशो जने व्रते ॥३०॥ वाचवद्विरता हृद्रोगे दिव
 ते स्फुटे ॥३१॥ वनिता जनिता चर्यरागयो पितियो पिति ॥३२॥ वनिता योचि
 तेपि स्याद्वनितां वितेपिच ॥३३॥ जीमाता वल्लने सूर्यावर्तेपि वल्लनापतौ ॥३४॥
 विनेता देवकेशो विधाता वेधमिस्मरे ॥३५॥ विनेता पिटका ने देवि नता ता
 स्य मातरि ॥३६॥ विनेता प्रणते शंभु शिहिते च निधेयवत् ॥३७॥ पंचतापं
 नावे स्यात्पंचता मरणेपिच ॥३८॥ विनातारव्यामसूतायां जनिते विन

तेपिच॥वास्तिताकरिणीनार्थीवासितंसुरनीतते॥४॥तानमात्रेखगारा
 वेवासितं वस्त्रवेष्टिते॥पिशितामांसिकायां स्यादमिषेपिसिमतं॥४॥
 नृणां तपि नृणां च स्यात्तृणां कामुकेपि च॥दिजातिरुज्जेविप्रे श्रीपती सा
 तोहरो॥४॥गोपतिः शंकरे शंटे पायि वेपि विकर्त्तने॥सुपतिः शिल्प
 ने दे स्यात् सुपतिः कंबु कि न्यपि॥५॥जीनेष्टिर्जाज के सू तेष्म मतिः का
 लाचद्रयो॥आहूति स्यादग्नि होत्रे ज्वलना बुजयो निष्ठु॥५॥अगदि
 स्ति वृह ने दे स्यादगस्ति कु न सं न वे॥नगस्ति किरणो सूर्ये स्वाहापा
 च विलोक्यते॥५॥संगतिः संमेलने संगतिः प्रणतो धनो॥आयुति
 संयने दे स्यादे कौ प्र ना वागामि कालयो॥५॥आयतिः स्यादले स्नेहेन
 शिवे वासरेपि च॥मदार्थार्थं तथा पत्तिर्विपत्तिर्थात नापदो॥५॥निय
 तनियमे दे वेपदतिः प्रेक्षि वत्तनो॥सततिः प्रेक्षि विस्तार गोत्रेषु के विजिस्म

॥४॥

ता॥५॥परतिपरा न वेपि स्यात् संतंतिः पुत्रक न्ययो॥प्रममतिः स्यादतुहा
 नेयति मान्येपि संमतिः॥५॥समितिः संगरे साम्ये सनायामपि संगरे॥अ
 दितिर्वसुधायां स्यात्पुरुतिः प्रतिपत्तिथौ॥५॥उन्नतिः स्तार्यदारेषु समया
 युदयेपि च॥प्रसूतिस्तनयोत्यतौ तथा दुहितरि स्मृता॥५॥प्रततिर्विस्मयो
 वल्यो वदतिः सचिवे गवि॥दुर्मतिनरके पिस्त्रे विरुतिपिडरोगयो॥५॥नि
 त्ततिर्न सनेप दे व दंति शठ शा द्यो यो॥आत्ततिः कथितारूपे सामान्यव
 पुषोरपि॥५॥प्रततिः सहजे यो ना वमाचे परमात्मनि॥निवृत्तिः सूक्ष्म
 या स्यादस्तंग मनसौ ख्ययो॥५॥सुनीतिः शो जन नये सुनीतिर्द्विमातरि॥
 प्रवृत्तिः कथिता वृत्तौ प्रवा हो दंतयोरपि॥५॥विठितिरंगरागेपि हाव विठे
 दयोरपि॥संवित्तिः प्रतिपत्तौ स्यादविमारेज नस्य च॥५॥प्रणने दोषे वा स
 त्तिः संगला नयो॥पर्याप्तिः स्यात्प्रका मेपि प्राप्तौ च परिरुणे॥५॥सामाप्ति

श्वावसाने स्यात्समाप्तिश्च समर्थः ॥ वृत्ती रुद्रवार्त्तिक्या कंटकायां चिवा वि
 रा ॥ १॥ सारिधान्यां महात्मां च षोडशवसननेदयो ॥ सावती वृत्तीने दे स्यात्तशि
 शुपालस्य मातरि ॥ ६॥ रेवती हवीपन्यां स्यात्तरात्रे दे पिमा च ॥ ७॥ जामावती
 जतिपुवतिमोसा सुसरिदंतरे ॥ ८॥ कामाचं विशल्यायो विप्रवर्ग्यमायते ॥
 नवतिवा एने दे स्याद नवत्वं स दर्थयो ॥ ९॥ पावती राक्षकी उगा द्वौ दी जीवनी पु
 व ॥ श्रवती चंद्रवती च सरिदौ षधिने रयो ॥ १०॥ जीवती जीवनी रा म्यो गूड ची च
 दयोरपि ॥ ११॥ संत्यंगार धान्यां च मधिका रा किनी निदे ॥ १२॥ वासेती मा धवा पयो
 पाटला यो क्रमे लके ॥ वासेतं को किले पि स्याद्वा संता विहिते वटे ॥ १३॥ तच ॥ नवेदव
 सितं ज्ञाने गतौ रुद्रावसानयो ॥ अवतः सिते पीते वि श्रुदे प्रवरे पि च ॥ १४॥ अवगीते
 उनि वदि मुद्रुष्टे विगर्हिते ॥ अंतर्गतं विस्मृते स्यात्तमध्य प्रादौ व कथ्यते ॥ १५॥ अ
 गारि ति पलाशी प कली को म दध्ययो ॥ अयावतः स्वतंत्रे स्यात्तिहि ते चाय पावत ॥ १६॥

॥४५॥

प्रतिवर्तित
 रुद्रयो ॥ ६॥

अमिनी तो नवेत्य आं सं स्मृता मर्षिणोरपि ॥ अत्याहितं महा नी तो जा वाने पे रु कर्म
 लि ॥ १७॥ उपाहितो न लो त्या त आरो पित उपाहितः ॥ उपाहृतो धूर हत शुपुत यो म
 तः ॥ १८॥ उदास्तितः प्रती हारे ध्य हे च प्रणिधौ वरे ॥ अमिजा तं स्मृ ता न्याये क्ली न
 प्राप्त रूपयो ॥ १९॥ पारिजातः सुरप तो मंदारे पारि नदके ॥ नवेत्य रिग तो ताने प्रिया
 ते वेष्टिते पि च ॥ २०॥ रमा तं प्रणिहिते ल भे विन्य से च समाहिते ॥ नवेत्य ति ह तो दिष्टे
 च समाहिते ॥ २१॥ उल्लेखितं समुत्कीर्णं वा वै चै च त नू ल तो ॥ विद्या उप चिते
 पुष्पे समुदे च समाहिते ॥ २२॥ समुद्र त समुद्रो र्ण य विनी ते समुद्र त ॥ अहरिते पि
 काला पे र टिते र न ॥ २३॥ निःस्वने ॥ २४॥ नवेत्य व्रितं ला तार के च प्र सवे त ते ॥ उज्ज्वलि
 तं उ वेश्यां उ तुष्टे च निवेय त ॥ २५॥ उद्गृही त मुपन्य से बद्ध ग्राहित योरपि ॥
 निष्पुषितं निस्त्रि स्यात्त व र्जिते च लघू ल ता ॥ २६॥ ऐराव तो ज मा ते ग ग नार
 ग ल कु चा हि ऐ रा व तं म ह द्र स्य रु दु दी र्घ श रा सने ॥ २७॥ ऐराव स्यात्त डित

डिदेदेचलत्तते॥ कलधौतंरुथहेमोः कलधौतं कलधनौ॥ ८॥ दीवा नीतं ऊं
 नाते स्यादुबुके उ सुदरके॥ पाशुपतो बकपुष्पपशुवत्पथिदेवतो॥ ८॥ निकासितो
 निर्गमिते श्रिते धिजते पिच॥ अतीपातो महोत्पाते योगनेदापमापहे॥ ८॥ स
 मायातो वधे युद्धे परिवातो रूपा तयो॥ विनिपातो च पाते स्याद्देवादि व्यसनेपि
 च॥ ८॥ समाहितः प्रतिज्ञाने समाधिरूपतमनि॥ वाच्यवत् त्रिहिते सिद्धे समा
 धाने समाहितः॥ ८॥ नद्यावत् स्मृतोऽस्मिन्नेतत् करदुमे॥ गीतप्रबधने देव
 स्वस्तिके प्यनिधीयते॥ ८॥ परिवितो विनिमये कर्मराजपलायने॥ अनियुक्त
 पररुद्धे तथा स्यादितित्यरे॥ ८॥ अनियुक्तसुवासंयांति निशिल्पिनिष्केपि च॥
 उपरत्तः सैहिके ये तद्गृह्यसनाडुरे॥ ८॥ सूर्यततो बंधुजीवे तथा नास्करजी
 वके॥ नदी कांते समुद्रे स्यात्सिद्धुधुवारे पिहिनले॥ ८॥ नदी कांता मता
 जंबुका कज्जवालना सुचा॥ नागदंतो द्विपरदे गहा विगतदारुणि॥ ८॥ नाग

॥ ४८ ॥

देतो उक्तं जायां श्रीहस्तिन्या मपीष्यते॥ पुष्पदंता सुदिगामनागविद्याधरांतरे॥ ८॥
 एकवाको न चंद्राको पुष्पदंता विति स्मृतौ॥ चंद्रकांतोऽस्मिन्नेदस्या चंद्रतं उ
 के रे॥ ८॥ वैजयंती गृहेशक्रप्रासादधजयोरपि॥ वैजयंती यं पता का योज
 यंती वद्विमंथयो॥ ८॥ पुरस्कृतं स्त्रितारिग्रस्तयोरनिधेयवत्॥ अनेह ता
 न्यर्चितयोः सिते चापि पुरस्कृतं॥ ८॥ अवद्वस्तं परित्यक्ते निदिते प्यवच
 णिते॥ धूमकेतुः स्मृतो वद्वा बुत्पातग्रहने दयो॥ ८॥ चित्रगुप्तः कृतं ते स्या
 तलेखके चास्य समतः॥ पंचगुप्तसु चार्वाकरदिने कमठे पि च॥ ८॥ अमि
 हितः प्रतिप्रतिहते तथा निर्गमिते पितै च॥ परिहितं प्रतिहते प्रोषिते च
 निराकृतं॥ ८॥ आयुष्मान्योगनेदस्यादायुष्माश्चिरजिविनिविदस्वान् वि
 बुधेना नौ नगवाक्रदृष्टो यो॥ ८॥ दीपवत्सिधुनदयोः दीपवत्पापगानुवा
 गरुत्मानि हगे ता र्हे संख्यावान् पंडिते मते॥ ८॥ अश्रुमान् नास्करेशाल

पर्याप्तं श्रुमता ॥ अथपतिः कवेरे स्यात् ॥ इत्युपपत्तिः ॥ इत्युपपत्तिः ॥
 गुरुस्य दस्य धाने च सन्निधिः ॥ सेनापतिः कार्तिकेयेयती काधित्तते ॥
 पिवा ॥ लक्ष्मीपतिवासुदेव लवंगदुवने दयो ॥ प्रजापतिविधौ च ये हि मा ॥
 तिष्ठते न त्वा ॥ वनस्यति वृहमात्रे विनापुष्पं फलिदुमे ॥ सदागतिस्मात् ॥
 वने निराचै लोचसदी श्वरे ॥ १५ ॥ दिवा कीर्तिचंद्रालेनापितो लूकयोरपि ॥ प्र
 ततिः प्रतिकारे प्रतिमायां च पुनने ॥ १६ ॥ निराकृतिप्रतिहेयेय स्वाध्यायेय नाहनौ ॥
 प्रतिपतिः परप्राप्तौ प्रवृत्तौ गौरवे पिवा ॥ १७ ॥ प्रोक्तं च प्रबोधे च प्रतिपत्तिः प्रयुज्यते ॥ उपपत्तिः सु
 युक्तौ स्मात्प्राप्तावुपगमेन नौ ॥ १८ ॥ उपपत्तिः संगमात्रे सेवायां प्रतिपादने ॥ अतिरासि
 स्म तौ लौकापदवेदे पार्थने पिवा ॥ १९ ॥ पारापतिः नु जंगानां नगरी सत्तेरितो तरे ॥ गंध ॥ २० ॥
 दत्तासुराभूम्योः पुरीषो जगंधयो ॥ २१ ॥ हेमवत्यनया स्वर्णतार्घ्यः श्वेतवचोमयो ॥
 धर्मवती नदी ते देवदत्तापादये पिवा ॥ २२ ॥ कुमुदती सुदीप्यां कुशपत्तिः कुमुदती ॥

शुभदंता सुदीप्यां स्यात्पुष्पदंतो न योषिति ॥ २३ ॥ नरे चरंगमाता उकुटिन्यां नरुस
 मंदयो ॥ प्रधूमितात्कृषितायां सुर्यगंतव्यदिश्यपि ॥ २४ ॥ प्रपत्तिना तपस्विन्यां मुडि
 न्यां मासिकोषधौ ॥ रुद्रप्रोक्ता शतावर्षा मूकशिब्या बलान्निदि ॥ २५ ॥ रुद्रवृताप
 दलां यां माषपण्यं च नापिता ॥ समुद्रां तावुकापीसिस्सृक्का दूरालना सुसुचा ॥ २६ ॥
 तया ॥ स्यादवलोकिते बुद्धे प्रहिते त्ववलोकिते ॥ उपधूपिते ॥ २७ ॥ स्यादपरानितो विलेख
 श्रीकंठे चापराजिता ॥ श्वेता उर्गतितीडगा स्यान्निर्जिते त्वनिधेयवत् ॥ २८ ॥ गणधिप
 तिरिआख्याशं करेपि गजानने ॥ यादसां पतिरं नो धौ प्रतीचादी क्यता ॥ २९ ॥ ५ वपि ॥ ३० ॥ स्या
 त्वपि वापतिर्तुयो ॥ रुद्रां करेपि नारव्याषधो पिवा ॥ मुद्रानिपिक्तो नुपाले प्रधाने
 रुत्रिये पिवा ॥ ३१ ॥ वसंतदूत श्रुते स्यापिकपं च मरागयो ॥ वसंतदूतीपालव्यां प्रती
 ता प्रतीमुक्त्यौ ॥ ३२ ॥ तपट् ॥ अद्वयारापतश्चिन्नकंठे तिन्निरिषहिलि ॥ समुद्रनं
 ना तारव्या पापूषा मुनरोचिषो ॥ ३३ ॥ इति तातवर्गा ॥ यद्दि ॥ रथः स्यात्स्यंदने काये

चरते वेतसेपिचा॥ ऊघप्रवेणाऊशयो॥ पायोर्धेपीयमंनसि॥ १॥ कोऽसु
 सटिकेनेत्ररुग्नेदेमदनेपिचा॥ पोयेधने श्रेयोणायांकटीस्त्रीगर्जयोरपि॥ २॥
 कायः स्यात्तद्वनिपाकेदुखवसनयोरपि॥ सिद्धेनीत्यामधुष्ठेसिद्धर्जद
 नसंनवे॥ एषुचुपेत्तेलुजरेलताएयुमदत्यपि॥ दुःखः स्यादुगतिमूर्खेप्र
 षः शिखरमानयो॥ ३॥ तुहोमवजनेउछानीलीसुहोमयोरपि॥ मथः स्या
 स्याद्रसंयानेनेत्रामयदिकाकरे॥ ४॥ ग्रंथोस्याधनेस्यासंदर्भेदात्रिंशनिमित्त
 ग्रंथिपैलिकोटिलेग्रंथिपलेगदातैरे॥ ५॥ अथप्रकारेविषयेविककारण
 वस्तुषु॥ अत्रिधेयेपिष्टदोनानिद्वतौचप्रयोजने॥ ६॥ तीर्थशास्त्राधरेहेत्रोपा
 योपाध्यायमंत्रिषु॥ अवतारविजुष्टानः स्त्रीरजःस्त्रिविश्रुतां॥ ७॥ सार्थवलि
 क्तसुहेस्यादपिसंघातमात्रके॥ पार्थस्तुकुकुनेलोगयावयेदवत्तयो॥ ८॥
 कथारत्नयन्त्रितोस्यात्कथाप्रावरणंतरे॥ आस्त्रावलेनायत्तापहासुकथयो॥ ९॥

॥ ४टी ॥

संस्थास्त्रितोचरेनाशक्ति सादनश्ययोरपि॥ बीघीगुहोपांतौनाद्यरूपक
 वत्सो॥ १॥ युयिथुप्रनेहेस्यान्नागंध्यांकचुरटनो॥ पूयतिर्यक्तमूहेस्या
 हृदमात्रेपिनापिता॥ २॥ यत्रिमन्मथः कामचितायांकपिबेकुसुतायुधो॥
 उमायकूटपत्रेस्यान्मारलोघाटकपिच॥ ३॥ प्रमथोपिगलोघोक्तयथ्य
 योप्रमथाप्रवेत्ता॥ निशयंस्याददरात्रेविशायामेन्निमात्रके॥ ४॥ विदि
 योयोगिर्गतिमोरुदयः श्रुतिकुर्कुटे॥ शमयः सचिवेशोतौधमयोदमदंडयो॥ ५॥
 वरुयोरथगुहोस्यादरुद्योचमदेरुमनो॥ अतिथिक्शपुत्रेपिकोपेप्राधु
 लकेपिच॥ ६॥ वमधुर्वमनेपिस्त्राङ्गस्यकरसीकरे॥ वमधुः कथिताशा
 वैरिक्शायामपिदश्यते॥ ७॥ समुथोविहितेशकेसदाधेपिसमतः॥ सिधाय
 मुनिसिहेस्यासिद्धायः सितर्पेया॥ ८॥ कायस्तौपिचनेतेस्यात्प्रचरेपर
 मातनि॥ लहस्तेखनावस्तेदेहस्तेवलाजिकेपिच॥ ९॥ कायस्तौचहरि

नकामामत्यां च प्रदर्शिता ॥ वधस्त्वा च वधति वयस्त्वा शास्त्रली दु मे ॥ खवा
 ली गुरुवी का कौली शुहो लाम लकी युवुवा ॥ अ अ डोग ई नाडे स्या तपिय मे
 पुलि माति थौ ॥ ११ ॥ उय स्ता मे ड उ संगे नुगे पाधौ च कथ्य ते ॥ निययो न म
 के मि स्या निः स्वत्वा निरा योरपि ॥ १२ ॥ गौ पि सु करी स्या जो पूछे गो जि कि कौ
 षधौ ॥ चित्रयः स्या हं धर्व रवी विद्या धरांतरे ॥ १३ ॥ बतु व्यय अतु मा स
 संग मे पि दि जे पि च ॥ वान प्रस्त्रो मधू के स्या कि शु के स्या बा अ मांतरे ॥ १४ ॥
 अय्यारव्या हरित कपोपत्रगे नि व्यपे पि च ॥ पद ग्रंथा स्या ह वा सद्यो प्र
 ग्रंथो पि प्र की पते ॥ श्री ॥ श्री ॥ यवा ॥ चित्रयः स्या हं धर्व रवी विद्या धरांतरे ॥
 वतु व्यय अतु मा स संग मे पि च दि जे पि च ॥ वान प्रस्त्रो मधू के स्या कि शु के
 वा अ मांतरे ॥ १५ ॥ दश मि स्त्रं न व वि जे स्त्र विरो पि प्र व रु ते ॥ अनिक स्त्र रण
 स्वर्ण गशि हा वि व रु ते ॥ राज रथि के व ड प वी र मई ल के पि ॥ च ॥ न वे द ति

॥ ४ ॥

कथानष्टधर्मै पार्थ व च स्यति ॥ अ अ रे ये प्यु ररयि समुद्रे च विप न्त लौ ॥ इति य
 तवर्गः ॥ ॥ दहि ॥ ग दो चा तरि वि लो स्या त आम ये चा पुं दे ग मा ॥ न दः समुद्रे ति
 न रे न दी उ सति स्म ता ॥ महो रे त सि क सूर्या ग वे द धे न दान ये ॥ मद्ये पि म र
 आख्या तो मदी तूष क व स्तु नि ॥ पदं शष्टे च वा को च व्य व सा या प देश यो ॥ ॥
 रत जी कयोः स्त्रान त्राण गोरं क व स्तु नि ॥ उ द प ला प ला ग रु ति ग्रं थि प लि
 मा ण यो ॥ र दो वि ले र व ने दं ते न डं क ल्या ण श म् लो ॥ ने दो द्वे च वि शे षे स्या दु
 जा पे वि दार णे ॥ स्वे त स्तु वि दार णे स्वे त ने ध र्मे शा र्क र्द म श य यो ॥ पा दो बु ध
 उ मां शे शे ल प्र त्यं त प व र्ते ॥ च र णे च म य स्वे हो दे र जा से ष णे ॥ सू र स्तु सु य व
 स्व प कारे व्यं ज ने पि च ॥ स्वा दु र्म नो ते मृ षे च म उ स्या व को म ले ख रे ॥ ॥ अ
 सं व स रे मे वे गी रि ने दे पि मु स्त के ॥ वि दु स्तु रं त शै वे स्या त या वे दि च वि प्रु षे ॥ ॥
 ऊं र अ क्र मे न मौ मा घ ति थि ने दे सुर दि षे ॥ के द स्तु सुर णे स स्य मू ले ज ल

धरेपिच॥१५॥मंदखलेमरवेमूर्खस्वैर्योरोगिले॥अनायेपिचमागि
 जजातिप्रनेरयो॥१६॥ठंदोवशेषनिप्रायेहृदयाचिन्नवृत्तयो॥विदि
 रंगुलिमुद्रायोबुधेलंनननृतले॥१७॥अंडुस्याहंधनद्वयोप्रनेरनृपण
 कस्यच॥नंदिरानंदधर्तेप्रतिहारेहरस्यच॥विदत्तानेनबुद्धौवधीराक
 मनीषयो॥नितामवादेऊसायांनंरामणिकसंपदो॥१८॥दत्ति॥धनदोरा
 तरिश्रीरजलदोमुस्तकेबुद्धे॥नंदस्यात्पुण्यसमसीकोशीरयोरपि॥१९॥
 प्रमदसंमदेमतेकामिन्याप्रमदामता॥विशदपांडुरेव्यक्तेनीवदोवैद्यवि
 द्विषो॥२०॥अगरकपिनेरस्यात्केपूरेगदमिष्यते॥अंगदायाम्पदिगति
 हस्तिन्यासरमुदाहृता॥२१॥वरदोपिप्रसनेस्याधरदशांघचेतसि॥वरदापि
 चकन्यायामामोदोनधहर्षयो॥२२॥नर्मदकेनिसचिवेनर्मदासरिदंमरे
 हृदोगणकेरात्रौकृतादाकृतादोतरे॥२३॥कपर्दीखंडपरशोनटाजूदेवश

॥५०॥

टके॥आस्यदंडपदेहृत्तेनिखादस्वयचेखरे॥२४॥प्रसादोदुमहेकाव्यगुणस्वा
 ख्यप्रसन्निषु॥प्रसादकथ्यतेदेवनरदेवनिवासयो॥२५॥शारदपीतमुडेस्या
 ठालीनेप्रतिनेनवौ॥वषेयजलपिब्यभ्यासमपणेचशारदि॥२६॥शारदोविय
 नेदेपिहिलुलेपारदेपिच॥तोयदंडघतेप्रोक्तंतोयदोमुस्तकाष्टयो॥२७॥निव
 दस्यात्परिपादपरिनिष्ठितवादयो॥अर्बुदोमासलेस्यादशकोटिषुचार्बुदो॥२८॥
 शैलेर्बुदोर्थसंनेरस्युटितेसिंधुसंगमे॥कुसीदंजीवनेवृध्याकुशीदश्चकु
 रेशीके॥२९॥प्रणारस्तारशरेस्यात्प्रणारश्रवणमयो॥प्रणारप्रणदेरैत्यरा
 पादोतातिपुत्रयो॥३०॥मेनादकेकिमानारठागलेषुसमीरित॥गोविंदोका
 सुरेवस्यात्तगवाधहेवृहस्पतौ॥३१॥आक्रंदोदोदाहरणेमात्रेत्रीतरिरोदने॥
 माकदसदकारेस्यान्माकंनोधामलकीकले॥३२॥अदेडुअप्रशकलेगन
 हस्तखांकयो॥अंडुस्यादतिप्रौढस्त्रीगुह्यागुनियोजने॥३३॥कणांडुरुक्षिदि

कार्याकरणपाश्यामपि स्मृतं ॥ स्यात्कौमदः कार्तिकिके चंद्रिकायां च नौ
 मुदी ॥ २६ ॥ मुकुटं कैरवेरक्तं पंकजं कुमुदं कपौ ॥ इत्यांतरे च रिग्ना नाग
 योरपि किर्तितं कुमुदा कुनिगं नायोः स्यात्कुमुदं सुपायवत् ॥ कुमुदे पि
 कुमुत्प्रोक्तं केव्यात्मा सादरं कौ ॥ ३२ ॥ ककुदं ककुदं श्रेष्ठं यथा के राजन
 स्मृति ॥ मुकुदं पुंडरीकाक्षं नेत्रे पिपादे ॥ ३३ ॥ रे रूतौ ॥ दृष्टं तेषां पदे स्या
 त्दृष्टं तेषां पदे स्यात् ॥ संपदु तौ गुणोत्कर्षं हारं नेत्रे पिपश्यते ॥ ३४ ॥ नौ
 स्वतंत्रा स्वतंत्रा स्वरे मां सेतरं करं वेद्यं ॥ संवित्ताने प्रतिहायो संकेता
 चारनामसु ॥ ३५ ॥ संनामणे च तोषणे च क्रियाकारे च संगरे ॥ कामदा धेनु
 काया स्याद्वाचवत् कामदो ग्वरि ॥ ३६ ॥ सुनदारी च नाना यो मया दासी म ॥ ५१ ॥
 नास्ति तौ ॥ ३७ ॥ एकपदं न वेत्ता लेख्यं दद्यात्मेकमेकपदं पि ॥ चतुष्पदं स्त्री
 करणं गवाश्चादिषु शुभं पि ॥ न वेत्ति सुपदानि ख्यातिरोगं जनेषु च ॥

प्रोक्ता विष्णुपदी गंगा संक्रांतिहारका पुत्र ॥ न वेत्ति न पदो देशे जने न पदो पि
 च ॥ प्रियंवदः प्रियं वाचि उवाच्यं वत् ॥ अनवादं सुनिदायामासा विश्रं न
 यो पि च ॥ परिवादः कलं के स्यात् वीणा वादनं वसुनि ॥ समर्थाः समी
 पे स्यान्मर्था दासहिते पि च ॥ पुटं नेत्रे नदी वक्त्रे पत्तना तोययोरपि ॥ अ
 ष्ठापदं स्यात्कसारिणं फलं के पि च ॥ अष्टापदं श्वरं नेत्रं चंद्रमायां च मर्क
 टे ॥ मेघना सुवरुणो रावणस्य सुते पि च ॥ माहानादं कुजरे स्यात्तं
 र्धुकाष्टे शयानके ॥ ४३ ॥ न वेत्ति कनकं पंकजं कुमुदे पि च ॥ विश
 रं बुधे धृष्टे निमदीरणं मंथयोः ॥ ४४ ॥ विमर्दातिष्ठे स्यात्ताद्यो
 न्यार्नयकं प्रियो ॥ मुचुकुंदो दुर्मुदे स्यात्तं मुनिदैत्यविशेषयोः ॥ ४५ ॥
 कुरुवंदं सुसुप्तायां कल्पावधी हि जेदयो ॥ दिगुलेषु करणे च मुकु
 रे पि समीरित ॥ ४६ ॥ अतिस्थं दोतिवदो स्यादाश्वेहिगदे पि च ॥ कडुक

दंविंदुसिन्धौ शृंगवेरसौ नयो ॥४१॥ तमोदुग्धिं धकेषु प्रतिपत्तिपि संविदे ॥
 शतहृदा नवेद्वेजे सोमिस्त्रा च कीर्तिता ॥४२॥ दपं सदस्त्रपादः करुडे मातं डेय
 जपुरुषो नवेदुपनिषधमेवेदीते पिरुस्येपि ॥४३॥ इति दान्तः ॥ धदि। राधो
 वै शाखमासि स्यादाधा गोयां च विष्कता ॥ विष्कुको ता ललोको अचिच
 नेदे च धनिना ॥१॥ गाध छागे च लि सा यां व्याधो मृगयुदयो ॥ मेधकृते
 धियां मेधामेधिः स्याच्चलदारुणि ॥१॥ शुभुधः कवोरौ हि गोये मिधमालस्य निध
 यो ॥ तथा चितानि सहेये ॥ नधमुधबद्धयोः धासिधो वाद्यादिषु ख्यातः सिद्धा
 स्युर्देवयोनिषु ॥ निनेप्रसिद्धे नित्यं यत्रे पादमानमदीपयतयोः धा ॥ रुद्धं त्वति
 समुदे स्या संयं नजे वा स्यवत ॥ रुद्धं च शैलते सरिजिनसूदेषु नेद्यवत ॥५॥ ॥५॥
 विदं स्याद्देधिते हिते सादृश्येपि निगद्यते ॥ बुद्धे जिने परे च सौम्येपि बुद्धिते
 पि च ॥६॥ अर्द्धरवंडे समो रौर्द्ध लघो मृगयु कोत्तिणे ॥ अंधस्यात्तिमिरे

दृष्टिहीने धसमुदाहृतः ॥१॥ गाधो गंधक आमोरे लेखो सबंधिगर्वयो ॥ स्कंधः प्र
 कोडे काये च बाहुमूलयोः ॥२॥ समीहने पया अपि बंधस्त्राधौ च बंधने ॥
 दग्धं कवेष्टे न्यवदुग्धस्थितार्कदिशि दर्शिता ॥३॥ दिग्धं विषक्ते बाणे स्या
 तस्मिन्नेति से गिरत्यपि ॥ दुग्धप्रपूरिते हीरे उग्धः सुंदरमूढये ॥४॥ मधुही
 द्रेजले हीरे मद्ये पुष्परसे मधु ॥ दैत्ये चैदेव संते च ॥ जीवा शाके मधुद्रुमे ॥
 ॥५॥ विधुः शशां के कपूरे हरी के शपिराक्तसे ॥ साधु वंदुषिके वारौ सज
 ने चानि चेयवत ॥६॥ सिंधुः समुद्रे नद्यां च देशे ने देतदा नयो ॥ बंधु बंधक
 पृथे स्यात्तबंधुना तरि बांधवो ॥७॥ अधिमानसपीडायां प्रत्यशायां च ब
 धने ॥ यस्य न व्याप्य धिष्टाने व्याधिरामय वाच्यो ॥८॥ दधिहीरोतरा वस्तु
 नावे श्री वासवासयो ॥ विधिर्विधाने नियतौ विधिकाले विधातरि ॥९॥
 अधिः समाधिने दे स्यात्त बोधिपिण्डपादये ॥ संधिने दे सुरंगा यां नरो

घटनेपि च ॥१६॥ अक्षिसामुद्रसरसी सिधिरिचि यो गयो ॥ वदिरानदने वसे
 वदनेपि कलांतरे ॥१७॥ दोग्धाघोपालके वसे कवर्थाप जविनि ॥ विधागज
 ये बुधौ च प्रकारे चेतने विधौ ॥ गंधाशालनिहा कायो श्रद्धाश्रद्धाप्रकाशयो ॥
 अस्यार्द्धा संवर्षण साम्ये स्यद्भि क्रमसमसन्वितौ ॥ वधूः स्तुमान वोठास्त्री ना
 यस्मि क्रां गना पुत्रा ॥ सद्यां च सारिकायां च स्तनः बुधगुदोपि च ॥१८॥ धनिः विव
 धो निवधश्चापि पयाहा वार्यना सयो ॥ विबुधः पंडिते देवे संवाधः संकरे न गो ॥
 निवधः कठिने देरो तद्राजे पि नगांतरे ॥ सरोधो रो रने तोये जिरो धनारयो ॥ उ
 सेधश्चो द्वाये काये उर्विधो उर्गे ते खलो ॥ विश्वो नुद्धे त्वर्चेशांत विश्वस्तयोऽपि
 न्यग्रधो न्यासवदयो न्यग्रोधश्च मि तरो ॥ न्यग्रधी च सत्रदौ वर्मित कूर्योरपि ॥१९॥
 आनंदं बद्धमात्रे स्यादानंदं मरुजादिके ॥ आविधो शौर्या च विज्ञेयः कुटे वप
 राहते ॥ कबंधं सलिले प्रोक्ते अपमूर्द्धक ये वरे ॥ कबंधं स्तररेर हो विशेषे

विधोऽस्मत् ॥ सुगंधि स्यादिरुगंधे सुगंधि हरिषालुके ॥ उपाधिधमचितायां कै तनेपि वि
 चविधुं उदे ॥ आवंधो दृढबंधे स्यात्प्रमालं करयोरपि ॥ निबंधो ग्रंथविधुं तो साम
 दामविशेषणे ॥ कुटे वया एतेपि स्यादुपाधिर्यजक्रयो ॥ अरिधियति यतरो ॥
 शाखायामुपसूर्यके ॥ अवधिससने स्यात्सीमनी काले बलेपि च ॥ समाधिनिघ
 ने स्ताने नीवा कोचममर्चने ॥ सन्निधिः सन्निधानेपि न वेदिद्रियगोचरे ॥ संसधिः
 सरजे सिंधौ महीयाय मतिस्मृता ॥२०॥ प्रणधि श्रेया म्यायां वीरुधि पटशाख
 ये ॥ मागधि धिपिष्यलीयुष्यामगिधो मगधो युवे ॥२१॥ वैश्यजः क्षत्रियापुत्रे
 शुकजीरकबंधिने ॥ धवाणा अवरोधस्तिरोधने श्रुद्धांतेरा जवे श्मनि ॥२२॥
 महौषधं शं शृंगवेरे विशायां लश्रुजेपि च ॥ पिरि व्याधौ वेतसे स्या ॥ पारि व्या
 धो दुमो त्यलो ॥२३॥ अवचबं मयूरे स्यादाक्रांते च वैर्वधितो ॥ समुद्रः सद्रूपोपि च
 डितमन्यदृष्टयो ॥२४॥ अनिरुद्ध उखानाये चरे वान्यगले न्यवत ॥ अनुब
 धं प्रतत्या देहो पो त्या देवि न स्वरे ॥२५॥ मुख्या नुयाधि विशि शौ प्रवृत्तस्यानु

तने॥ अतुबंधी च वहिष्कायां रक्षाया मपि कथ्यते॥ ३८॥ कालस्कंधस्तमा लया
 त्तिंडके जीवकद्रुमे॥ आशाबंधः समाश्वासे तथा मकटकवासके॥ ३९॥
 सबंधुरदिहेयो निर्देशे च द्विजमनो॥ उग्रगंधाजमोदायां बाबाष्ठिकिकौ
 षधौ॥ ४०॥ निरुगंधावायां च शिशुराजिकयोरपि॥ रतुगंधाकौ कीला
 ख्ये क्रौष्टाकासे च गोक्षुरे॥ ४१॥ रत्नगंधाचित्रकोले रुकात्येकलासे च
 लरुते॥ उपलब्धिर्मतो प्रोक्तास्तानेवापि प्रयुज्यते॥ ४२॥ धयो॥ ५॥ योजन
 गंधाकस्त्यासीतायां व्यासमातरि॥ ४३॥ इति धातवर्गः॥ नदि॥ ५॥ नः यूयं न
 पपत्यौ धनं गोधनवित्तयो॥ ४४॥ जिनस्यादधि वृद्धे च बुद्धे वा ह जित्विरो जने मो
 के महर्षौ काव्यरलोके च पामरे॥ जनीसीमंतिनिधोरुत्पत्तौ च जनिमता॥ ४५॥
 धनं स्यात्कास्यता॥ वादिवाद्यमध्यमवचयो॥ धनं सां द्रेढे दार्थ्यं विस्वा॥ ४६॥
 रलोहमुहरो॥ ४७॥ मेघमुखकपोश्चापिवनकाननतीरयो॥ प्रवासे

निलये वापि वनं प्रश्रवणे पि च॥ ४८॥ वानं शुकपशुकैकटके सेवनकर्मणि
 जलसंघववातोर्मिसूरगागति सारने॥ ४९॥ दानं गजमरे न्याये पालन स्तेर
 श्रुद्धिषु॥ मानं प्रमाप्रस्थादौ मानं श्रितौ नते सहे॥ ५०॥ यानं गतौ वाहने पि
 यानपित्तौ चरुणे॥ स्थानं स्निग्धे प्रतिधाने घनसालस्ययोरपि॥ ५१॥ स्थानं
 स्थितौ च सादृश्ये सनिशा वस्तुकारा यो॥ युक्तार्थे कर्मार्थे च स्थाने स्था
 दव्यये पुनः॥ ५२॥ श्रूयं वाच्यवडुद्धते सूने प्रसवपुष्ययो॥ सूनापुत्रां व
 धस्यां ने गलश्रुडिकयोरपि॥ ५३॥ ऊनं हिने रणे घोरे सूने किरणसूर्ययो॥
 मीने राशये तरे मशैशी नोजसूर्ययो॥ ५४॥ चीनो मृगांतरे न वृद्धिरे
 शांश्रुकोतरे॥ हिनो गृह्यो न यो न्यूनयोरपि किर्तितं॥ ५५॥ सुखं श्रुतौ
 समस्ते शुरस्तश्चक्रकचंडयो॥ वेस्तस्यादेतने मूल्ये वसनद्रव्ययोरपि
 ५६॥ स्वप्नः सुप्तः स्य विज्ञाने स्वप्नः स्वापे च दर्शने॥ बुधुशिफायां रुद्धे च रत्ने

हेमलविधि॥१३॥ नमो बंदिनिरुपणे विवस्नेवनिधेयवत्॥ लमराशुदये
 लमसक्तलजितयो ल२२ पि॥१४॥ वनरहकादितयो स्यादन्ननक्ततुक्तयो॥
 निममन्यार्थवचने संगदेदारिते स्फुटे॥१५॥ विलं स्थाने स्थिते लवेष्टि नंति
 नेच वाच्यवत्॥ विना मृतायां पुश्व्यां नमंति नेच सूरणे॥१६॥ चिह्नं धंने
 पताकायां धमं विते पराक्रमे॥ धनुसं हापिया लात्रे राशिते देरा रासने॥१७॥
 तनुकाये रुशे चाल्ये विरले पिच वाच्यवत्॥ हनु प्रदरेणे मृत्यु कपालाव
 यवे यवे गदे॥१८॥ हनु रुह विल्लासिन्यां सनु यत्रे तुजे रवौ॥ सानु श्रंगे तुम
 र्ज्यायां य ध्ववे वने॥१९॥ दाउ दारि विक्राते नातु किरुण सूर्ययो॥ धनु स
 मुदे नद्यां च धुनी श्येन सिते स्वगे॥२०॥ सुनी यती गुदी धवि चाला गस्तिकि ॥५५॥
 श्रुके॥ ज्यानिर्हानौ प्रवत्तां च योनि स्यादरेणे नगे॥२१॥ ज्योत्स्ना पदो लियं
 स्या ज्योत्स्ना श्रुक विना वसौ॥ ज्योत्स्ना सचंद्रन सत्र रात्रौ च द्रताय पिचा॥२२॥

शस्त्रा मृता तु जगज्ज्वा मेलाय एषो च कथ्यते॥ मस्त्रा तु वरिकायां स्यात्तस्त्रा
 यासह श्येते॥ दीना सुषिकयोषायां दुर्गते कातरे न्यवत्॥ धाना अष्टयवे त्रौ
 ताधम्या के लिन बोद्धि दि॥२३॥ नत्रि॥ अवने र हणे प्रातौ जवनं नावये म
 नो॥ तुवनं विष्टपेलो के सलिले पिविय व्यापि॥२४॥ व्यसनं य-ऊने स्थाने
 सोमनिर्हने पिबु॥ अयनं यथि नातो स्यादुरसि एतौ गतो॥२५॥ जयने स्या
 चुरंगादि सन्नाहे विये पिच॥ शयनं सुरते निद्रा शय्ययोर पिना भिते॥२६॥
 शयनं शांतिवधयो॥ शमनं श्राद्धदेवते॥ रशनं कवचे दंते दशनं शिर
 रे पिच॥२७॥ जघनं नस्त्रिया श्रोणि पुरो नागे कटी रके॥ तपनं स्तरणे
 तापे नध्वाते नर कातरे॥२८॥ रसनं सुदने स्थाने रसना को ति जिह्वये॥
 रसनं चापिरास्त्रायां वसनं स्त्रादने श्रुके॥२९॥ हसनं उस्मते हासे गार
 धान्यां हसं त्यपि॥ स्वस्तना मारुते श्वासे श्वसतो मदन दुमे॥३०॥ क

रनेमदनेपापेसैनंमदिजले॥मदनस्मरवृत्तेरेवसंदुमसिद्धके॥३१॥दह
 नःश्चित्रकेवहो नध्वाते दुष्टचेष्टिते॥गहगहरेचदुखेपिपेनेकसितेपि॥
 ३३॥स्तननंधनिमात्रेस्यात्कैरनेधनगर्जिते॥निधनंस्यात्कुलेनारोप्र
 धनंदारणारणे॥३४॥पवनारव्याकुलालस्यपाकस्थानेपिमारुते॥निपा
 पापायवपनंबीजधानेपिमुंडने॥३५॥मदनःकुसुमेवीरेवमनवदने
 दने॥स्यादाहृतौचपनंनंबंधेचोपरनोमये॥३६॥कमनःकामुकेकामे
 निरुपेशोकपादये॥धनमदोयनलेनास्त्राधापककूरयोस्मृतः॥३७॥
 धमनीउहरिद्रायांकंधराशिरयोरपि॥मलनःपटःवासेस्यात्तमले
 मलनंमते॥३८॥चलनंकपनेकमेलेनकपनौ॥चलनीवस्त्रवच्चा ॥५६॥
 पाचारिते॥देपिकपि॥सेवसकरणेसेकेनोकासेवनजनाजने॥सेव
 नरुरणेसेकेनोकासेवनजनासने॥सेवनसीवनीपश्यासन्मानकुलेषु
 के॥४०॥समानोससमेकेषुसमानोनातिमारुते॥शोभनोग्रहनेद

योगेस्यात्शोभनंसुदरेनवत॥४१॥शासनंराजदतोव्यलेखतोशास्त्रस्तिषु॥वा
 सनंवसनेज्ञानेचधूपने॥४२॥आसनंदिरदस्केषिडेयात्रानिवर्तते॥आसनीय
 एववीथ्यास्यादासनेजीवकद्रु॥४३॥स्पर्शनोमारुतेस्पर्शदिनयोस्पर्शनंमते॥द
 र्शनंनयनंस्वप्नबुद्धिधर्मोपलब्धिषु॥४४॥शास्त्रदर्पणयोश्चापिदर्शनंराम
 णि॥पिशुनंऊंऊंमेरेश्वरेवकेत्यनिधेयवत॥४५॥मिशुकनःपिवस्त्रेचस्यका
 पापिनामकाशऊंनंचश्रुताशानिमित्तेराऊंनःखगे॥४६॥मिशुनोरशि
 नेरेस्यात्मिशुनंदपतीयुगे॥तवूनंपंचलेयूनिस्त्रियाचतलुनीविडु॥४७॥
 तलीनंविरेलेस्त्रोकेस्वप्नेपितलंमते॥मलिनंदूषितलेस्त्रुतुमन्यामलिन्यापि॥४८॥
 कठिनंनिदरेस्त्राव्याशकशयागुडस्यपिडु॥वटिनाखडिकायांउकटीनिउप्र
 युज्यते॥४९॥पीतनेहरितालेस्यात्ऊंऊंमेवितदारुणि॥आम्नातकेपित
 नश्चमिशुनंसंगमेतरे॥५०॥केतनंलोढनेकायेगेरेचोपनिमंत्रिणे॥वर्दनंलेकु

केनीलठदंनचमनेमनं॥५१॥छेदंनंछकेनेनेदेछेदंनंपरुयो॥तोदनव्ययनेतो
 त्रोटदंनंक्रंदनेश्रुति॥५२॥अपनंउगुदेप्रोक्तंअपानस्तेस्यपिरुते॥निपाने
 दोहपात्रेस्यादाहवेपात्रेस्यादाहवेपानकर्मणि॥५३॥संतानंसेततौगो
 त्रस्यादपत्येसूरदुमे॥वितानोयज्ञविस्तारेनौचेषुक्रुडकर्मणि॥५४॥व
 तनेदावसरयोवितानंउछमंदपो॥उत्तानंस्यादगंजिरतथासुप्तोन्मुख
 यवत॥५५॥आदानंग्रहणेविधातुअलंकारेचवाचिनो॥निदानंका
 रणे रोगनिर्णयेवसदामनि॥५६॥उद्यानंवननेदेस्यात्रिसृतेपिप्रयोज
 ने॥अस्त्रानोरुटिकोत्रेदेवाच्यववनिमलेस्तता॥५७॥युक्तानंस्त्रैरक
 रणेविरोधाचरणेपिचाउत्थानमुद्यमेतत्रेयुक्तानंपौरुषेरणे॥५८॥अनो
 द्यमहर्षेछमजवेगेपिकिर्जिते॥संस्थानमान्तौमृत्योसंनिवेशेचउप
 ये॥६०॥भावनेप्रगमेश्रुदौपृक्षिपण्याधाननी॥पावनंउजलेरुछेयाचका
 ध्यास्योविदुः॥६१॥पावनंसिद्धकेवदौप्रापश्चिचपावनं॥वाच्यवत्यापि

के१

१६

पितरिहरितकाचपावनी॥६२॥वामनोऽकोष्ठवैकुंठखर्वेदरुणिणदिगाजे॥स्थाप
 नंस्यात्सुसवनेसमाधौरोषणेपिच॥६३॥यापनंवर्ततेकालेक्षयेनिरसनेपिच
 युजानसारथौप्रिविबुधानपंडितेगुरौ॥६४॥रशानंज्यातिषिप्रोक्तंरशानं
 विरोचने॥जवनोदेशनेदेस्यादेगवेगाधिकाश्रयो॥६५॥जवनोषधिनेदेस्या
 द्वाच्यवदेगिनिस्मृतः॥जीवनंवर्ततेनारेपुत्रजीवेचजीवनंजीवनीजीवना
 चेतिजीवतीमोदयोक्रमात्॥दैवंनव्यवहारेस्यात्जीगिणाक्रीडयोरपि॥
 अक्षेषुदेवनःप्रोक्तोमेहनंमूत्रशिश्रयो॥तैमनंयजनेकेदेतेमनिचुल्लिका
 तरे॥सावनोयज्ञकर्मयज्ञमानप्रयोतसो॥विज्ञानंकारणेज्ञानंप्रज्ञानंला
 छनेधियो॥हायनोर्ध्विषवर्षेचब्रीहिनेदेचहायनं॥फाल्गुनस्तुतयस्येस्या
 तपूणिमायांउफाल्गुनी॥फाल्गुनकथितःपार्थेनरीजेककुजेपिच॥वेष्टनं
 कर्णकृत्यांउउष्णीषेपरिचारणे॥गोस्तनोहरिनेदेस्यात्तद्वाहायांगोस्तन

तिच॥ कर्त्तनं कल्पते कस्तौ सज्जनं यांच कल्पने॥११॥ कर्त्तनं छेदने प्राहु नारि नाव
 लसेवने॥ लंबनं तलवासे स्यात्क्रमणे लवने पिच॥१३॥ मंडनं स्यादलंकारे
 ॥ लंकरिस्तु निवाच्य वत्॥ नंडनं कवचने युद्धे खरिती कारे पिचर्त्तते॥१४॥ मुंडनं
 पवने त्राणे हि उ नं लेखने तरे॥ अंगनं प्रांगणे पाने कामि व्यामंग नाम ता॥१५॥
 गंधनं सूचने सादे सिंसने च प्रकाशने॥ नंदनं वासवोद्याने नंदनो हर्षके सु
 तो॥१६॥ स्पर्शनं स्तौ स्तुतौ निरे स्पर्शनं स्तिरि सरये॥ क्रंदनं रोदने काने चंदनं मलयो
 द्वे॥१७॥ चंदनं कपिने दे स्यात्त नदी ने दे पिचंदनी॥ वर्द्धनं छेदने वृद्धो वारिधा
 न्या च वर्द्धनी॥१८॥ अंजनं ने मने चिह्नं रम शुण्य वये वे पिचा॥ रंजनं नो राजनं रंजनं र
 क्त चंदने॥१९॥ गुडारो च नि कानि लिपं जिष्णु सुरंजनी॥ अंजनं कर्त्तुं प्रोक्तं सेवे
 चरसोजने॥२०॥ अंजनो दिपा जे ज्येष्ठं ध्यामं जना प्यति स्त्रियां॥ अंजनी लेपना
 या स्यात्त गंजनं सुरसौ न के॥२१॥ विषदिग्धे पचो मांसे गृचने च प्रकीर्त्तितं॥

॥५८॥

लेखने छेदने सूर्ये विपिजा सेव सेवने॥२२॥ योजनं उ च उः क्रोश्या योगे च परमा
 लनि॥ गजनं वि अन्न को पे वजनं यागदिसया॥२३॥ मार्जनं कथितं शुद्धौ मार्ज
 नो लोदशोखिनि॥ सज्जनो वाच्य व साधौ सज्जनं घट गुलके॥२४॥ सज्जना क
 ना यो उ ज्ञा ज न योग्य पात्रयो॥ अजुनः क उ जे पार्थ का क्ति वीर्य मयूरयो॥२५॥
 माजरे क सुरे च स्यादजुनो ध वले न्य वत्॥ अजुनः उ नृणे ने त्र गदे वा अजुनी ग
 वि॥२६॥ उषायां करतौ नद्यो उ हि न्या मपि च क चित्ता॥ वजिनं क ल्मखे के रो व
 जिनः कृटिले न्य वत्॥२७॥ लोसनं लहिलोता मिबंधनं वध वधयो॥ जगदुरमे
 जातौ च व चे उं उं वा ऊ विप्रयो॥२८॥ प्रसूनं वाच्य व ज्ञाते प्रसूनं फल पु
 ष्ययो॥ कानी कः क न्य का जात न मे व्या सकर्षयो॥२९॥ काननं विपिने ह्ये
 पर मे पि मुखे पिचा॥ काचनं हे मि किं ज ल्के हरि दाया उ काचनी॥३०॥ ऊ
 च काच ना जने गोल के चा यशः कनि॥ सौ बले करणे खगो॥ रो व नोर क्त कः क्क रे

राचनोक्तुशाल्मकौ ॥ ८॥ मांगव्येपिचगोपितौजापितैरोचनि वि॥ रस्त्रियस
 नस्तुश्रुने॥ राक्तौपानस्त्रिमयादिषु॥ देवादिष्टफलेयापेविपक्तौनिष्पलोषमे॥
 उदनाथरावर्तेमरुसमविशेषमे॥ ९॥ उदानः सुकुमेचुव्याविलमामध्यनम
 यो॥ संधानंस्यादनिषवेनयासंघट्टनेपिच॥ १०॥ राधनंसाधनेप्रोद्योराधा
 नंतोषणेपिचा॥ राधनिर्वृत्तौमेहसैम्येसिंधौवधेगती॥ ११॥ उपायेमनसेस्का
 रेदीपनेपगमेधने॥ प्राधानंस्यान्महामायेप्रकृतौपरमात्मनि॥ १२॥ प्रजा
 पोचप्रधानंस्यात्तत्कलेउसरोत्तमे॥ ग्रामानोग्रामसेनूतेग्रामिनःश्रुनिषा
 सवे॥ १३॥ कौयिकविहंगारिपश्रुनांसंगरेपिच॥ कौपीनंरकार्येचगुह्येकवी
 र्यप्रदेशयो॥ १४॥ विक्किनोजयाजीलेशीलेचाद्रोचवाचवरा॥ नमोन्नसूय ॥ १५॥
 वक्रिदुबुद्धरांकरविकुषु॥ विखवाख्यशिरिषेस्यात्रिवतामउतयोरपि॥ शिखिव
 क्रौवृषेकेकिशकेरेउग्रदेडुमे॥ १६॥ केचित्तुउटयोश्चापिशिखिवूडाचिते

न्यवत॥ आपन्नसविपन्नौस्यात्प्राप्तोवाच्यवरीरित॥ १७॥ विपन्नकथिते
 नष्टेविपन्नेश्चतुर्जंगमे॥ विविन्नसमालेखेविनक्तेकुटिलेन्यवत॥ १८॥ सं
 पन्नंसाधितेप्रोक्तंपतिसहितेन्यवत॥ शाखीस्यापदपेदेउरुस्कारव्यज
 नेपिच॥ १९॥ खड्गीखड्गायुधेगडेश्रुगितागदुमादिषु॥ सारितुरंगमात
 गरथारोहेषुकथ्यते॥ दीपत्रिश्रेय्येरथेकांडेखगदुरथिकादुषु॥ वज्री
 शशैराक्रौवाजिबाणश्चपक्षिषु॥ २०॥ चक्रिकुत्वालवैजंठकोकहिग्रा
 मजालिषु॥ धन्विधनुर्दरेपार्थविधग्धैऊनेडुमे॥ २१॥ ततिस्यात्यंडितेयो
 ज्येपाशियाशधरेसमौ॥ नंदिनिहरप्रतीहारेगर्दनाडेवज्रदुमे॥ २२॥ नंदि
 नीतुनतांदायंघेसुरसरित्यपि॥ छंदनोलेवधेनिविष्ठदनवमनेमते॥ २३॥
 छंदनेकर्त्तृदेछंदनेपन्नपक्षयो॥ तोरनं व्यथनेतोत्रोरोरंक्रंदनंक्रंदने
 श्रुति॥ २४॥ आपन्ननुगुदेप्रोक्तं आपन्नस्तस्यमारुते॥ सेवानंसेतोत्रोत्रे

स्मारयत्येसुरदुमो॥१२॥ वितानोयतविस्तारो धौ चेषु क्रतुकर्मणि॥ वृत्तनेदा
 वस्यो वितानं उठमंदमो॥१३॥ उत्तानं स्मारगं निरे तथा सुप्तो सुखे न्यवद
 आदानं ग्रहणे विद्यादत्तं करे वाजिनो॥१४॥ निदानं कारणे रोगतिलपे
 वसरा मनि॥ उद्यानं वननेदो स्मृतिस्तपेपि प्रयोजने॥१५॥ हलिबलेषा के स्या
 त अली व अक नृगयो॥ वणी स्यात्ते स्वके चित्र करे पिब्रन चारिणि॥१६॥
 शिल्पि उवाच वक्तारौ नखिवायांच शिल्पिनि॥१७॥ कामां स्यान्नामुके च न
 वा केयारापि चंते च॥ गौमिनुपासके केरौ वाच स्मृतिप्रदौ॥ वमफल कपा लो
 स्याद्दमं नृगुरी वा वपि॥१८॥ अथी स्याद्या च केपदे सेव केच विवादिनि॥
 स्वा मिप्रनो विराखेव॥ रागीर क्तरिंद सुके॥१९॥ धजिरो लेरये विप्रै नृजंग ६०॥
 मउरंगयो॥ नोगि नृजंग मेरा तिया मण्या नपि तेपि च॥२०॥ विदिय महिपि
 वा न्यरा जयोषिति नोगिति॥ युवा च वि ते गमे ना नौ प्रेन्या रुति सारसे॥२१॥

राजा प्रनौष्टे ये चंद्रेय हे रुत्रीय वैश्ययो॥ अधा वर्मनि संस्थाने सास्त्र वे
 स्कंध कालयो॥२२॥ धन्य जागते दे शे स्यात् धनुश्चापे स्तलेपि च॥ आत्मा
 देहे मनो ब्रह्म स्वभाव धति बुद्धिषु॥ प्रसन्नै वाययो यावा प्रस्तरे जवरे गिरौ॥
 ब्रह्मा विरचिद्विजयोः रुत्व द्वाः क्व योयो॥ ब्रह्मोक्तं तयो ध्यात्तवेर तानेषु
 सुरिनि॥ उक्त्तं सिते वादि वषा कर्म महेद्रयो॥ साराणो मे अष्टे नि सगबव
 उभवे शास्त्रिनि॥ यव स्यां मथो प्रस्तापेल वृणां तरे॥ दर्श प्रतिषेदा संघो विमु वत्स
 नृनि वपि॥ नर्मस्वर्णे नारे चर्म स्यात्फल कज चयो॥ कर्म व्यापे क्रिया च वज तेन
 वदेधुनि॥ वृष्टि देहे प्रमाणे निहं दरा कारयोरपि॥ समस्यां मंदिरो नारे वद स्या
 याज दशयो॥ धाम देहे गृहे रमौ स्थाने जन्म प्रजा वयो॥२६॥ प्रिन मणि ने च से
 हेव्यो महारि विवा हाय से॥ पत्न सूत्रादि स स्तां शे किं न के नेत्र लो मनि॥
 ल सचिद्रे प्रधाने स्यादशनि विव्रतो॥ अर निः कफ रोग हस्ते स प्रकोष्ठत

तागुली॥ सेनानिकाति कैये स्या तथा सेनापतावपि॥ आदिनीयजतडीते
 कामिनितावदयो॥ बाहिनि स्यात्तरंगिण्या सेनासेनप्रनेदयो॥ वत्तनि
 तर्कपिडे स्यात्तवर्तनीमालनेयपि॥ बाधिनि बोधिमिष्य लो बाधनंगधा
 जने॥ बाणिनी नत्तकी मत्ता विदग्धवनितासूच॥ रजनीलीकाका सारि
 द्राया नीनासुन॥ नवीनीपननीपनयो मसिंधु सरोवर॥ नादि॥ का
 यानलिनी नविनं कमलेजने॥ मालिनि वत्तने दे स्यान्मालाकारस्त्रिया
 मपि॥ पंचानार्थगौर्या च मंदा कि न्या च मालिनि॥ शस्त्रिनी श्वे सुना
 के चोरपुष्पावधुतिदि॥ ३७॥ पद्मिनि स्त्री विशेषे पिसर स्याम्बुजपि॥ ६१॥
 हस्तिनि गजयोषाया नारि ने दे पिरस्तिनि॥ संधिनी उ वषा क्रांता
 कालदुग्धगवो स्मृताः॥ नदिनि द्विज नार्थार्थानाद्यो क्ता राजयोषि
 ति॥ ३८॥ रेचनंति वदंति गुजाराजनीका सुच॥ अशीधिता लम्

ल्या च्यादघः सुरेपिचा॥ ४०॥ राक्षी रासने दे च वृश्चिकी स्यां करंर॥ अ
 सिक्की स्यादवधातः पुरमेष्पस्त्रिया धनै॥ सेनाप्यधने दष्टौ गंघनो
 निनयेपिच॥ नावनाले मने ध्याने वेदने सानरवयो॥ ४१॥ कुहनादे
 नवर्षायामीष्यलौ कुहनायुधन॥ पुतनाराक्षसी ने दे हरित क्योच
 पुतना॥ वत्तनानी कीनी सेनाच मूसे न्या तरेषु च॥ चेतना संविदिप्रो
 क्ता वाच्यवत्प्राणिनि स्मृता॥ प्रसन्ना मदिराया च प्रसाद सहितेन्य
 वत्॥ लवनाडी ने दे स्यात्तजिकाया वरयोषिति॥ श्लेष्मधा कथिता म
 ल्यां कं पिष्टकफजयो॥ ॥ नच॥ महाधनं महा मूले सुवस्त्रे सिद्धी के
 पिच॥ तपोधनं विषे च गडु के प्रयोपिच॥ प्रणिधानं प्रयने च प्रवेशे
 वसमाहितौ॥ आयोधनं वधे युदे लमे माध्याययो॥ अग्निजनकुले स्या
 तौ जन्म युष्मा ऊधजे॥ स्नापसे स्या मुडी या च तपोधता॥ आराधनं तो

षणे स्यात् प्राप्नो च पने पि च ॥ न वेत्तु एष ज नो य हे रा स से स जने पि च ॥ वि
 स र्जनं परि त्यागे दाने संप्रे षणे पि च ॥ वैरो च न सु सु ग ते ब लि दे त्या क पुत्र
 ये ॥ विलो च नो ऽर्कं द र ने च द्रे प्र णा द नं द ने ॥ अ त च ने प्र ति चा प य व नो या
 ये ने पु च ॥ अ नि प नो धि रो ति यि नि दु ते य स्ते वि प डु ते ॥ प्र ति प नः स्मृ तो धि
 रे वि ज्ञा ते गी रु ते पि च ॥ स मा य नं स मा ने स्या त्मा मि क्ति रे व धे पि च ॥ न
 वे त्म ज न नं यो नौ ज न म वि प्र ज ने पि च ॥ अ ल नं वि बं धे स्या दा कां ला परि सं ख
 यो ॥ सं मूर्ध न प्र व्याप्तौ सं मूर्ध ने द्यो र पि ॥ नि र्या त नं वै र श्रु दौ दाने सा सा
 पणे म तं ॥ क थि तं ग द नां ड शि षा म्ना त क यु च ॥ अ श्व छे च स मु स्ता नं उ य मे
 चो र नि र्ग ये ॥ आ ढा द नं सं नि धा ने स्म तं व स्त्रे प्र वा र णे ॥ रा जा नं सी रे का ५२॥
 • या या पे ले कि श्रु के पि च ॥ कौ ष्ठा द नं श्रु दं सु कि कि ल्या चि चो ट क म ल
 यो ॥ उ सा द नं स मु छे खो डा द नो द र्त्त ने षु ॥ व सा द नं श्रु ल द ल म धु छ त्र

कु षा र यो ॥ वृ षा द नो स्म ता वं द वि दारि गं ध यो र पि ॥ स दा दानो न्न मा
 तं गे हे रं वे ग ध द स्ति नि ॥ अ व दान म ति वृ त्त क र्म मं उ यो र्म तं ॥ अ च र
 नं च प त्रा मे दु मे द र त्त चं द ने ॥ आ स्कं द नं ति र स्का रे णि संप्रे णे पि पि च ॥
 स वे द नं स मा लो चे व शी का रे प्र कि र्त्ति तं ॥ वि ह ड नं सु हिं सा यां म द ने वि ह
 ब ने ॥ ज ला ट नो लो द ष्ट ज लो का यां ज ला ट नी ॥ प्र स्फो द ट नं न वे त्म र्च ता ट
 ने च प्र का श ने ॥ उ त्या त नं स मु त्यं चो र यो ध ज म ने स्म तं ॥ उ द नं चो ल त ने
 प्प या व त्तौ विले प ने ॥ स मा दानं स मि चि ते ग्र णे नि क क र्म णि ॥ सं य
 म ने व ति पू र्वा सं य म नी य म स्य च ॥ नि रा म नं श्रु तो र षौ द ष्ठा लो चि
 नि रा म नं ॥ प्र ति मा नं प्र ति षा यां ग ज दं ता त रा ल यो ॥ अ नि मा नं स्म ते
 हा ने ग र्वे प्र ण वं सि यो ॥ अ धि स्त्वा नं पुरे च के प्र ना वे ध्या स ने पि च ॥
 न वे डु द य नो व स रा जे ग स्त्व मु ना व पि ॥ व ध मा नं प्र श्र ने हे रा रा

वैरंडुविष्णु॥ मात्मा धनश्चित्र सप्रेमा लुधा नीले तांतरे॥ प्रति यव सु
 संस्कारे विस्सायां ग्रहणे पिना॥ ३॥ विहन न विघा ते स्या त्पि न ने उज
 धूल जे॥ संवाहनं वाहने पिना रादे रंग मर्दने॥ उदाहनं वसिते स्या द्रव्या
 मुदाहना मता॥ महासे नो विशाखे स्या म्महासे न्यय ता वयि॥ रसाय
 न विडंगे पिराज व्याधि जिहोषे॥ रासा दानं राजे विपयि॥ मयने॥ कात्याय
 नो वररु बौगो यो कात्यायनि मता॥ ७॥ काषाय वस्त्र विघ वाहन रत्या माप्यता॥
 सुदर्शनो हरे श्चक्र मराव त्या सुदर्शने॥ आजायामौषधि ने दे मे रु ह ध्या सुदर्श
 नि र्त्त सने खला कारे ल त के व स मायने॥ परि डे दे स मा सौ च समाधाने प्रया
 पणे॥ अ न्या सने स्नेह व स्ना नु पा स्ना नु शो चने॥ उपा सने रा रा न्या से शु
 श्रूषा यो च हि सने॥ निर सने नि रा से स्या त व धे निष्ठ वने पि च॥ नि
 र्वासने हि सने च न ग रा दे र्ब हि च नौ॥ आवे शने शि ल्यि ग्रहे नू ता वे

५३॥

शप्रवेशयो॥ सार सने मेखला या उर स्त्रि च त लु त्रि प्रह सने च वे द्रं गे प्र हा सा
 हे प योर पि॥ वरा सने वा स दने श्रू ला पार पार यो॥ ब ना धनो घात क म म च
 दति नोति रंतरे॥ वा स वं ध का ष यो॥ यो ना त नः शा त कं स वै रि णि॥ १॥ शिवे
 पि च ण म ति यौ सु नि श्रु ते॥ सु वा स नौ व स रा जे प्रा स दे म त रे च्छ ने॥ वि
 स्माप ना ख्या ऊ ह के ग ध व न ग रे स्म रे॥ सु क र्मा गि ह यो गे स्या त सु क र्मा दे व
 शि ल्यि नि॥ पु त्रा मा ख्या ति गु द ज री र्ब को शि क यो र पि॥ द्वि ज मा द श ने वि
 प्रे च्छु ता त्मा यु ग ले वि धौ॥ अ र्य मा स य न ता नां सूर्ये च पि च दे व ते॥ सु दा ता
 नु ध मे वे वि श्वा घा न ल चं द्र यो॥ सु ध ना श्रौ ठ धा नु क्क सु ध ना वि श्व क र्मा ॥ ८॥
 व न श्रा गं ध मा ज रि बं क र्मा प्र यो र पि॥ परि श्रा क्त उ क र्म जे या ति के परि
 चार के॥ ९॥ अथ वा ब्र ह्म णे वे दे त्व थ परि की र्त्ति तं॥ सु य वा त्रि द रो व रो
 सं रे स ये पि प र्वा णि॥ १०॥ ल त्ता म च ल ल म च लो च न च ज वा जि षु॥ ११॥

गेप्रधनेनुषाकारमेवालधिपुद्रयो॥८॥प्रजावेस्यात्कलापीउल्लहलव
 हणयोरथा॥प्रत्याथकथितरात्रौप्रत्यथप्रतिवारिनि॥८॥केसउरगेसि
 हंपुनागेनागकेसरे॥शिरवरिपादयोःशेलेतथापामार्गगामये॥८॥अ
 गारिनुसुषेवेस्यात्क्रमुकेचमतंगजे॥विलासिनोगिनिआलेपनासिव
 लरुसो॥८॥शिरवंडितमपुरेस्यात्बालहृत्त्रियजेदमोः॥कलार्पेचार्थयु
 नायायुधिकायांशिरवंडिनि॥८॥विषयंत्विद्विषेख्यातवाच्यवत्द्विषया
 न्विते॥व्यथानुकासुरवेद्रव्यविशेषेपिसमेति॥८॥तपस्वितापसेचानु
 कंमासेचतपस्विनि॥मांसिकाकडुरोहिएयाप्योवरस्त्रीशूरवेगिनो॥८॥
 लांगलीबलजैद्वेस्यात्नालिकेरेचलांगलि॥कुंडलीवरुणेकेकिनोगिनो॥८॥
 सकुंडलो॥८॥योधकीतुकरिस्यात्नारंगेकिष्कुपवणि॥फलकिस्माद्विस
 येफलकपाणिको॥८॥कुचुकीतुजगेरिमहस्तेयोगकडुमे॥सामयोनिस्तु

५४॥

समीलेसामयोनि॥गजिविधौ॥कुंजयोनिरगस्त्वस्यादर्जुनस्यगुरावपि॥
 आमयोनिविधौकामेचित्रनानुरवगेनले॥महामुनिरगस्त्वस्याद्वन्याका
 गयोरपि॥लंघनिःकोकिलेस्यात्पारापतयमपुरयो॥मदयेस्मृतःकामेका
 लेकामुकेपिच॥मदयित्तवेसिंधौमधोस्यान्मदयित्तुच॥रुषयस्तुसुते
 हेमिद्योषयित्तुःपिकेदिजे॥स्तनयित्तुःयमोवाहेतद्वनौमृत्युरोगयो॥२०॥वि
 षरक्सेनाफलिनास्माद्विषक्सेनोजनार्हने॥देवसेनेद्रुकन्यायांसेनायांचपि
 वोकसा॥नोगाचनानायगपिष्टकरिमुदुरीकास्तयोश्च॥धनामद्विकायां
 केतव्यामपिकथ्ये॥प्रसाधिनिकंकत्तिकासिंधोर्वेषसाधिनि॥सामि
 धेनिरुचिप्रोक्तासामिधेनिसामिधायि॥सरेजिनिस्यात्कासारपत्तिनि
 पन्नयोस्तथा॥विलेपनिस्मात्तलासुवेरानायोरपि॥माडलानिकलायेस्यागं
 गायांमाडलस्त्रियां॥पयस्विनिउरोधेचांविनावयंपियस्त्रीनि॥गवारि

निद्रा रुण्याग वां बसादना श्रमे॥ सौरामि न्यसरो जे देत डि तदे दयोरपि॥ सी
नप॥ पीत चंदन मये तत्कलिकरु रिद्रयो॥ स्यादपवर्जन मोक्षपति
तागे विहाचिते॥ वरचंदन मात्मा त कालीये देव रा रुणि॥ हरिचंदन मा
ख्या त गोशिर्षे सुरपादये॥ यस्यां कंठ मेवाति सज्जन च धयतयो॥ म
धु सुदन श्रीसंज्ञा च नमरे वन मालिनि॥ स्यात्तु वंचन रां तु श्रीफवे
रो गोका कयो॥ स्यादपवर्जन मोक्षपति तागे विहायिते॥ अपवर्जन मात्मा
नपरिवर्जन रा नयो॥ महारजन सुदिष्ट रा तं न कंठ सु नयो॥ स्यात्तु
तिपादनं रा ने प्रतिपत्तौ च धो धने॥ गंध मादन इत्या कु गंध के मान तरे॥
अग्नि जे देव चं गे च सुरा यो गंध मादि॥ स्यादनु वासनं स्नेह कम धूप नयो
रपि॥ श्वेत वाहन इत्याख्या सुधा मिधनं जये॥ हरि वाहन इत्येक रा चि
पति विवस्वतो॥ अग्नि निष्ठा न रा होय विसर्जनि या हरे म तः॥ धूम के

६५॥

तन मिच्छेति दुताशन गृह जे दयो॥ स्या उपस्पर्शनं स्पर्शे स्नाच मने न योपि॥
व शिकीर्तना मापि शृंगरिटे सुरदिधि॥ शाल काय न शृंगरिटे दयि म
त्रिणि॥ स्यात्पुन लांब नाजिरव्या विधौ लोके श्वरार्क यो॥ धन देत सरस्व
त्मा तारा व स्योरपि स्म ता॥ स्यात्पुष्टि हाय नो धान्य विषेपि म तं गजे॥ जानि
या उपसंयं जे निहिते च सुसंस्तुते॥ विश्व कर्मा दिव शिल्पि जे रो ल्लर शि मधु॥
हस्त वती कुता शे स्यात्॥ दुरा चारे विधुं उदे॥ अग्न जन्मा दि जेष्टे च न्ना
वरि ब्रह्मणि स्म तः॥ श्वेत धामा कला ये वन सारा बिफे न यो॥ तिक्त प वा
उय द्वा कगड ची हल मो चिषु॥ किं कं पर्व न वे दि लो वे लो जे टे गले पि
च॥ वृष पर्वारै देत्ये शृंगारिणि कसे रुणि॥ व्योम चारि खगे देवे चि
जीवादि काज यो॥ १२॥ कार धनी का स्या कारे धनु वा द र ते पि च॥ वन मा
ली उजो विदे वारा ह्या वन मालिनि॥ प्रवाल की चु जे गे स्या चित्र मेख व

केपिच॥संप्रयोगकलाकेलौकासुकेसंप्रयोजके॥२४॥अंतेवासिनेष्टि
 धिचंडालेप्रांतगेपीच॥विघ्नकारिस्मृतोद्वोरदर्शनेपिविवातिनि॥कामवा
 रीउकमनेस्वठेकलकियो॥वृषशृंगीनवेदंशोमीरोरोठेवकोदरे॥उ
 शलादन्यनिरव्याउमासिधिवुलिकाकयो॥कुटुकाजलयेलोःकथ्यतेरा
 उलादनि॥स्याहर्लिनीलाहाहुरिशरोचनासुच॥स्त्रिरतोचफलिन्या
 चदश्यतेवरवर्तिनी॥२५॥नषट्॥॥अन्यावस्यायाश्चपचेमुनिनेदेच
 नायिते॥जायानुजीविनदेउर्गतातयोतके॥सरस्ववेधीस्यादलवेतसे
 रामेष्टपिच॥कला नादरोलंवेकलविकपिजले॥२६॥॥इतिनांतवर्गः॥
 ॥॥॥॥श्रीसरस्वत्ये॥॥श्री॥॥॥॥॥श्री॥॥॥॥॥श्री॥॥॥॥॥
 ॥अविसर्गतिपूर्वदिस्तवर्गतरपचम॥स्तुतिलिङ्गजितःश्लोकःराकुनेशु
 शुजावह॥२७॥॥शुभमस्तु॥॥॥॥॥शिवायनमः॥॥॥॥॥

६३॥

अतिनाहोनौराष्ट्रवालनृलोपिच॥शिष्यंशुवेक्रियायोगेस्वयःक्रोधेबला
 ततौ॥२८॥नपादपायांयातेर्षेत्तपोनातरुष॥त्रयालज्जाकुलठयोवर्षा
 विवरमेदसा॥२९॥पत्रि॥अपायोनिर्जलेदरोनिपापेपिस्मृतोबुधैः॥उ
 तपःस्याऊरोवाद्येतपनेछागकेबले॥उत्तपोनाजिनेयेस्यादष्टमोसेदिन
 स्पच॥३०॥कुतपोमाननेदेस्याकुटपोनिष्कुटेमुनौ॥विटपःपक्षवेखिवे
 विस्तारेस्तंबशारवयो॥३१॥उलपःस्तूराजनेदेस्याजुलिन्यामुलपमतं॥उहु
 पस्तुलवेचंद्रेप्रतापःस्वितेजसौ॥३२॥रक्तपोरहसिप्रोक्तोजलोकापांडु
 रक्तपा॥निष्कापशुनिमाजारेआध्रवित्रकपोरपि॥३३॥कारयपःस्यामुनौ
 मीननेदन्मौउकारयपीपादपःपादपीठेदोपाडुकायांचपादपा॥३४॥अ
 नूपमहिषेविद्याजलप्रायेउवाच्यवृत्त॥आवापोनांडवपनेपरिहेपाल
 बालयो॥३५॥आहेपोनसंनोत्कष्टिकायालेस्तुतिषुस्मृतः॥ऐकोक्या

६४॥

पंदि॥ रूप स्वजावे सौंदर्ये ना एके पशु संवयो॥ जं याव तौ ना कारौ आ का
 र श्लोक योरपि॥ ६॥ रिय स्या निदि ते नरे रोपो रोप एवा एयो॥ सौम्य जन
 ने रिया सूप कारे न कीर्तित॥ ७॥ दुपः सुपः स्पर्शन यो रफ पवन पुद्गयो॥ के
 प कुमक गक्तं धु मन्मा गुण वरु यो॥ ८॥ तापो नितापे दव यो तापि उचरि
 तरे॥ रापः रापय आ क्रोरो न पुसि स कर गयो॥ ९॥ स्थापः स्पर्शानु तानि द्रा
 रापना ज्ञान मात्र के॥ नीपो धूली कंद वे स्या त नीला शोके न धनिनि॥ १०॥
 गोपो ग्रामो ध्वगो शाधि सत यो बध्व वे न ये॥ गोपी गोपाल महिला सारि वा
 रसिका सु च॥ ११॥ रूपो विलंबे निदा या हे ला प्रेरण ले बने॥ गर्वये ले यस्तु सु
 धा जे मना ले पने पुच॥ १२॥ तल्यं च रापनी ये स्या तल्य मट्ट कलत्र यो॥ कल्यः स्या
 त्रल पे न्या ये रास्त्रे ब्राह्म्य दिने विचौ॥ १३॥ दपो हे रा कार कसूयो वा ष्यो ने
 न जलो मलो॥ पुष्पं निका रो ऊ स्र मे स्त्री एणं च रजनी स्म तं॥ १४॥ राध्यं स्या

कशिपु र्जत्तया ठार ने च एय ग्वयो॥ १५॥ आ कल्यः कल्य ने वे रो वि कल्यो न्ना
 ति पदयो॥ कछपि वल्ल की ने रे दुलो सुद्र ग रा तरे॥ १६॥ मद्र बंध विषे रो उ क ह
 प ऊ लपी पुनः॥ विट सारिका या ऊ लायः पूति गंधे रावे पि च॥ १७॥ कलायः सह
 वे बहे नूणी रे नूयणे हरे॥ १८॥ प्राप्तरूपो बुधेर म्येय निरुपः स्वरुप वत॥ १९॥
 बडुरुपः शिव विहो धूण के सरटे स्मरे व कधूप स्त सर लद्र व रुत्रि मधुप
 यो॥ परि वाय सुप्यु सौ जल स्थाने परि छे दे॥ २०॥ उप तापः स्वर रा या स्या उता
 प गद योरपि॥ अवलेप स्तु गर्व स्या ध्वे पने उषणे पि च॥ २१॥ विप्र लापो विरो
 धो क्ता वपार्य वचने पि च॥ वृषा कपिः शिवे रुहे ज्वलने च या कपि॥ २२॥ जग
 दी पाश शं के च सहस्रो शो प्र कीर्तिता॥ परिके यो नये कंये पलायः प्रे स्वपद
 वे॥ २३॥ बीज पुष्पं मरु बके तथा मदन के पि च॥ हे म पुष्पं जपा पुष्पे चं म का
 शो क योरपि॥ २४॥ नाग प्यु पुत्रा नाग के सर चं प के॥ पिड पुष्प मशो के वाज

पायांचकुशेराये॥६॥मघपुष्पचपिडामेनारेयजलयेरपि॥नलकुपिकपगर्जे
 पुष्करियाचकप्यते॥७॥मघ॥६॥नवेचावामपुष्पस्तुचतकेतककाराये॥
 ॥इतिमोतवर्ग॥फदिः॥रेफोरवरवर्णकथितकुपितेवाच्यवत्युन॥शिफेम्
 लेतरुणास्याहुवारिनाखुरेपिचा॥६॥गुफःस्याहुफलेवाहोरलंकारचकी
 च्यते॥शिफाजटायांसरितिमासिकायांचमातरि॥यांतवर्गा॥॥मंथ॥शिव
 दि॥पूर्वास्युपूर्वजेसुस्यारमेप्राचिचवाच्यवत॥बिंबफलेबिंबिकायाःप्रति
 बिंबचमंडले॥६॥डिबःस्यादि॥झीक्रीलोरेरंडपुष्पसेननयो॥स्तंबोक्तुले
 एरिनामप्रकांडदुमेपिचा॥१०॥रां बःस्यानुसालाग्रस्तुलोहकुंडलकक्षवो॥ना
 बिनेचरवर्बस्तुस्वेसेरव्यातरेपिचा॥१॥कंबूरां बूकगतयोत्रीवामलकशंखयो॥
 जंबुसुमेरुसतिदीपदुमविशेषयो॥१॥कंबिरंशेचशंखस्यखजकायामपिगते॥
 रबीनवेस्रजाकायाफणायाभुरगस्यचा॥३॥रराकीदारुहरिद्रायादेवदारु

हरिद्रयो॥वाबीउरोननांबुधोलावाश्रीतिक्तुंबयो॥१॥बत्रि॥करंबमाऊरुहा
 वनीपेपिनिकुरंबके॥कारंबःकलहिसर्चिर्दिजिबोचुजगेखले॥५॥गजाबाकरि
 पिष्यत्यागमाकरंस्तिनापुरे॥नितंबोरोधसिस्केधेशिषरेपिकटीरके॥६॥हर
 बोविधराजेस्यात्कासारेसूर्यगर्विते॥बनबःसायकेनीपेनालिशाकेकलंयति॥
 प्रलंबोदैत्यनेरेस्यान्नासांपूरकराखयो॥प्रालंबोहारनेरेत्रिपुषेपिपयोधरे॥८॥
 गंधर्बोमगनेरेस्यात्कुस्कोकिलउरंगयो॥अतरानवस्तुलेवजायनेरेवरेपिचा॥१॥
 शोडबशीर्षवृत्तेस्याहुवारिन्याफलेपिचा॥नूजंबूररपिगोधूमविकंतफलेपिचा॥१॥
 रोवंबोन्नमरेप्रीकौवाजिनांकलेपिचा॥७॥उहस्तेक्रमेमेतकश्रुनोरपि॥रावदु
 पर्वचडवायोनागवस्यस्त्रियामपि॥राजजंबुस्तुजंबुनित्येउस्वर्जुरयोस्तना॥
 वप॥धूलीकरंबोनिपेस्यातिलिशेवरुणदुमे॥१॥गोररुजंबूगीधूमेतगो
 ररुवंडुले॥अंगारजंबूगीधूवेकापिबायफलेपिचा॥१॥इतिमोतवर्ग॥मेक॥

नः स्यात्तयूषे श्रुके च न न हने च नातिषिः॥ नूः पिय्यां स्तान मात्रे स्व नूर्वे धसि
 राङ्गिणि॥१४॥ श्रुयोगे श्रुनं हेमे नि नौ व्याज सह रु योः॥ विभुः शिवे प्र नो निते
 शं तु ब्रह्मा ह तो हरे॥१५॥ दं न सु कै त वे क ल्ये डि नौ बालि शपो तयोः॥ शं तो त्वां दे३
 तरे द ते जं बी रे न रु गो पि च॥१६॥ कुं नः स्यात् कुं न कर्णे स्प सु ते वै रया प तौ व
 टा॥ राशि ने दे द्वि पां गे च कुं नं त्रि वृ ति गु गु लो॥१७॥ कुं नी उ पा ट्वा वा रि प णा पि
 ठ र क र फ ले॥ ग र्जो नू लो न के कु ली संधी पर त स क ट के॥१८॥ जं तो ह न्वा वि का
 से च स्तं नः स्फु णा ज ट व यो॥ रे ना क र ल्य रा र सो रं नो वै ए व दं ड के॥१९॥ स ना सा
 मा नि के धू ते गो॥ ए म दि र यो र पि॥ रो ना का ति उ यो रु क्ता ह स्य प न ग व न्जु यो॥२०॥
 ना ति प्रा ण ग के रु त्रे च ना त श्च क व र्त्ति नो॥ च ना त ना गे च क व र्त्ति नि नि मि ५६॥
 षो च॥ ना ति प्र धा ने क स्तु री म दे च क ति द री त॥२१॥ न त्रि॥ कर नो म णि बंधा दि
 क नि ष्ठां ते त यो धू को॥ कर नः सर ने चा षा प दे प्रो क्तो मृ गा त रे॥२२॥ स प नः स्वर

ने दे स्यात्त रा का ह ए व नौ षि धे वृ षे॥ श्रे ष्ठा र्थे च व रा ह स्य पु ठे रं धे च क रा यो॥२३॥ स ष नि
 श्रु क र म्पा न कार स्त्रि या म पि वी ध चा॥ या शि रा ज्ञा या वृ ष न पुं ग वे वृ षे॥२४॥ व ह्न द यि
 ते ध्य नो के कु लि ना श्रे पि व ह्न न॥ उ र्ज नः क कु रे रु यो उ प्रा पि व ह्न ते पि चा॥२५॥ नि कु नः क
 पि तो दे त्वां कुं न क रा सु ते पि च॥ कुं सु नो हे म नि म रा र ज ने च क मं ड लै॥२६॥ वि ह्न नः प्र ति
 बंधे च वे द नै च प्र यु ज्य ते॥ वि श्रं नः के लि क ल रे वि श्वा से प्र ण ये व धे॥२७॥ वि ह्न नो यो ग
 ने दे स्यात् वि स्तार प्र ति प न्न यो॥ रु प कां ग प्र ने दे च बंध ने दे च यो गि ना॥२८॥ क कु नो रा
 ग ने दे पि वि णा गे र्जु न या द ये॥ आ रं न सु त्व रा मां स्मा ड्य मे ध र ष्य यो॥२९॥ सु र नि श्रु प
 के ना ति फ ल व सं ते यो॥ गं धो प ले सो र नै व्या ना त्र की मा न ने द यो॥३०॥ सु गं धो च म तो
 रु च वा च न सु र नि स्म तं॥ स ना ति स ह रो ज्ञा ता वा त्म नू र्वे ध सि स्म र॥ व र्मा नु पु न र्
 वा यो पू र्वो किं चु के पि च डुं जि दि जे ने र्यां अ रु विं डु त्रि के ध यो॥३१॥ वै द नो वा च य न्न
 त्वे वै र्ज न्म यो त रे॥ ग र्द नो गं ड ध ने दे स्या ऊ र्ज न के र वे ख रे॥३२॥ ग र्द नो ग र्द नी तु ड रे
 ग जं ड वि शे ष यो॥ क ऊ प शो ना दि शो शा स्त्रे प्र वे र्या च प क स्तु जि॥३३॥ न च॥ अ व

वं न सुवर्णे च सं न प्रारं न योरपि ॥ रातुं न सुवर्णे स्यात् रातुं नो अमारके ॥ ३५ ॥
 नोतवर्गा ॥ मे कविकं ॥ मरि वे मार माया च ॥ मानिषे धे व्ययं मता ॥ किं वि तर्के परिप्र
 श्रे हे पे नि रा प्रकारयो ॥ ३५ ॥ दम सुद मये दे कर मे द मने पि च ग मो धू त प्र ने दे स्या र प य
 लो चिते ध नि ॥ ३६ ॥ कम स्त रौ पारि जाते क्र म ॥ किं पुरु षे श्वरे ॥ न मो बु नि ग ती नो तो ऊं दा
 स्य शि व्यि यं न के ॥ ३७ ॥ हि मं सु ते उ व रै च च द ने पि हि मं वि उ ॥ र म ॥ कां ते र मा ल स्य र का
 शो क रु मे स्म रे ॥ ३८ ॥ य मो दं उ धां हे सं य मे य म ने पि च ॥ रा शी र सा ध ना पे हे नि त्य क र्म पि
 चो ध च्य ते ॥ ३९ ॥ क्र म श नो परि पा द्यो क्र म श्रु त न श्र क प यो ॥ सौ म म द उ कु ले स्या द न सो
 व स ने पि च ॥ ४० ॥ हे मं स्या न्म गे ल ह र रु ले चा करे पि च ॥ रो मा ध न ह री गै र्म क म ॥ स्या त
 रं मा न्वि ते ॥ ४१ ॥ हि ति कां त्यो रु मा प्रो को हि ने श के च धा च्य व त ॥ ४२ ॥ आ मो रो गे त दि रो पे
 मो प के उ वा च्य व त ॥ ४३ ॥ का म ॥ स्म रे सि ला वे का म रे तो नि का म यो ॥ अ य यं त्व म तु ता
 या या सु प्र ह रे व्र ते ॥ ४४ ॥ य म ॥ स्या त्मे त के व द दार के हरि ते व ने ॥ पठ दु मे प्र या ग स्य स्या म
 स्या म च वा सु लो ॥ ४५ ॥ अ न्न सू नो ग ना या च त या सौ ल तौ ष थो ॥ नि वृ ता सा रि वा

७०॥

११

इति शान्ता प्रिय गुण ॥ ४५ ॥ श्या मा नी त्या पि के श्या म म रि चे ल व र्णा ॥ त र ॥ व्या मो
 द म र के गं धे रु गे र्या मे ति धे य व त ॥ ४६ ॥ गु ल्म ॥ स्त वे ली किं व द सै न्य यो से न्य
 र रु गो ॥ गु ल्म ॥ स्या दा म ल को ल व नि का व स्त्र वे र म सु ॥ ४७ ॥ जी ल्म ॥ स्या त्या म रे रु
 रे जा लो स मी रु का रिणि ॥ म्ना म ॥ स्म रे सं व स र्ये वं दे रा श दि पू र्व क ॥ ४८ ॥ जी
 मो ल्म व त से रा नो वी रे वा पि ॥ व को र रे ॥ नौ म ॥ स्या न्न र के गारे आ मो मे द य का
 ल यो ॥ ४९ ॥ नी म क्रो धे र वौ दा सौ धू मो न ग र ने द यो ॥ य धा स या म ध न यो रि
 धा का म व सं त यो ॥ ५० ॥ तो क्त व ले तो को हरि ते च ॥ हरि यो के ॥ रु क्त उ का च ने को
 दे र मं हो मे च यो रु षे ॥ ५१ ॥ ध र्म पु र्ये य मे न्या ये रु भा वा धार यो रु गो ॥ उ य मा य
 म हि सा या वा ये चो म ति ष य पि ॥ ५२ ॥ ध र्म ॥ स्या दा त ये म्ना मे उ ल्म सै दा न सौ र पि ॥ नि
 स रु उ टि ले म दे जि ह्म त ग र या द यो ॥ ५३ ॥ सु स स्या त्के त के ध्या त्मे प्य लो सु लो
 ल्य के न्य व त ॥ नी म स्त नी य रु रु दे गा गे ये चो नि रा च रे ॥ ५४ ॥ सु स ते जो ह्यो न
 कं सु म ही रे न न स्य पि ॥ द स्म स्तु य ज मा ने स्या त दं नि चो र दु ता रा ने ॥ ५५ ॥

रामय मुविरोषे स्यात्कामदग्ने हलायुधे ॥ राघवे चासित श्वेतमनोकेषु उ
 वाच्यवत् ॥ ५६ ॥ रामागनादिगुलिनोरामवास्तुकुष्टयो ॥ वामसवे
 प्रतिपे च द्विविधे चातिसुदरे ॥ ५७ ॥ पयोधरे हरे कामविद्या दामासुति
 स्त्रियां वामिष्टुनी वडवारा सेती करनीषु च ॥ ५८ ॥ निधिसंख्यातरे बुजय
 पके विउ जाले पिय ना नागो श्रयोरपि ॥ ५९ ॥ सोम ऊवरे पितृदेवतायां
 वस्तु प्रजे देवसुधा करे च ॥ दिव्योषधिरयामलतामसीव कपूरनीरेषु च
 वानरे च ॥ ६० ॥ नृमी ॥ स्त्रियो स्नानमात्रे वामिवा तो ऊताराने ॥ रश्मिरसौ
 प्रग्रह च जामिस्वस्तु ऊले स्त्रियो ॥ ६१ ॥ नेमिस्त्रिकाया कपस्य च कोवेति
 निरादुमे ॥ नेमः काले वयोगे तत्राकारे केतवे पि च ॥ ६२ ॥ कुमिलारगे पि
 डायवेगे न गप्रकाशयो ॥ ऊकटा वस्तु सको च तरे योरपि किं किं ता ॥ ६३ ॥
 लसी आरिवसयति पनाशो नाप्रिये गुषु ॥ कामी पलाशरा लया लोहमुखा
 मुदा दुता ॥ ६४ ॥ रामा शकुफलाया च शवायामपि वापि वा गुलौ ॥ बालोड

७१॥

१२

नारतिसोमवहरी ब्रह्मरातिषु ॥ ६६ ॥ फंकंजिकापंकगडिका कंशा कनेदे
 शुचस्मृता ॥ समावर्षे समउत्थे साधौ च सदरो न्यवत् ॥ ६७ ॥ सीमाद्या वस्ति
 तो लेने मया हावे लयोरपि ॥ सुमातसी नालिकाये न्निमाना निपरकतो ॥ ६८ ॥
 मातसी हेमवती हरिशंकोर्त्तिकान्तिषु ॥ रुमासु ग्रीवदरेषु विशिष्टलवणाकरे ॥
 मत्रिउत्तमोदुग्धिकाया स्याउ हृष्टे चोत्तमोन्यवत् ॥ मध्यमः स्यात्स्वरे मध्ये मध्यदे
 शे च मध्यजे ॥ ७० ॥ व्याच्यवन्मध्यमात्तराका दृष्टरजः स्त्रियो ॥ कलिका अहार
 ठंकर मध्यगुलीषु च ॥ ७१ ॥ अधमः ऊसिने न्यने प्रामो वसरे क्रमो विक्रमः क्रान्ति
 तिमात्रे स्याद्विक्रमः शक्तिसंपदि ॥ ७२ ॥ सैक्रमः क्रमले मय्यधारि च संचार
 यंत्रके ॥ निःक्रमो बुद्धिसंपत्तो निगमिष्टा ऊले पि च ॥ ७३ ॥ आगमः शास्त्र आ
 पाने विप्रमो त्रीतिहावयो ॥ संचरमः प्राधमे पि स्यात्सैवेगादरयोरपि ॥ ७४ ॥
 विक्रमोरत्नवृक्षे पि प्रवाले पत्रवेषि च ॥ आश्रमो ब्रह्मचायादि च केषि पित
 रे पि च ॥ ७५ ॥ मत्तमश्चान्यवन्त्ये श्रेष्ठसाधो यमोरपि ॥ नियमार्थं त्रणाय
 च प्रतिज्ञायौ च मयमो ॥ ७६ ॥ निगमो वारिजे पर्यं किं देवदेवलि कथे नि

गमः स्यादपनिषदणिजोनापितेपिच। ७७ कलमोलेखनीयोरशालिकाहार
 केषुचातलिमं ऊहितल्येचं इहासेवितानके। ७८ परमस्यातुज्ञानेथय्यप
 रमपरं सावजो मस्तु दिनागसर्वष्टापतावपि। ७९ पराक्रमो विक्रमेसासा
 मध्येद्योगयोरपि। उपक्रमः स्यादुपधाचिकिसारंनविक्रमे। ८० जलगुल्मी
 जलावर्तनश्च जलचतुरे। मरुपयः स्मृतोनागनिधिसंख्यातरेषुच। ८१ मयश्चक्रपाम
 स्तीकारसमीपागमनेपिच। नक्षत्रनेमिजितांशोरवृत्ताचक्रवेद्यचित्रा। ८२ आइतिम
 तनर्ग। ग्रंथपयः। यः सर्वनानानिलयोऽज्यामोवी। मातृ नृमिषु। धारक्रिदि
 विमोदिवसेद्यो स्वगसुरवसनोः। ८३ यद्विजयोजयतेविजयजयादुर्ग
 त्रिमंथयोः। जयंतितिधिनैदोमासस्वीपथ्यासुचस्मृता। ८४ चयः सप्तद
 शकारे मूलबंधे समाहृतो। नयोनीतो दूतनेदेशयः शय्यादिपाणिषु। ८५
 लयं प्रतिनयेद्योरे प्रसाम्यतोयत्रिकस्यचामयः शिल्पिनिदेशानाकरने
 श्वनितरेपिच। ८६ लयोविलासेसस्येपेसाम्यतोयत्रिकस्यचसंयोगवर्द्ध
 दिगायेगातयेगायनेपिच। ८७ कायः सदेवतेमृत्तोमिधेनहस्वचवयोः।

७२

परमस्यात्रधानाद्योरेरेकोपितथोचतो। ७८ ऊसुमं पुष्पफलयेस्त्रीरजोनेत्ररोगयोः। ज
 तिमंराचितेप्रोक्ते सिक्ककेलवणांतरे। ७९ सुषमचारुसमयोसुषमापरमं दत्तौ। सुषीमः शि
 शिरेचारोसुषीमपत्रगांतरे। ८० पंचमोरागजेदेस्यात्पंचानामपिपूरणे। पंचमश्चतु
 रेद्वयेपंचमीपांडवस्त्रिया। ८१ गौतमः सावसिंहचमुनिज्ञदेचगौतमी। रोचिन्या
 मंबिकायांचदाडिमः करकैलयोः। ८२ गोधूमोनागरगस्याज्ञेषज्जब्रीदिज्ञेदयोः। व्याय
 मोदुर्गसंचारेव्यायामेपौरुषेअमे। ८३ विशालोमस्तुप्रतीपेस्माद्धृजंगेवरुणेश्रुनि। आम
 लकां विलोमीच विलोमंचारवृद्धके। ८४ गोलोमीश्वेतद्रव्यांषड्भ्यावारयोषितोः।
 प्रतिमादंतवर्द्धस्याजजस्यानुज्ञतावपि। ८५ मयः जवंगमः कपोनेकेनुपमः सुं
 दरेन्यवतः। सुप्रतीकस्ययोपाजानवेदनुपमापिच। ८६ अभ्यागमोतिक्वेघातेवि
 रोधात्पुनमाद्रिष्यातयामस्तुलीलस्यात्परिचक्रो जितेपिच। ८७ देउयाम
 स्तुकीनाशेदिवसेकुंनसंनवे। सावजोमस्तुदिनागसर्वष्टापतावपि। ८८
 पराक्रमो विक्रमेसासा मध्येद्योगयोरपि। उपक्रमः स्यादुपधाचिकिसारं

चिरा

नक्षत्रेदे

जि

तथा

उव

नविक्रमे ॥ २१ ॥ जलकुलो जलावर्ते कृत्वा जलवचरे महापन्नः स्मृतो नागनि
धिसंख्यां नरेषु वा ॥ २२ ॥ नपं ॥ अथुपगमः स्वीकारे समीपागमनेपि वा ॥ नस
वने निःशीतां शौरेवत्यां बध्वे क्वचित् ॥ २३ ॥ इति मां तवर्गः ॥ ग्रंथः ॥ यः
सर्वनामैर्नित्योऽयमोर्वीमा नृनिष्ठः दुरक्तिविमोक्तो दिवसेद्योः स्व
र्गसुरवर्त्मनो ॥ २४ ॥ अथि ॥ जयोजयंते विजये जया दुर्गाग्निमंथयोः ॥ ज
यंति तिथिदने दोमासखी पथ्या सुवस्मता ॥ २५ ॥ अथः समूहे प्राकारे मल
बंधे समाकृतौ ॥ नयो नीतौ द्यूतने देशयः शय्यादिपाणिषु ॥ २६ ॥ नयं प्रति
जये घोरे प्रसूने कुल्लकस्य वा मयः शिल्पिनिदेत्यानां करने श्वनितरेपि
वा ॥ २७ ॥ लयो विलासे संक्षेपे साम्ये तोर्यत्रिकस्य वा ॥ स्मयोगवैकृते गयेग
तव्ये गायनेपि वा ॥ २८ ॥ कायः सदैव ते मूत्रौ सिंघे लक्षस्वनावयोः ॥ कायो मनु
ष्ये तीर्थे पिसायः कागपराक्तयोः ॥ २९ ॥ दायो दाने यौतकादिधने सोलुठनाधि

७३॥

ते विचित्रव्यपि रद्वेदाय मादुर्मनीषिणः ॥ ३० ॥ प्रायश्चानशाने नृत्तौ तुल्यबाहुल्ययोरपि
पेयं पातव्यपयसो पेयाश्चानासच्छमदयोः ॥ ३१ ॥ स्त्रियो विवादस्य पदेति ते तदिषु रोहिते पीयुः कालेन
वौद्यकेषु यः नृद्वेदयोः ॥ ३२ ॥ मयुसुरंगवदने मृगेपिमयुरिषते मसूक्तो धेनुतौ दैत्ये मृत्यु
मरणदेवयोः ॥ ३३ ॥ दस्फस्तेन च शत्रौ च जन्मुप्राणान्ति धातुषु च न्यवनचवे वन्यावनवा
समुदयोः ॥ ३४ ॥ जन्मद्वे परिवादे मंगुगेपि च ॥ जन्मः स्याज्जनेनासामन्योत्तिनासमानयोः ॥ ३५ ॥
पाण्यपानीयके निधे प्रज्यः स्वसुरवंधयोः ॥ दायो बितीतकतरो दत्तव्ये दायमन्यवत् ॥ ३६ ॥
वीर्यशुक्ले प्रज्ञावे च तेजः सामर्थ्ययोरपि ॥ अयस्त्वा मिनिवैश्ये च कार्यदेतौ प्रयोजने ॥ ३७ ॥
स्वस्वरे तन्मिमायां तस्य स्थादोषध्वनिः शौर्यचारनरीशत्यो वयः सरवरे लययोः ॥ ३८ ॥
शुद्धं रदस्फपस्ते च गुह्यः कमवदं नयोः ॥ सेधं शैलानंतरारोग्यसोठव्येषु प्रचकते ॥ ३९ ॥
शुद्धं पुरीषमार्गेपि न वेदस्वैरपहयोः ॥ अद्या उशाखानगरेष्टवस्ते कफदीरितः ॥ ४० ॥
योग्यं प्रवीणयोगादुपिरशक्तेष्वाच्यवत् ॥ योगमृदाख्ये नृज्ययोग्यानां साक्ष्ये पिताः ॥ ४१ ॥
॥ ४२ ॥ नाग्यं शुक्तासकविधौ स्यात् शुक्लाशुक्लकर्मणि ॥ नयं सैलैपाकं बिडाख्यं ल
वरोयवद्वारेपि दृश्यते ॥ ४३ ॥ पथ्यं पजे वने ये च जउरुमविकारयोः नयं मलेषु

भवपनेयवघोष्यनाविनोः॥१४॥ कर्मरंगतरौ नव्योनव्याककार्योः॥ रिक
 रणोमयोः॥ सैवैदिवानवगकेदिवं वल्लोदिवि नवेन्यवत्॥१५॥ आमल
 क्योमतादिव्यासव्यवामप्रतापदायाः॥ मेवंप्रोक्तमुशारेचमेवादेपुनरन्य
 वत्॥१६॥ गोपोदासासुतेगोपोरक्षणीयेनिधेयवत्॥ रूपस्यादादुतस्वपरजुतेरजतेपिच
 ॥१७॥ रूपं प्रशस्तरूपेडवाच्यवसमुदीरित॥ इत्यत्राढोकरेणवाउ नवेदेत्यावत्
 रोको॥३१॥ नन्ययुक्तेचलबवेचाध्यमिदादियोग्ययोः॥ चिचंसुतकचेयेस्याञ्जि
 त्यासुतकचितावपि॥३२॥ चैयमायतनेयुदेविबेचोदशपादपेदेयोसुरेयुरायांडदेयाचंदोष
 धावपि॥३३॥ च्योदामेदुतोच्यस्यादंनानवेधमे॥ मयंचरपथेतथेकतेतदति
 चान्यवत्॥३४॥ तपोलोकाचरेसस्योनिचंडमतेध्रुवोमन्यउवेतनेबयोमा
 ल्यंमालाप्रसूनयोः॥३५॥ वल्यं प्रधानं चतौ स्यावत्यंबजकरेपिच॥ कल्यं संके
 प्रनातेचकल्योनीरोगदशयोः॥३६॥ कल्याकल्यावाचिस्यात्काकेमेचोष्टोतासंथा
 दंबयनिपिस्मृताशाल्यंशकोशरेवंशकंबिकायांचतोमरे॥३७॥ शलश्चकथितःश्वा
 विन्मदनमयोरपिऊल्यःऊलोमवेमायेऊलस्यातिदितेपिच॥३८॥ ऊल्य

१४॥

स्यात्काकसेचाष्टोलीस्तथामिषेषुचापयःप्रणालीसरितोः॥ ऊल्याजावैतिकौषधौ
 ॥३९॥ वेश्यं वेश्याश्वदेवेश्यागणिकायामुदीरिता॥ आस्यं बक्रेवक्रमधोस्त्रिहोता
 म्याचविश्रुता॥४०॥ ताम्यंतौर्यत्रिकेनाद्युमस्यशस्तेफलेगुणो॥ कस्यमध्येउरंगा
 णंकस्यमध्येकमादयोः॥४१॥ कास्यं उतेजसद्व्येवाद्यनित्यानपात्रयोः॥ मीस्या
 मीनांतरेमीनेविराटतिरव्ययादवे॥४२॥ तिथ्युषेकलोधाभ्यांतिथापुष्यव
 दिष्येते॥ दूष्यंडरुषणीयेस्यात्दूष्यंवस्त्रेवतदुद्दे॥४३॥ वीक्ष्यं उविस्मयेदश्येवी
 द्योलासकवाजिनोः॥ ताक्ष्यः स्यादश्वकणखिवृक्षेरथउरंगयोः॥४४॥ ताक्ष्यं रमांज
 नेताक्ष्येगिरुडेगरुजग्रजे॥ लक्ष्यं शरव्येसंख्यायांलक्ष्यं शुभनिमंमतः॥४५॥ या
 म्यावाच्यांनरण्यांचवाम्योगस्त्येचचंदने॥ इज्यादानेधरेचायंसिंगेचेवोगुरेम
 तः॥४६॥ ब्रुव्यापयदिनेप्रोक्तावगप्रिष्ठानयोरपि॥ शय्यातल्येशव्युंफेस्यान्तायाश
 वरीधियोः॥४७॥ कन्याऊमारिकानायेरौषधीराशिनेदयोः॥ कक्ष्याबृहतिका
 यांस्यात्कांच्यांमध्येनबंधने॥४८॥ इम्यादीनांप्रकोष्टेचक्रयंविदिष्टकार्ययोः

तस्यापि देवता ने देहस्यास्तथा दिष्टुस्मृताः ॥४२॥ वंध्या उरौ लवल्यां च विंधो याधादिने-
 दयोः । संध्या पितृ प्रसूना घोश्चिंता मयदियोरपि ॥४३॥ प्रतिज्ञायां च संध्या ने संध्या च-
 ऊसुमांतरे । ह्याया स्यादात पाचावे प्रतिबिंबार्कयोषितोः ॥४४॥ पालनोक्तो च यो-
 कांतिसहो नापंक्तिषु स्मृताः ॥४५॥ क्रिया कर्मणि चेष्टुवांसंकरणे संप्रधरणे ॥ आरं-
 भोपाया शिवा बचिकि सा निष्कृतिषु पिमाया दं ने न पायां च मायः पीतां वरे कुरे
 ॥४६॥ त्रया त्रिवेद्यां त्रितये पुर ध्या सुमता वपि य त्रिविजयो स्यात्तये पाये गौयां
 उविजया तिथो ॥४७॥ विजयं प्रणतौ प्राहुः शिवायां विनया पुनः । सत्यः शपथा
 चार काले सिद्धांत संविदोः ॥४८॥ विषयः स्यादिदिया येदि शे जनपदे पि च । गोच-
 रे च प्रबंधो यस्य ज्ञाता स तस्य च ॥४९॥ अनयो व्यसने देवे चाशु ने चापदि स्मृ-
 तः । सत्रं प्रमवाये स्यात्पृष्ठा यि बले पि च ॥५०॥ प्रणयः प्रेम्नि विश्रं ने यात्रा प्रसर-
 योरपि । लवलयं कंठरोजे स्यात्तल यं कंठरो पि च ॥५१॥ मलयो देश आरा मे शौ-
 लांशे पर्वतांतरे । तलया त्रिवृतायां स्याद्विस्मयो हुतवै गयोः ॥५२॥ प्रलयो मरु-

यः ३

१५॥

कल्यांत मूर्धनिषु प्रयुज्यते । अजयं स्यादुशीरे च पथ्याया मजया नयां ॥५३॥ निर्जये वा स-
 वत्सोक्तं हृदयं मानसोरसोः । जतु यो मुदयः पूर्वपवर्ते चोन्नता वपि ॥५४॥ प्रत्ययः शपथे रधे
 विश्वासाचारहेतुषु । प्रथितत्वे सत्तादौ चापधीतज्ञानयोरपि ॥५५॥ अत्ययो तिक्त-
 मे दंडे विनाशे दोषत्रययोः । आशयः स्यादतिप्राये पतसाधारयोरपि ॥५६॥ निका-
 यो नितये लेखे सहेता नो मुञ्चये । एकार्थता जिनि वदे । परमात्मनि चेष्यते ॥५७॥
 हे त्रियं के त्रजट्टे परदाररते पि च । अन्यदेह चिकित्सा र्हे साध्ययोगे च जानते ॥५८॥
 कषायोरसत्ते दे स्यादगरागे विलेपनो । निर्यासे च कषायोपि सुरतौ लोहिते न्यवत-
 ॥५९॥ आम्नायः संप्रदाये स्याद्वेदोऽस्यासे च संयतौ । कुलायः पट्टि नितयस्त्वनयोर्नी-
 टवत्तनः ॥६०॥ उपायसा मने दादौ उपायः स्यादुपागतौ । पर्यायस्तु प्रकारे स्यान्निर्मा-
 णे वसरे क्रमे ॥६१॥ संज्ञायः संनिवशे च संस्थाने विस्तृतौ गणे । व्यवायः सुरतं तर्धै वि-

स्त्या

बायं तेजसि स्मृतं ॥ ९२ ॥ शालेयं शतपुष्पायामाहुः शास्त्रं चोचितं शैलेयं सिंधुत
 वलेतालपण्यं च शैलेजे ॥ ९० ॥ चंचरी केतुशैलेयोगांगे योजाकवी सुते ॥ कसेरुस्व
 लुस्तेषु गंगेयमिति कथ्यते ॥ चांपेयश्च पकेस्वर्णे किंजल्के नागकेसरे ॥ ९१ ॥ का
 लेयोदैयं नेदे स्यात्कालेयं कालखंडके ॥ ९२ ॥ बालेयो गारवक्ष्यं खिरे बालहिते मृ
 दो ॥ आत्रेयो मुनि नेदे स्यादात्रेया सरिदंतरे ॥ ९३ ॥ आत्रेया पुष्पवत्यां च पानीयं
 पेयवारिणे ॥ ऐलोय मेणी च मद्ये रतबंधांतरे स्त्रियाः ॥ ९४ ॥ अश्वीय मश्व
 संघाते श्वीय मश्वहिते न्यवत् ॥ इंदियं च रुषी के स्यादिंदियं रेतसि स्मृतं ॥ ९५ ॥
 जवन्यं चरमेति श्रैरश्जवन्यं गदित न्यवत् ॥ वदान्यो दानरौडे स्याद्वदान्यश्च
 रु ॥ ९६ ॥ नाषिणि पिंजनी मेघशहे पिधनं बुदशक्रयोः ॥ ब्रज एव ब्रजसाधौ स्यात्तद्वृद्धे ॥ ९७ ॥
 शनैश्चरो ॥ ९८ ॥ ब्राह्मण्यं ब्राह्मणवस्या समुदेपि विजन्तनी ॥ क्षीय एवमाहुर्विशिदे केशश

७६॥

र्षकयोरपि ॥ ९९ ॥ हिरण्यमरुयेद्रवे वराटे स्वरितसोः ॥ सौकर्यं स्यादनायासे त्रिया
 यांश्च करस्य च ॥ १०० ॥ स्वश्रुये दिवरे स्यात्तेषु दार्यः स्थिरशैल्योः ॥ प्रकीर्यः श्रुतिकरजे वि
 तिकीर्येति वाच्यवत् ॥ १०१ ॥ सौरन्यमाहुः सौगंध्ये चारुत्वे गुणगौरवे ॥ नेपथ्यं रंगक्षमौ स्या
 नेपथ्यं च प्रसाधने ॥ १०२ ॥ आतिथ्यमातिथेये स्यादातिथ्यश्चातिथावपि ॥ सामर्थ्यं योग्यता
 शक्त्योरप्यं पुत्रयोर्मते ॥ १०३ ॥ कोलच्यमनुतापे स्यादद्युक्तकरणेपि च ॥ लौहित्यः साग
 रे व्रीहौ आदित्यस्त्रिदशेरवौ ॥ १०४ ॥ पौलस्त्यो रावरो श्रीदेवो चिच्यं सत्ययोग्ययोः ॥ प्रसा
 व्यमनुकूले स्यात्प्रतिकूले च वाच्यवत् ॥ १०५ ॥ अवध्यमधस्ये स्यादनर्थक्ये च चस्यपि ॥
 एण्यो संमते प्रोक्तो ह्यनिना पविवर्जिते ॥ १०६ ॥ शांडिल्यो मुनि नेदे स्यात्सातरे पावकां
 तरे ॥ मांगल्यं स्त्रीयमानस्यात्तद्विले ॥ १०७ ॥ स्वमस्तुरके ॥ १०८ ॥ मांगल्यद्विभंगल्यो मनोज्ञत्वेति
 धेयवत् ॥ मांगल्यारोचनायां च प्रियं गुणशतपुष्पयोः ॥ १०९ ॥ अधः पुष्पी शंती सुतैरखड
 पी शंती सुतैरवचासुचा ॥ अधः पुष्पस्तत्र गजे स्यादधः पुष्पा निम्नगादिनि ॥ ११० ॥ पारुष्यं परुष

वे स्यादनेनैकैः सगीः पतौ । पारुषोपपुत्रिष्यः स्यात्सहायेदस्तस्त्रके । ८२॥
 तत्रेतु जुजिष्यात्तु दासी गणिकयोर्मता । चरुष्य केतकेपुंडरा कटुहेरसोजने
 १२०॥ कुलसि कासु न गयोश्चरुष्याद्विदिते न्यवत् । जटायुगुण्डुलतरो जटा
 युर्विहगांतरे १२१॥ ऊर्णयुः कृणन्तं गे स्यान्मेषकं बलनेषयोः । देवयुर्दार्मिके रव्या
 तो देवयुर्लोक्या त्रिके १२२॥ मृगयु ब्रह्मणि प्रोक्तो गोमायु व्याधयोरपि तु वण्फ
 र्जलनो नातुौ तु वण्फः शशलाछनो १२३॥ शरण्य वारिदेवा ते हि पण्फः सुरतेतनो
 । तपस्याव्रतचर्यायां तपस्यो मासि फाल्गुने १२४॥ हरस्यानिमगाने देगोपनीये तु वा
 च्यवत् । परस्याक्षीरका कोत्यां पयोदित न वे न्यवत् १२५॥ पयस्यादुधिकायां तु स्व
 र्णाक्षीर्या च कथ्यते । स्यादहिल्यामरो ने देगौ तमस्य च योषिति १२६॥ शिवत्यां तां
 गलीदंती गुडुचित्रिपुटासु च । अतिष्ठा का त्रिंशसोरतिरव्या नामशो तयोः १२७॥
 १२७॥ द्वितीयातिथिनिपत्योः पूरण्यामपि च द्वयोः । नादेयी नागरं गे स्यात्तुपायां

१२७॥

जलवेतसे ॥ १२८॥ । नृतिजम्बां जयायां च कांयुष्टेपि ममायते । यच ॥ तवेदनुशयो द्वेषे पश्चा
 ता पातुबंधयोः ॥ १२९॥ । विदंत्यु पशयंधीरा वस्त्राने त्रं तकेपि च ॥ स्मृतः स मुदयो वंदे संयु
 गे स मुपक्रमे ॥ १३०॥ । प्रतिश्रयः सन्ता वां स्यादाश्रयेपि प्रतिश्रयः ॥ १३१॥ स मुध्रयः स्यादुये
 धे विरोधे च स मुश्रुयः ॥ १३२॥ । दुरणमयो लोका धातौ स्यात्सुवर्णनये न्यवत् । अत्र वश्यायो
 दिते गर्वे स मुदाये गणे युधि ॥ १३३॥ । परिचाये जले स्त्राने परिछेदनि तंबयोः । संपरायं समा
 के स्यादापदुत्तरका लयोः । अनिरामयो न्यवत्कल्ये स्यात्तडिक्के निरामयः । समाह्वयस्यासंग्रा
 मे द्यूते च पशुपक्षिनिः । धामाह्वययो स्याद्विहारे स्यात्तीर्थेषु परमात्मनि रौहिणेयो तवे
 दसेरेव तीरमणे बुधे । पापौरुषेयो विकारे स्यात्पुरुषस्य पदांतरे । पुंससमूहवधयोः
 पुरुषेण हतेपि च । १३४॥ । नागधेयं स्मृतं ताग्ये तागप्रत्याययोरपि । बिलेशयो मृषिके
 स्यात्तु जंगेपि बिलेशयोः । जलाशयमुशीरे च जलाधारे जलाशयः । चंद्रोदयो
 वितानो स्यात्तथा चंद्रोदयो षधौ । १३५॥ । फलोदयो स्यात्त्रिदिवे लो जेपि च फलो

दयः॥५॥महोदयःकन्यकुञ्जेष्याधिपत्यापवर्गयोः॥स्वलोच्चयस्तुसाक
 ल्येगंउपनवरंडयोः॥१०॥गजानांमध्यमगतेस्तुलोच्चयउदादतः॥धनंजयोर्जुनव
 द्भौकञ्जतेदेहमारुते॥११॥नागंतरेचापमयंदक्षिणप्रतिकूलयोः॥माजातीयःस
 तःशुरेविहातेकायशोचने॥१२॥तंडलीयःशाकतेदेविडंजनरुताययोः॥वृणशुन्यम
 द्धिकार्यकेतक्याश्वफलेमती॥१३॥महामृत्युमहावैस्यासजरागमणावपि॥इतिप्रि
 यारारेवसोनीपवृद्धेइतिप्रियः॥१४॥अंतरायास्तौअमिशयायीपिरकानकैतौ
 उपकाय्यराजमज्जन्पकारोचितेन्यवत्॥१५॥यथाऽधकाजियमितेतत्तुडधाने
 दुग्धफेनके॥तैवेमवचनीयारव्याप्रवाचेचप्रवक्तरी॥१६॥कालातुमार्यकाले
 येशैलेयेशिपाडमे॥वृषाकपायीश्रीगौयोर्जिर्वंसांचशतावरौ॥१७॥यषट्प्र
 कडमनीयमुपस्तेयेधौतांशुकद्ये॥विष्कक्सेतप्रियात्नस्मांत्रायमातेषधा
 वपि॥१८॥इतियांतवर्गः॥अधः१२३॥१॥२॥३॥४॥५॥६॥७॥८॥९॥१०॥११॥१२॥१३॥१४॥१५॥१६॥१७॥१८॥१९॥२०॥२१॥२२॥२३॥२४॥२५॥२६॥२७॥२८॥२९॥३०॥३१॥३२॥३३॥३४॥३५॥३६॥३७॥३८॥३९॥४०॥४१॥४२॥४३॥४४॥४५॥४६॥४७॥४८॥४९॥५०॥५१॥५२॥५३॥५४॥५५॥५६॥५७॥५८॥५९॥६०॥६१॥६२॥६३॥६४॥६५॥६६॥६७॥६८॥६९॥७०॥७१॥७२॥७३॥७४॥७५॥७६॥७७॥७८॥७९॥८०॥८१॥८२॥८३॥८४॥८५॥८६॥८७॥८८॥८९॥९०॥९१॥९२॥९३॥९४॥९५॥९६॥९७॥९८॥९९॥१००॥

१८॥

तयोः॥स्तुवेनिर्जराचापिः॥स्वर्णेकामरूपिणि॥१२॥श्रीवैषरचनाशोनाजारीतीसरत्न
 वौलक्ष्ण्योत्रिवर्गसंपन्नौवेषोपकरत्नमते॥२०॥पृथ्वीरेनगरेधर्यामसुखनारयोः॥२०॥रदि
 अरंशीघ्रेचचक्रांगेशीधगेपुरंनेयवत्॥करोवर्षपलेपालौश्रुडाप्रमथरस्मिपु॥२१॥स्वरंस्याज
 र्दत्तेदेववाडेतीक्ष्णाग्रकेपिचागरोव्याधाबुपविषेविषेचकरवणेगरं॥२२॥चरोदूतप्रजेदेस्या
 रेजंमयोश्चनेनरंमुरामकर्पूरेनरोजेमानवेर्जुने॥२३॥परस्यादुवमानात्मवैरिदूरेषुकेवले॥प
 रमव्ययमिच्छंतितरोतिशयनारयोः॥२४॥वर्षीष्टेदेववैतेदेर्वरोजामातृसिंजयोः॥श्रेष्ठेन्यव
 त्पृथ्वीवैरंकर्मीरजेमती॥२५॥वरेजीष्टेदेवनात्मवैरिदूरेषुकेवले॥परमव्ययमिच्छंतित
 रोतिरीत्रिफलायावराप्रौक्ताशतावर्यावरीवरं॥अव्ययंनुमनाजिष्टेत्तरोदध्यग्रवालयोः॥२६॥
 स्वरोकारादिमात्रासुमध्यमादिषुचधनोउदात्तादिषुप्रिप्रोक्तस्वरोनासासमीरणे॥
 २७॥शरंनारेशरुकांडेशरस्तेजनकेपिच॥धरस्तुशैलेकपासैस्तुकेमठाधिपेपिच॥२८॥
 धारामेदसित्तयांचस्त्रीणांगनशियेपिच॥तारंनारेक्षरोमेवेदरःसाधुसगर्जयोः॥२९॥

१९॥

२०॥

२१॥

२२॥

२३॥

४ तलौ पत्रे

कंदरे उदरी मांडरी पद पंदिरा बायं ॥ सुरः स्यात्ते दन इव्ये को किला र्वे च गो हुरे ॥ ३१ ॥ पुरं पा
रलि पुत्रे स्यात्तु गो परि गृहे पुरं ॥ पुरं पुरी शरीरे च यु गु लौ क पितः पुरः ॥ ३२ ॥ पुरा वयं
रव किले रुरः को लन दत्ते शफे ॥ सुरोद वे सु राम ये च पके पिसुरा क्क चित् ॥ ३३ ॥ का
रो वधे निश्वये च सौ लो यत्ने यता वपि ॥ कारस्तु पार शौ ले च का गह्वां प्र स्रो वके
१४ ॥ बंधने बंध नागारे हे मकारिक यो पि चार प्रिया लवृ हे स्यात्तु गतौ बंधा पसर्पयोः
॥ पारं पर तटं प्रांते पारी पात्री परा गयो ॥ ककरी पूरयोः पारी पाद र्व्यां च दंति नः ॥ वारः
स्तुर्या दि दिवसे द्वारे वसर वंदयोः ॥ कु बज वृद्धे हरे वारो सी धु वारस्य नाड्यौ ॥ तारो
मुक्ता दिसं शुद्धौ तरणे शुभौ क्तिके ॥ तारं च रजने सु शुभरेण न्यत दी रितं ॥ रुद्रा हि
मध्ययो स्तारा सुग्री वगुरु यो पितो ॥ बुध देव्यां मता तारा शार श बल वां तयोः ॥ ज्ञा
रस्तु वी वधे स्वर्णे पलाना मयुत द्वयोः ॥ मारो मृतौ वृषे मं गे मारी चं यो जन ह्वये ॥ स्पा
रु स्याद्विकरे स्पा रः कका हे शु बुद्धे ॥ शरोर सां तरे धूर्तै लवलोका च तस्मिन्ने ॥ हा

ने ७

॥ ७५ ॥

धे ७

रो मुक्ता वलौ देव्यां पारः हितिसु ते र्क जे ॥ आरा चर्म प्र ने दि न्यां तर स्तर्ण क
नीरयोः ॥ मारो बले मज्ज नि च स्थिरां शे स्याये च नीरे च धने च सारं ॥ चरे न्या वसा
रमुदाहर ति द्वारं पुन निर्गमने न्युपाये ॥ पुरो जल प्रवा हे स्या ब्रह्म सं शुद्धि वा
द्ययोः ॥ करस्तु कटि ने घोरं नृशं से व निधेय वत् ॥ श्वर श्वार तटे स्तुर्ये चो चो
रस्तु गंधयोः ॥ वीरी कछा टिका शिख्योः स्वरः स्वच्छं दमंदयोः ॥ तीरं तरे त्रपौ तीरः सी
रस्तिकरे हले ॥ चीरं तु गोस्त ने वस्त्रे चू डायां सी स के पि च ॥ जीरु खड्गे वणि कू प्र
वे नीरस्तो य विवौ लयोः ॥ हीरं दुग्धे च नीरे च कीरो जन पदं शुके ॥ गौरः पिते स
ले श्वे ते विशुद्धे चानिय वत् ॥ गौरं तु विशदे पद्म के सरे सित स र्षपे ॥ गौरु शशि
नि गौरी तु नमिका कन्ययो स्मृ ता ॥ रो च नीरज नी पिं गा प्रियं गु वस्तु धा सु च
॥ नदी ने दे च गौरी स्यात्तु वरुणस्य तु यो पिति ॥ पौरं तु कर्तृ ले पौरः स्मृत पुर त वे म
वत् ॥ वरं शरीरे का स्मीरे वे रं वा तगणे पि च ॥ घोरं नी मे हरे चो मै रस्तारो लघु तुरं

गयोः॥ दोरा लमे चरात्रये ईशास्त्रे स्वातिदोरपि॥ दीरापि पत्निका लहो दीरः शंकरवर्च
 सोः॥ गोत्रं नाम्नि कुले हेतुने कानने चित्तवर्त्तनोः॥ संजावनीये बोधे पि गोत्रः सोणीधरे मतः॥
 गोसमदुबो गोत्रागात्रमंगे कले वरे॥ संवेरमाजिं वादिवि तागे पचसमोरितं॥ पत्रं स्या
 दाहुने पलेपि हे चशरपक्षिणं॥ पात्रं उजाजने योग्ये पात्रं नीरदयो तरे॥ पात्रं नाद्यादो
 पले चराज तं त्रिणि चेषते॥ योत्रं वस्त्रे लुखाग्रे च श्चकरस्य हस्तस्य च॥ चित्रं स्यादह
 तात्वे स्वतित्तकेषु विहाय सि॥ चित्रेषु पणिगो दुवास न वादं तिका सुच॥ सहासरो
 दिने दे च कर्बुरचा निधेयवत्॥ चैत्रं मत कचे स्यात्तु चैत्रो तासादिने दयोः॥ वृ
 त्तोरि पौषने धंते शैले शक्रे च दावै नैवे॥ सत्रमाहादने यदो सदा दाने च कानने॥ सूत्रं
 उस्तचना मंथे सत्रं तं उच्चवस्तयोः॥ मित्रं सु रुदि मित्रो के शास्त्रं ग्रंथ निदेशयोः॥
 मात्रं वाव धृतौ कार्त्त्ये मात्रा कर्त्तु विस्तपणे॥ अक्षरावयवे वृत्तमाने स्मे च परि
 छेदे॥ शस्त्रं तोडास्त्रयोः शस्त्रादुरिकायां च विश्रुता॥ अस्त्रं प्रहरणे चापे वक्रं

॥८०॥

छंदोतरे मुखे नेत्रं मंथगुणे वस्त्रे तरुमूले चलो चने॥ नेत्रं रथे चनाद्यां चने त्रौ नेतरि
 नेद्यवराहे त्रंशरीरे केदारे सिद्धस्थान कलत्रयोः॥ शुक्रोरेतसि पीयूषे पटवासे पिस्तु च के
 मंत्रो वेदप्रज्ञे देव्या देवादीनां प्रसाधने॥ गुप्तवादे च तोत्रं तु प्राजने वैष्णवे पि चातंत्रं कु
 ङ्बहृत्ते स्यात्कारणे च परिछेदे॥ शास्त्रे प्रधाने सिद्धांते तं तु वाये परिछेदे गदोत्रमे॥ तथा
 हि साधनोपाये श्रुतिशास्त्रांतरे पि च॥ इति कर्त्तव्यतायां च तंत्री वीणागुणे तनोः॥ शिरा
 मृतायां च छत्रमातपवारणे॥ छत्रा मधुरिकायां स्यात्कुसुमवरुणिलिधयोः॥ चक्रोगणे
 चक्रवाके चक्रं सैन्यरथांगयोः॥ ग्रामजाले कुलारनस्पतां डेराश्च योरपि॥ अंतस्तामपि
 चावने चक्रस्य म्लेच्छवे तसे॥ चुक्री चांगेरिकायां स्यात्तदृक्षा म्लेच्छचक्रमिष्यते॥ शुक्रः का
 येन लेजेष्टे शुक्रं रेतो हिरोगयोः॥ शुक्रं शक्रो महेद्रे स्यात्कुटजार्जुनक्षरुदोः॥ न
 क्रः कुंजीरके नक्रं नासायामग्रदारुणि॥ वक्रः स्यात्कुटिले क्रूरे पुटे नेदेशे नैश्वरो
 अत्रमालंबने प्रांते परिमाले पलस्य च॥ प्रांते पुरस्तादधिके प्रधाने प्रथमार्दयोः॥ उग्रः
 श्चक्रासुते ह्यत्रा तश्रीकंठे चोक्ते न्यवत्॥ उग्रावचा छिक्कि कयोर्व्यग्रो व्यासक्त आकु

ले। नम्रं स्पामंगले हे निमुक्त के करणांतरे॥ नरोरुवेषरामचरे मेरु कंदव के॥ इति जा
 संतरे नरो वाचव छे साधु नो॥ नरामंदकिनी रास्त्रा चत्तानं तासुक धर फले॥ हुरु
 स्यादधम कर रण लेषु वाचवत॥ हुरु वेश्या नरी कर कारिका सरवा सुच॥ ची
 मेरी बृहती हिस्त्रा मक्षिका मात्र के पुच॥ दौरे मधु निषानी येव धत्र पुचर त्रयो॥
 यधः स्वर्गौ तरे यधो वाच च्चाथ लुब्ध के॥ रोधः सांबर के रोध म परा धे पि किं चि
 के॥ नीबू निंबे वली के घो वती ने पि कानने॥ राध मुदिष्ट मुच्या ते तथा स्या दुप
 वत्तने॥ लक्ष्मण मारव्या त मा नी ले पाप मी त प ना दि नो॥ चंद्र सुधांशु क रिके पि
 ध्रुव ल वारिषु॥ इन्द्रः राची पता वं त रात्त न्या दित्य योग्यो॥ इन्द्र फलि क के मी
 इव न कान न यो मंदो॥ गुड स्ते जन के गुं रा प्रियंगो नर मुक्त के॥ केवली मुक्त
 के चापि रोरे ना घर सांतरे॥ रोरो ति नाषणे ता प्रे रोरी ति स्कंद मातरि॥ उरो ज बेज
 वा वृक्षे उरो जन पदी तरे॥ पुंरो देत्य विशेषे नु ने दयोरति मुक्त के॥ चित्रे न नो पुं ॥ ११ ॥
 उरी के पुंरा स्या नी वृद्ध तरे॥ वडो हर कंद नो ति बाल कामल के पुच॥ वज्रा गु

इचिकायां स्यातां मंशु लो रणे न्यवत॥ तीव्र मत्स्य कदु क नितां ते धन्य वक्त॥ त
 वाच कदुरो हिण्यां आसुरी गंधर्वयोः॥ अन्नः कोले शिरसि जे चास्त्र मश्रु शो लिते॥ द
 न्नः खरे चाश्विन योर्धस्त्रो दिवस हिंस्त्रयोः॥ वास्त्रो पि दिवसे वास्त्रं मंदिरे च चतु पथे॥ शी
 ध्रुं नग तौ प्रादुश्चक्रां गो शिरयोरपि॥ व्याघ्रो द्विपि नि विस्त्रा तोर क्ते रंड करंडयोः॥ व्याघ्री
 नि द्विग्विकायां च श्रेष्ठे स्यादुत्तर स्थितः॥ अजं नजः स्वर्ग बलाह के पुंशु च्छं प्रदीपे धवले
 न के च॥ बलुर्विशाले न कुले हशाना वजे मु नौ म्भलि निपिं ग ले च॥ शिगुः शो नो जने शा
 के सरु कुलिश को पयो॥ खरुर्वजे धरे चाले पू पे रवडे पि च खरुः॥ चरु नो डे च हव्या ने न
 खरुर्दे ते हरे दर्पे हये श्रे ते तु वाचवत॥ चरु नो डे च हव्या ने न रु र्ज करि कां चने॥ गुरु नि
 कादिक रे पि नादौ सुर मत्रिणि॥ दुर्ज शल धु नो प्रोक्तो गुरु महति वाचवत॥ रु र्म गे देत्य
 ते दे कारु कारु क शिलि नो॥ विश्व कर्मणि शिले च कुरु श्री कं ठ जांग लो॥ उदने न पते
 दे च पुरु प्रा ज्य रो पे जयो॥ पुरुः खलो क न पयो मु र्नु र्धर धन नो॥ आरु स्तरु विशेषे स्याद
 रुः कर्म कटी दं द्वि लो॥ कदु मातरि नागानां कदुः कन कपिले गे॥ हरि वा ता र्क चंद्रं यमो

पेंद्रमरीचिषु॥सिंहश्वकपिनेकादिभुक्तोकांतपुच॥हरिवाचवदाख्यातोहरिकपिलव
 र्णयो॥हरिर्ब्रह्माच्यतेषु नृदिप्राज्यसुवर्णयो॥गिरिगीर्णो गिरिचक्रेकीडागुडकाशै
 लयो॥५०॥नेत्रायमविषैषेपि मृजेनुगिरिरंनवत॥वारिस्तृतासरस्वत्यावारिकीवे
 रनीरयो॥वारीघटीनबंधनोरंकिःस्मात्पादनुध्रयो॥शारीरहोपकरणेतथाशकुनि
 कांतरे॥युगार्धगजपर्शुणेव्यवहारेपिचक्रवित॥कारिःत्रियायामाख्यातानापिता
 दिकशित्तिनि॥अग्निःशैलद्रुमोर्वेषुरेद्रिकाकजयंतयो॥शद्विरंतो धरविस्तोतंद्रो
 निद्राप्रमीलयो॥धात्रीजनन्यामलकीवसुमत्पपमावृषु॥उष्ट्रीगोलविक्रयां
 स्माकरतस्यतुयोषिति॥क्रोष्टीशृगालिकाक्षीरविदारीलागलीषुच॥तरिर्नाविश
 दशायांचवस्त्रादीनांचपटके॥जारीस्यादोषधातेदेजारस्तपपतावपि॥इरावारिसु
 रास्तुमिन्नारतीषुप्रयुज्यते॥स्त्रिराक्षमौशालपर्ण्यस्त्रिरोनिश्चलमोक्षयो॥धारा
 सैन्नाग्निमसंधसंतत्योःपतनांतरे॥प्रवद्रचेमपातेपितुरंगतिपंचके॥स्वजादीनां
 चनिशितमुखेधारापिकीर्त्यते॥धारकचिद्वनासारवर्षणेस्मादलेपिच॥वीराचा

॥८२॥

धिरकाकोलीनामलोक्षेनवालुषु॥पतिडत्रवतारंनार्गनारिर्नदिरासुचा॥गोष्टोडं ब
 रिका॥हारविदारिडग्धिकासुच॥वारस्तुस्तुनदेष्टेष्टेविद्वंश्यांनतेपिच॥अग्नि
 नक्षत्रनेदेस्यादृष्टिक्लिबेतिधेयवत्॥मात्रानुयापनोपायेगतौ देवार्चनोस
 वे॥उस्त्रागुपचित्रायांउस्त्रस्तुकिरणेस्ततः॥हिंसाकाकादनिमांस्योर्दिभिःस्या
 स्माद्वाडकेन्यवत्॥रत्रि॥अमरस्त्रिदशेषस्त्रिसंहारेकुलिशोक्रमे॥इवमिराव
 तीस्तुणागुदुचिषमरास्तितः॥अपरंचधुनार्थेस्यात्पश्चाजानेचचंदने॥अर्वा
 वानेपरंप्राकुज्जरायोचापरामपि॥अधरोदंतवसनंतधौदितेधरोन्यवत्॥
 अधरोवस्तुनेदेस्याभावधानेकृतावपि॥अंतरंडपरीधानेनेदेरीधानकाश
 यो॥आत्मांतर्दिर्विनात्मीयवदिर्मेध्यावधिषपि॥तादयेविमरेप्रोक्तमवरंचरने
 न्यवत्॥गजांश्चजंवादेशेचनवान्यामवरातता॥उत्तमप्रतिवाक्येस्यादृष्टोदी
 चोत्तमेन्यवत्॥उत्तरस्तुविरादस्यातनयोदिशिचोत्तरा॥इतरःपातदेन्यस्मि
 नक्षरं ब्रह्मवर्णयोः॥रुद्धरंवारिधारायामृद्धरोरुजैलिस्ततः॥प्रवरंस्ततो

गोत्रे श्रेष्ठे तु प्रवरो न्यवत् ॥ शंबरो वारिचां डों लात्ते दयो शंकरे पिचा अंबरं वांससियो मिका
 र्पासे च सुगंधके ॥ शंबरं सलिते वित्रे बौद्ध वन विशेषयो ॥ शंबरो दैत्य हरिण मस्य शैलानां त
 रो ॥ उषधौ शंबरी माहुः ॥ प्रखरो श्वतरे मुनि ॥ तुरंगाणां च संनाहे प्रखरो तिष्ठ शंखरे ॥ शिख
 रं शैल वहाय कस्या अलक कोटिषु ॥ पद्मदा डिमबीर्जा न माणि क्यशक ले पिचा शि
 खरस्तु शिवा ने दैत्य जांगे वारिका लुके ॥ शिखीय वत् बज्रत्वे च विष्ठरस्तु महीरुहे ॥ अ
 ऊशमष्टौ च वठरः शठ वधुयोः ॥ ककवटे वायु पितरं मुस्तमं धान दंडयोः ॥ पितरस्या
 उषायां च उठरः कठिने न्यवत् ॥ ऊहौ बद्धे च उठरं चंठरस्तु लवध्ववे ॥ कहीरकोशे
 षरं कपाटे छदने पिच ॥ करु ककचे दीने कएरे दौख मां तरे ॥ कदरुस्ते तखदिये
 सुद्रुणे गे पिचा पितः ॥ बदरु कोलिक पास्योः कलेस्या हृदरी तयोः ॥ एला पण्यां उबद
 री उल्लाकां तौष धावपि ॥ प्रदरो रोग ने दैस्या त्रुदरः शरु चंगयोः ॥ मकरो याद सिद्धयो
 निधिरा शिष्ट ने दयोः ॥ निकरो निवद्धे मारे न्याय देय धनां तरे ॥ शिकरं शबले वात
 मृतां बुक एयो विडुः ॥ प्रकरश्चोपचारे स्यात् वि किर्णं कुमुमा दिडुः ॥ संहतौ चोपस

८३

त्यायां यथा संख्य मवस्थितौ ॥ जांगके प्रकरं चोक्तं प्रकरी च खरा वनौ ॥ विस्तरस्तु प्रपे चे स्या
 द्विस्तारे प्रणमे पिच ॥ संस्तर प्रस्तरा चेतौ प्रसरा धरयोरपि ॥ मलि पाषाणयो आ पिमथा न
 ममुदीरितौ ॥ दगरुटं कण्हारे दे ला विज्जमगो चखे ॥ वाच्यवत् ककराहे च मुद्रं मद्धि वा
 निदि ॥ लाष्टा दि ने दने पिस्पा बुदरं जठरे युधि ॥ प्रसरः प्रणये चे गे संगरे चाथ मसरः ॥ अ
 ह्या परसंपा तो मा मर्ये न पणे कुधि ॥ मसरामद्धि कायां च विसरः प्रसरे ब्रजे ॥ ऊरुं कोट
 र छिद्रे नागराग विशेषयो ॥ दहरो मृषिकायां च स्वल्प त्रारि चाल के ॥ चमरं चामरे
 प्रौढु मजरी मृग ने दयो ॥ चमरी नमरे श्वे कामु के पिम धुद्र वत् ॥ रुधिरं गार के प्रोक्तो
 रुधिरं कुमुमा मृजे ॥ बदिरो ने कपे चंद्रे मुदिरः कामु के बुदे ॥ मिहीरो नास्करे वद्धे म
 हिर का मरु र्वयोः चिवरं दृषणे गते रुधिरं छिद्रं ध्रुवत् ॥ खपूरः नमु के नद्रमुस्त के
 लस के पिच ॥ गोपुरं तु पुरद्वारी द्वारमात्रे च मुस्त के ॥ चिकुरश्च चले केशो गृह बलुत
 जंगयो ॥ पद्धि दु ने दयो शैले च कुरो रथ वृद्धयोः ॥ अंकुरो रुधिरं रोहि पानी ये निनयो
 दिदि ॥ कुकुरो वक्र पुष्पे स्यां ग्रथि पणे तु कुकुरां मुकरो मद्धि का पुष्पे दर्पणे वक्र लडुमे ॥

कुलालदडे मुकुरो मुकुरो पेषु विभ्रतः॥ अजिरं प्रागणे वा ते विषये दर्दरे तनौ॥ अशिरे
 राक्षसे वक्रावशिस्तपने पिच॥ शिशिरस्पाद तो जेदे तुषारे शीतलन्यवत॥ विशिरं कणसि
 धुलवसे न कणा सुच॥ अश्विरं विवरे वाद्ये सरंध्रे अशिरो निलौ॥ अशिरो ग्रीचति मिरं
 धांते नेत्रामये पिच॥ छिदिरं कपावकेशो करवाले परश्वधे॥ दंतुरं वाच्यव न्येयं
 विषमोन्नत दंतयोः॥ विदुरो नागरे धीरे कौरवाणां च मन्त्रिणि॥ विधुरं स्यात्प्रविशेषवि
 धुरो विकले न्यवत॥ विधुरा पिरसात्नायां मधुरस्तुरसे विषे॥ मधुरं रसवत्स्वादु प्रियेषु
 मधुरो न्यवत॥ मधुरा शतपुष्पायां निश्चया तगरीक्षिदो॥ मधुकुट्टिका मे दामधुली
 यष्टिका पिच॥ मधुरा बहुरां रमे नम्रे दं सेतु वंधुनरः॥ बंधू केच विदंगे च मधुरा पण्य
 योषिति॥ बर्बरः पामरे केशविन्यासे नीरुदंतरे॥ बर्बरा कंडिडकायां तु बर्बराणां क
 पुष्पायोः॥ बर्बरं सलिले हेनिकर्बुरा पापरुहयोः॥ कर्बुरा रुक्मं तायां किमीरे क
 रुरो न्यवत॥ कर्पूरं स्यात्कपाले च शस्त्रे दकपाटयोः॥ कर्पूरा नात्र निप्रोक्तः कफ
 लावपि कर्पूरः॥ खर्परु तस्करे धूर्त्तनिष्ठा पात्र कपालयोः॥ गगरो मीनने देस्या तमं

८४

यन्या मपि गगरी॥ बर्बस्तुरे वलद्वारिध्या नेव केन दांतरे॥ निर्जस्तु सहस्राशतुरंगतुष
 षावके॥ मूर्धुरस्तुषवक्रौ स्यात्तमनथेरचिवाजिनि॥ जर्जरो वाच्यवजीर्णैर्जर्ज
 रं वा सवधजे॥ निर्जरस्तुजरा न्यक्ते वाच्यवनिर्जरस्तुरे॥ निर्जरा तु गुडूचां स्यात्ता
 लपण्या मपि कचित्॥ दुर्दुरंतोय देते के वाद्यत्तां डाडि जेदयो दुर्दुरा चंडी कायां च
 ग्रामजाले च दुर्दुरं॥ बादुरं दक्षिणावर्तं शंखे रुमिज नीरयोः॥ काकचिंचाश्च बीजे
 पिचाचिबादरमिष्यते॥ दुर्दुरं वाच्यवतुदुरवधये दृष नौषधौधे॥ दुर्दुरो निदुरे सा
 रे निर्जरे कठीनेत्रयि॥ कुंजरो नेकपे केशे धातु कामपि कुंजरा॥ पिजरं कनके वा
 जि जेदेपि तेच पिंजरा॥ मंदरो मंथशैले स्यात्तुर्वर्ग मंदारयोरपि॥ मंदरो बहुले मंदे
 कदरो विवरं कुरे मंदिरं नगरे गारे मंदिरं मकरालये॥ बर्बरस्तुरणे मेपे कदुरोदप
 ले दडे॥ कंधरो वारिवादे स्यात्तु ग्रीवा सामपि कंधरा॥ चक्षुरं शादले प्रोक्तं निर्जरस्तु
 नकुब्जयोः॥ बिच्य ह्ये च मंजरी वक्षरीति च प्रकृतो॥ मंथरस्तु च के काशे मंथाने चा
 मंथरा॥ कुसुन्यां मंथरो मंदे पृष्ठौ च के च वाच्यवत॥ कबुरं कुसिते ह्ये च वरस्तुडिले ग

शये ७

णे॥ छिबंरं छेदनं व्येष्टिरोधर्तवैरिणे॥ इबरोडुर्विलेनिचेपथिक्कुरकर्मणे॥
 पुष्करं कजेबोमिपयः करिकराग्रयो॥ अषधदीपविहगतीर्थरागोरगतरे
 पुष्करं तूर्यवक्त्रेचकांडेरवडेफलेपिच॥ डिंगोडिगोरहपेसंगरेगीकृतेयुधि
 विषापदोः क्रियाकालेसंगरं तुशमीफले॥ गकरस्तुगुहदंननिर्कुजगहनेषुपि॥
 बकरः कपितोव्यावैत्रिवायामपि कर्बरा॥ चातुरश्चातुरकवक्त्रगीगैनिधे
 तरि॥ एतौस्मात्तौनेत्रेगोचरेचादुकारिणि॥ ईश्वरोचित्तवैराद्येनौस्वामिनिम
 न्मये॥ पावत्यामीश्वरीमादुर्घापरुसंयुगे॥ आकरोतिवहोत्यत्रि॥ स्नानश्रेष्ठेषुप
 श्यते॥ नास्करस्तपनेवक्रौप्रजाकरसमः स्मृतः॥ कर्परोत्तमस्त्रिकोस्यातकीनाशे
 राजयस्त्रिणि॥ जराटेपिकर्बेदंश्वकेसरेपिचत्तस्मनि॥ शावरं वंघतमसेशावरोधा
 दुकेन्यवत्॥ प्रातरं विपिनेदरेस्तन्यवत्तनिकोदरे॥ शाकरोदुग्धफेनेपिशर्कराचि
 तदेशवत्॥ शाकरोदुषत्तेष्टेदोविशेषशाकरंमतं॥ नागरं मुस्तकेसुंशोविदग्धे
 नागरोन्यवत्॥ शंसंतिनगरोदूतेरत्तिबंधेपिनागरं॥ वामरोवाकैरेशालेतिनरेवा

८५

उकेवृषे॥ विशारदेमुमुहोचगतातंकेचवागर॥ आभरं ग्रावमधुनोपा
 मरस्वस्वनीचयो॥ वासरोदिवसेयागेप्रजेदेपिचवासर॥ कांतारमुप
 सर्गादौवनेदुर्गमवर्तनि॥ इरुप्रजेदेकांतारपादारुपादधूलिषु॥ पादालि
 देचमंदार॥ पारिजत्राकर्णयोः॥ सुरदुमेपिमंदारसंदूरेनागदेशयोः॥ आधा
 रश्चाधिकरणेत्यालवालेबुधारणे॥ आसारः स्यात्प्रसरणेवेगवर्षेमुद्व
 ले॥ केदारः पर्वतेशंनोहेत्रजेदालचालयोः॥ उदारोदाटमहतोदंक्षिणे
 पश्चिधेयवत्॥ मदिरोदिरदेधूर्तेविदारोदारणेरणे॥ विदारिशालपण्यं
 चरोगजेदेरुगंधयोः॥ विकारोवित्ततौरोगेव्यापारसंस्त्रितींगयोः॥ नि
 कारस्यात्यरिहावेधान्यस्योक्तिरणेपिच॥ आसारः सदृशेजेदेटंकारः सिं
 जिनीधनौविस्मयेचप्रसिद्धोचंडारः शारयंत्रके॥ कालचक्रेवहत
 पिडिडारोमतवारणे॥ पिंदारः कृपणेहेपेमदीपीरुकेद्रुमे॥ उषारोदि
 मत्तेदेस्यातशीकरेपिहिमेपिच॥ छनारस्तुनीस्तन्येसर्पांडकलवि

कयोः कुमारी बाल के स्कंदे सुचरा जे श्च चार के ॥ शुके पि वरुणा प्रोच
 कुमारे जात्य को चने ॥ कुमारी रा मतरुणी नव मध्यो न दी विदि ॥ कन्या
 परा जिता गौरी जं ब दी पे सु व स्मृ ता ॥ आहौ रो जोज ने हारे न वे दा हरणे पि च
 ॥ विहारो न मले स्कंदे ली ला यो सु ग ता लये ॥ कुटारं मै शु ने विद्या कुटारं क
 बले पि च ॥ को दारो ना ग रे क पे पुष्प रि णं च पा व के ॥ कदार पि ग ले दा
 से सं नारु सं न तौ गणे ॥ के नारु कु न्ति नर के शिरु का पा ल सं धि पु ॥ सं का
 रो ग्नि त डि कारे सं मार्ज न्य व गु ठि ते ॥ नर दू पि त क न्या यो सं कारी त्पि द
 श्य ते ॥ पं कारु शै व ले सो तौ सो पा ने ज ल कु ज के ॥ सं कार प्र ति य ने स्था त सं
 व ले नु शु ने पि च ॥ सा सरं स्था त ब स्ति न रे सो पा ने प रि पं ज रे ॥ के जा रो र
 ज ते स्त ये वि रं चो वार ने मु नौ ॥ मा जा र उ तौ ख द्वां गे शं गार क न का लु के ॥
 ने गारी जि ह्नि का यो स्था त अं गारो ला त नौ द यो ॥ शृं गारु सु र ते ना द्य र से
 पि ग ज मं ड ले ॥ शृं गारं दू र्वा सिं दूरं ल व ग कु मु मे पु च ॥ वि स्ता रो वि स्त तौ

॥८६॥

स्तं बे उ दार श्चो दू तौ रणे ॥ मा व रो दि ज ने दे स्था त व्या से र्क पा रि पा श्च के ॥ शा
 बर प यु ते रो धे न था पा पा फ रा ध यो ॥ शा ब रि वृ ष्ण शि वां च शा री रं दे दू जे वृ षे
 करि रु क ल शे वृ ष्ण ने दे वं शां कुरे पि च ॥ करी री ची रि कां यो च दं त मू ले च
 द ति नां ॥ शरी रं शो ल म थ्य स्त पु लि ने दु दु री त टे ॥ ज। बी रं प्र स्त पु ष्पा र खे श
 के द त श ठे पि च ॥ अशी र मा हु श्च मर दे दे च श य ना स ने ॥ सो बी र ब द रे श्चो
 तौ ज ने दे शे च कां जि के ॥ कि मारिः क बुरे दे त्प रा कू सां तर यो र पि ॥ का स्मी रं
 कुं कु मे प्रो कू टं व पु ष्प र मू ल यो ॥ पा दि रो वा ति के वं शे मू ल के ति त य न्य पि ॥
 धा रा ध रो पि के दारे रे णु चारे पि चे ष्य ते ॥ अं डी र पु रु षे श के डिं डी र पु रु षे स्मृ
 त ॥ पे ने वा ते गणे चा पि च सरु पां डु के ख रे ॥ कू वरु कु ज के चारौ कू वरु सु यु
 गं ध रे ॥ कू वरो र म सु पु रु षे प्रो ढा शृं ग वृ षे पि च ॥ स्था न्नी वरो वा लि ज के वा स्त
 ये पि च नी वरु ॥ पी वरु क छ पे स्त ले धी वरो लु ब के बु धौ ॥ के सरं दिं गु नि प्रो
 कं के सरो ना ग के सरे ॥ सिं दू छ रा यो पुं ना ग किं ज व कु ले ष्य पि ॥ के शा स्तु र ले

मछे मागे चूडी वाससि॥ शिले ध्रं कदलिपुष्पे कचकत्रिपुराख्ययो॥ किशोर
 तरुणाचखोदयशावकस्ययोः॥ तैलपण्णं कुरस्तु नदीवृक्षे धनाधिपो॥ व
 णेरुस्याद्यशावेश्या कर्णिकारे गणे नवेत॥ कौटिरुः शक्रगोपे च शत्रे च नकु
 लेपिच॥ अंगरुस्यावशिष्टियायां पेगकेपिलन्यपि॥ किंशारुसस्यभूकेपिवि
 शिखेकं कपडिणी॥ नार्योरुः शैले जेदेपिमृगजेदेचतत्रच॥ क्रीडायां परना
 र्यायां पुत्रोयेनोपपादितः॥ कुशारुपावेपे किशोकटफुस्यान्मिमीलेक॥ विद्य
 केरुसिचकटफूरुदेवने॥ दासेरोदासिकापुत्रेदासेरस्यातक्रमेलके
 ॥ मयूरोवर्द्धिचूडायां अपामागे शिखंडिनि॥ खर्जरं रजते विद्यादृष्टिकत्रु
 मनेदयो॥ खर्जरं श्वाथकचूरं सटीकां च नयोर्मतां॥ सिंदूरस्तु नदेस्यासिद्ध
 रं रक्तचूदेनेर्णके सिंदूरीये च नीरक्तचेलिका धातुकी पुत्रा॥ वक्षरं स्याद्वन
 केत्रे वाहनो खरयोरपि॥ वक्षरमाहुः संभुध्रमांसस्य करमांसयोः॥ एका
 ग्रमेकतामेस्यादेकाग्रं चाप्यनाकुले॥ नारं प्रोवात्रिकेरादि विषवैद्येपि

वेर

॥७॥

कथ्यते॥ महेंद्रः पर्वतेशत्रे जले प्रोवरुणे बुधौ॥ जंतके च गले प्रस्यासामुद्रं
 देहलकणे॥ सामुद्रं च समुद्रीसलवणादिषु जेधवत॥ खडाक्तमजले शेष्यास्त्री
 णांदंतकृत्तांतरे॥ कटिचंरसनायां च मार्गे च टि वाससि॥ शिलिंध्रं कदलिपुष्पे
 कचकत्रिपुराख्ययो॥ शिलीध्रः कश्चित्तीधिरैस्सरुमीनप्रजेदयोः॥ गंडपदीदिवि
 प्रोक्ता शिलीध्रीविहगीतिदि॥ तमिस्त्रंतिमिरं कोपेतमिस्त्राचतमस्ततौ॥ क
 ष्टकविनिशायां च कृकात्रंतुचरांगके॥ तकात्रीनिचकारथां कलत्रं श्रोणि
 नाथयोः॥ दुर्गस्थाने नृपादीनां पवित्रं धर्षणे कुशे॥ पवित्रं ताम्रपयसो धर्म
 चापितदंत्यवत॥ सावित्रः शंकरे प्रोक्तः सावित्रीदेवतांतरे॥ दैत्यारिस्त्रिदेशे
 विष्णोति तिरिर्विहगे मुनौ॥ शंकरो विघ्नपेक्षं देगुसुरिपावके पवौ॥ मंदुराव
 जिशालायां शमीपार्थे कवस्तुनि॥ उवरा सर्वसस्याद्युक्तमौ स्यात्तमिमात्र
 के॥ आसुरारजनी वास्योरसुरोद्यनैवेरवौ॥ वासुरा वासितायां स्यात्तवासि
 तेयां मता नुवि॥ मस्रमस्ररात्रीदिप्रजेदेपण्ययोपिति॥ मस्रमस्रुरौ च द्वावेता

वपेतयोर्मनौ॥शर्कराखंडविकृतावुपलाकर्परांशयोः॥शर्करांचितदेशेच
 रुज्जेदेशकलेपिच॥कक्षराश्वकसयांचशटीदुःस्पर्शयोरपि॥कक्षरंवाचवया
 दुरोमलेपुंश्चालपिच॥मर्मराचमरीतांडमुरानिःकुलासुच॥गायत्रीकशि
 ताछंदःप्रजेदेखदिरपिच॥सैरंध्रीपमेशमस्थशित्यत्रश्वशस्त्रियां॥वर्णसंकर
 संस्ततस्त्रीमहीध्रकयोरपि॥खदिशाकनेदेस्यातवदिरोदंतथाचने॥सुंदरि
 स्त्रीतरोनेदेशवरीरात्रियोषितोः॥रुरिद्रायांचकबरीकेशशाषविशेषयोः॥क
 वरंलेवलेम्लेचतुंबरीसरमार्द्रयोः॥मंजरीवक्षरीस्त्रुलमुक्तातिलकशादिषु॥
 मर्मरीपीतदारौस्यादस्तनेदेचमर्मरः॥मर्मरीस्यान्मृषावाचलेपापट्टवाद्य
 योः॥शर्करामेखलाकायोःछंदोनेदेपिशक्ती॥जक्षरीजिह्वरीवाद्योदुबुकेवाल
 चक्रलो॥कावेरीस्यासरिनेदेपणनारीरुरिद्रयोः॥रवा॥श्री॥परीकरोतवेद्रातेप
 र्यंकपरिवारयोः॥प्रगाढगानिकाबंधविवेकारंजयोरपि॥व्यतिकरसमाख्या
 तोव्यसनव्यतिसंगयोः॥विताकरोऽग्रोतपनेवस्करोग्रघण्टहयोः॥कर्मका

॥प्र॥

रस्तुकीनाशेनवेतनजीविति॥कर्मकरीतुसर्वायांविंविकायाप्रपिक्वचि
 त्॥अरुकरोव्रणकृतिज्जातेचाणरुःकरौ॥नवेत्सहचरोशित्यांवयस्येप्र
 तिबंधके॥निशाचशेषेचकादियातुधानेषुपरवे॥निशाचरीपांशुलायांन
 वेत्यहचरोविधौयुष्यचष्टयगवारिवारणेचप्रकीर्तितः॥चराचरंस्याज्ज
 गतिवाचवज्जंगमंगयोः॥विदुर्दशपुरंदेशेस्तुस्त्यायांपत्रनेपिच॥अत्रिमरो
 वद्येयुदेतथासबलसध्वसे॥आहुःप्रतिसरंदस्तस्त्रेमात्येपिमंडले॥व्रण
 शुद्धौचमृष्टेनियोज्यारक्तकंकोले॥मंत्रनेदणवसरोवर्षप्रस्तावयोरपि॥स्मृत
 परिसरोमृष्टादेवापान्प्रदेययोः॥दिगांबरस्यातृकूपेनेमेतमसिंशेकरे॥पीतांब
 रपद्मनाचेनेवेपीतांबरोनटे॥कादंबरमुदध्यमेमध्वनेदेवसीधुनि॥कादंबरी
 परन्तुताजारतीसारिकासुच॥उदंबरस्तुदहत्यांयुक्तजातोचपंडुके॥उदंबरस्तु
 तस्मृततामेकुष्टनेदण्डवरं॥अदंबरःआहवेरोगनेदघचक्षते॥नीला
 वरःप्रलंबघ्नकोपणकुरलोचने॥आउंबरःसमारंजेगजगर्जिततर्ययोः॥

निषधरस्तुजं बाले निषयां च निषधरी॥ उपकरं समीपे स्थापितं देकांते वाप्युपकरं॥ इंदिवरं
 अवलये वायमिदिवरी मता॥ कालं ज्वरो योगं चक्रमे लके नैरवे गिरौ॥ विम्वनरोऽस्यु
 ते नानेन वेद्विभं नरास्तु विादुरोदरोधुतकारे पणधते दुरोदरां लबो धरस्यातदुध्या
 नगणनामधिपेपि च॥ अनुत्तरो मतं श्रेष्ठे प्रतिजल्य विवर्जिते॥ तुलाधारस्तुलारा
 शो नो ज्ञानि जकेपि च॥ तोयधारो न वेने धेसु निषणैषधेपि च॥ धुरधरो धवतरो धुर
 वहिपि धुरधर॥ चक्रधरो हरो सर्वे वाचवत्या मजालिनि॥ अश्वतरो वेगसारस्वात्ता
 गराजांतरेपि च॥ विबुवीरं तरं श्रेष्ठे शरविरणयोरपि॥ नक्षत्रोद्यते वा ते विद्याधरवि
 दं गेयोऽदं तं स्यादुत्तं गेकरा लो कटदं तयो॥ दैमातुरो जरासंधे वारणा नतयो
 र्मतः परंपरः प्रपौत्रादौ नृगजे दे परंपरः॥ परंपरा परी पाद्यां संतातेपि वधे कचि
 त्॥ धरा धरा स्ता नृति चक्रपाणौ धरा धरस्तो यधरे कृपाणौ॥ पयोधरः स्यात्तकुच
 कोशकारकसेरुकां नो धरनालिके सरे॥ कलिकारकरं जे स्याद्दृम्यादे पीतमस्त
 के॥ अलंकारस्तपमादो हारके पुंकादिषु॥ कर्णिकारश्च संन्यावे कर्णिकारो

॥८॥

दुमेतरे॥ रथकारस्तुमादिषा करणीये च तद्वर्णी॥ चर्मकारः स्मृतः पादू हति
 चर्मकपौषधे॥ चर्मकारी च कथिता प्रतिकारः समे जेट॥ घनसारस्तु कर्पूर
 दक्षिणा च त्रपारदे॥ कृकसारस्तु ही वृकेशिंशपा नृगजे दयोः॥ गिरिसारो न
 वेलादे लिगे मलयपर्वते॥ पीतसारो मलयजे॥ गोमेदक मणावपि॥ शाल
 सारो मुमेदिं गोस्तत्रधारः शचीपतौ॥ प्रतीहारः प्रती हार्यो द्वा स्ते द्वारे प्यनंतरं
 अतिहारो न्नियोगे च॥ चौर्ये संनृहनेपि च॥ व्यवहारो द्रुजे दे स्यादि वा दे चप
 णे स्थितौ॥ अवहारः स्मृतः चोरे द्यूतशूद्रादिविज्जमे॥ निमंत्रणोपनेतव्यप्रवे
 ग्राहारव्यादक्षि॥ परिवारः परिजने खड्गकोशे परिछदे॥ पारावारः समुद्रे चपा
 रावारं तटद्वये॥ अवतारो च तरणे पुष्करिण्यादि तीर्थयोः॥ अकूपारः समुद्रेपि
 कूर्मवाजेपि कीर्तितः॥ शिशुमारो विसे नृतजंतौ तारात्मा कारास्युते॥ सुकुमा
 रश्च पुं द्वे द्वौ को मले त्यतिधेयवत्॥ धुंधुमारः शत्रुगोपे गृहमेप दात्मके
 कर्णपूरो वतंसे स्यान्नीलोत्पलशिरीषयोः॥ करवीरः दृपो ले स्यादेत्यनेदाश्च

मारयोः॥ श्रेष्ठे गवां पुत्रवत्यां मदी तौ करवीर्यपि॥ मदा कीरपश्चै ता र्क्षे श्रेष्ठे सि
 दे च को वले मखा त ले च कर्के च मदा वीरो जरा टके॥ आत्मवीरप्रण वती शा ल
 पुत्रे विदूषके॥ पार्वटी वस्त्रपा वा म्ना स्त्रां कुरे गलिका सुते॥ चित्रा टी रो विधो ना
 ल मंति कं ये न तत्र च॥ घंटा कर्षी पदारा यदु तठा गा स्त्र बिंदु निः॥ पात्र टी रो बुधे
 सक्तौ भुक्त व्यापार मंत्री नि॥ लोह को स्ये जरा त्या त्रे पिं गा पो पा व के पि च॥ धारां कुर
 स्तु ना शी रेशी करे पि व नो त्य ले॥ सनु द्रा रु स्तु तो ग्रा दे से तु बंधे ति तिं गि ले॥ वि
 श्व क द्रु र्व ले धां ते स्या दा खि ट क कु कु दे॥ असि पत्रो न वे को श कारे पि तर कां
 वरे॥ शत्रु पत्रो राज कारे दा वां घा ट मयुर योः॥ राजि वेश त पत्रं तु ना यु पु त्रो द नू न
 ति॥ मदा धृ तै च ती ने च ल क्षी पुत्र स्मरे दये॥ पूर्ण पा त्रं सुवर्ण लु र्ण पा त्रे पि
 के पि च॥ मदा पा त्रः स म्भवे पा ता त्ये द स्ति प का धि पे॥ बिंदु तं त्रं बिंदुः शारी फल
 के चतुरंज के॥ राग स्त त्रं तु ला स्त त्रे पद स्त त्रे पि दृश्य ते॥ ता ल पत्रं च ता टं के रं डा ॥ २०॥
 यां ता ल पत्र पि॥ अग्नी रो त्रो जि ह विषो वी त दो त्रो न ला र्क योः॥ वीर न प्रो श्व मे

धां श्व वीर श्रेष्ठे च वीरणे॥ पारि न प्रस्तु मं दारै नि व पा द पयो र्म तः॥ बल न प्रो रो
 दि ले ये त्रा य मा णे ष धा व पि॥ बल न प्रो कु मा र्यं स्या द र्द चं प्रस्तु चं द्र के॥ गल ह स्ते
 बा ण ने दे अ र्द चं द्रा दृ द्धि दि॥ धा र्ता रा णो सि ता स्या दि दं स कौ र्व नो गि पु॥ घृ त
 रा ष्ट्रः सुरा डि स्या त्य किं कृ त्री य य ने द योः॥ घृ त रा ष्ट्री दं स पा द्यां स्त्रि र दं द्रो भु जं ग
 मे॥ वरा हा कृ ति वि क्षौ च च कृ न के श्रु के ख रे॥ क रं न रा प्र सा रं ण्यो रो दि ण्यं
 ग ज यो पि ति॥ क रं बि का यां गो ला यां वर्षा न्म र्व यो र पि॥ मणि छि द्रा तु मे दा
 या मृ ष ना र्व्यो ष धे पि च॥ तुं ग न द्रा न दी ने दे तुं ग न द्रो न दो क टे॥ दं ड या त्रा दि
 वि ज ये सं या न त या त्र योः॥ द ह या त्रा नो ज ने स्या त कृ तां त ग म्ने पि च॥ वी ता व
 री द द्रा यां रज न्यां च वि ता वरी॥ वि वा द व स्तु लुं व्यां च कु द न्यां च त्र यो पि ति॥
 कुं न का री कु ल द्यां च कु न का र कु ला ल के॥ तुं डि के री तु क र्पा स्यां बिं बि का या
 म पी ष ते॥ श्रीः रा पं॥ पां श्रु चा म र इ त्यु क्तो द र्वां चि त त टी नु वि॥ व र्ध प के प्र शं सा
 यां पु रो ठौ धृ ति गु ष के॥ स्या पा द च व र ण यां गै से व ने पि ष ले पि च॥ क र के पर दो षे

कजापिपुरुषकेपिच॥विप्रतीसारनिष्ठतिक्कौरुतेनुषयेरुषि॥समन्निहारो
 शार्थेपौनःपुण्येपिकथ्यते॥पीतकावेरनिष्ठतिपित्तलेकुंकुमेपिच॥तालिसपत्रं
 तालीसेतामलकामपिस्मृतं॥तवेदुत्पलपत्रंनुतदलेस्त्रिनखद्वते॥तमालप
 त्रंतापिष्ठेतिलकेपत्रकेपिच॥सर्वतोत्तप्रदुक्तःकाव्यचित्रेण्यंतरे॥निबेपि
 सर्वतोत्तमगां॥नीरीनटयोषितोः॥वस्त्रौकसारशत्रुस्यश्रीदस्यनलिनीपुरे॥
 नवेकपिलधाराख्यास्वर्तदीतीर्थान्नदयोः॥श्री॥॥इतिरांतवर्गः॥॥लदि॥॥बलं
 गंधरसेरूपेच्छामनिष्ठैत्यसैन्ययोः॥बलोहालायुधेदेत्यजेदेबलित्तिवासये
 गवाद्यालकेबलाप्रोक्तापलंचोन्मानमांसयोः॥फलंहेतुसमुच्छेस्यात्फलकेयु
 ष्टिलोत्तयोः॥जातिफलेपिकंकोलेससबाणाग्रयोरपि॥फलन्यांतुपलीप्रादुस्ती
 फलायांफलंक्वचित्॥जलंगोकललेतिरेकीवेरचजडेन्यवत्यास्त्वलंक्वस्थान
 कजेष्पुङ्गुरेतिचेधमेखलः॥गलःसर्जरसेकंठेचलःकंपेचलाश्रयि॥दलंशस्त्रि
 छदोसेधावद्रव्येखंडपर्णयोः॥नलःपोरगलेरादिपिष्टदेवेकापीधरे॥नलीन

॥२१॥

नशीलायांतुनलितेतुनलंमतं॥तलंस्वरूपाधरयोखड्गमुष्टिचपेठयोः॥जा
 घातवारणेपिस्त्रालस्तालतरावपि॥मलंकिट्टेपुरीषेचपापेचक्षपणेमलः॥श
 लुंतुशकीखेलालोमिशलाजंगीगणविधौ॥खिलंप्रतवेदप्रदत्तेसारसहि
 मवेधयोः॥बिलंछिद्रेगुहायांचबलिउच्चैःश्रावद्वये॥छलंतुस्त्रलितेव्या
 व्याजेपुलंतुपुलिनेत्यवता॥पुलःस्यात्पुलकेचापिकुलंजनपदेष्टदे॥सजा
 तीयगणोगोत्रेदेदेपिकलितंकुलं॥कालोमत्तौमहाकालेसमयेयमक
 लयोः॥द्वल्लुट्टवृत्तिकालितुनीलीमंजिष्टयोरपि॥कालीगौर्याङ्गारकीटका
 लिकामाट्टजेदयोः॥नवांबुवाहृदेचपरीवादेपिचक्वचित्॥नलंलला
 टमदसोर्गलस्वंधमदीरुहोः॥शालःशालनृपेमस्यप्रदेनैसर्जपादपे॥शाला
 गृहेतरुस्वंधशाखागारैकदेशयोः॥मालंहेत्रेजनेमालोमालापुष्पादिदाम
 ति॥शालःपादपमात्रेस्यात्प्राकारेशंकुकुमे॥तालःकरतलेडंगुष्टमध्यमाया
 चसंमिते॥गीतकालक्रियामानेतालखड्गगादिमुष्टिषु॥द्रुमजेदेकरास्फालेता

लंतुहरितालके॥ वाद्य नांडेनुकां सप्रस्य चालिदिपिक्पने॥ जालंगवाक आना
 येकोरकेदंनदंजो जालोनीपुनेजालीकोशातकामुदाहता॥ व्यालोनुजंगमे
 रिश्वापदेदुष्टदंतिनि॥ नालंदं डेसरोजस्यनालीशाककदंबकेस्थलं नाजननेदेपि
 स्थालीस्यात्पाटलोषयो॥ कालंशीलोपकरणे कार्यासादिकावाससि॥ बालक
 चेशिशो नर्त्तकीवेरेश्चेत्तपुष्टयो॥ अलंकासां तरेनेधौवालिवालात्रुटीस्त्रि
 यो॥ चेलोनीचेयन्यवचेलमंशुकेगर्हितेन्यवत॥ नेलप्रवेनीलुकेचनिर्बुद्धि
 मुनिनेदयो॥ कालोवपालावुसैवेनेलकेपोत्रिचित्रयो॥ कोलाकणायं च
 येचकोलंचबदरीपले॥ शैलो नान्ततिशैलंतुशैलेयेताहृशैलके॥ शीलंस्व
 नावेसहनेनीलः तस्तेनगांतरे॥ नीलः कपीश्वरेनीलीरुक्लोछननेदयो॥ क
 लंस्तेपेतडाजेचसेन्यष्टप्रतीरयो॥ कलः पिचोन्नवेन्नलं ब्रह्मदारुविहायसो
 मूलनादोशिपायांस्याद्वेति कुंजेति केपिच॥ मूलं प्रदणो मृत्योकेतवेरोगयोग
 यो॥ मूलान्दुष्टवधार्थाय कीलकेपण्योपिति॥ स्खलं स्यात्पीवरेकूटेतिः प्रदे

॥२॥

पुनरंन्यवन॥ अक्षोरसस्यनेदेस्यादस्त्रिचांगेरिकोषधौ॥ शुक्रोयोगांतरेश्चेतेकुं
 रजतेमतं॥ मलः पात्रेकपालेचममनेदेबलियसि॥ मलो नक्षीचवाणस्यामलो नक्षक
 इष्यते॥ नक्षानकांचनलीस्यादोलआर्द्रं चस्तरणे॥ चुल्लचिल्लो मतैस्त्रिनेत्रेक्षिनादि
 पिल्लवत॥ आतापिनिनवेक्षिः चिल्लीस्यादोडवास्तुके॥ चुल्लीचितायामध्यानेव नि
 वाद्येषुदीरिता॥ क्लीवीरुधिसेतानेवक्कलेकुसुमांतरे॥ खल्लीतुहस्तपादावमह
 नाख्यरुजिस्तता॥ खल्लोवस्त्रप्रनेदेस्यान्निम्लचर्मणिचांतके॥ आलुगलंति काया
 स्यात्कंदनेचदेपोतके॥ पीलुगजेद्रुक्कोडेपरमाणुप्रस्तनयोः पीलुस्तालास्त्रिखंडेच
 मालुः पत्रलतास्त्रियोः शालुः कणायुद्धेस्याक्षोरकार्त्तयोषधेपिच॥ वलिश्चातरदंडेच
 जरया म्लथचर्मणि॥ उदरावयवेदेत्येकरूपजोपहारयोः गृहदारुविशेषेचगंधके
 चक्चिन्मतं॥ दोलायास्थानांतरेनीत्यांनेलास्यान्नेलकेमसौ॥ इलाकलत्रेसौम्य
 धरित्र्यांगविवाचिच॥ कीलाकापालिनिर्घातेरांकोज्वालेतुलवत॥ शिलाकुनयो

की४

क्रिष्टनरणेरागेसिन्निवाचिबुधस्त्रियां॥ नोजनेपी श्रमणस्या तडा लादुदितरिस्मता॥ आ
 तपोमौरुलुक्कयांशालाकापिविलोकाते॥ कलास्यान्मालरेहकौशल्यादावंशमात्रके॥ षोडशं
 शेचचंद्रस्यकलनाकाजयोः कला॥ कलेशुकेकलोलीणेष्यक्रमधुरधनौ॥ लोलाजीकाक
 मलयोलौलश्चलसट्कयोः॥ लीलांविदुःकेलिचिलासस्वेला शृंगारतावप्रतवक्रियासु॥
 देलामवज्ञानविलासयोश्चहालांमुगणानपतौचहालां॥ गोलास्मवीमणीकयोर्गोलरहानु
 सारतः॥ पात्रांचनेकुतश्चांचगोदावर्गचमंडलेअलिमुगपुष्पलिहोरानिस्तविशदाशये॥ आ
 लिपंतौचसरव्याचसेतौचपरीकीर्तिता॥ कलिस्यात्कलदे श्वरेकलिरंत्युगेयुधि॥ धलिःसंखां
 तरेरेणोडुलिस्तकमठेमुनौ॥ मौलिःकिरीटेधमिलेवंकेलिहमचडयोः॥ शालिस्तगंधमाज
 रिकलनादिषुचस्मृतः॥ पालिकैषिलताग्रेऽप्योपक्तावंचप्रदेशयोः॥ पालीप्रस्तेचप्रजायांजा
 तःस्मश्रुस्त्रियामपि॥ रूहीस्यादातपरुचिवर्त्तामुद्वर्तनाश्रुके॥ चक्षीस्यादजमोदायांपुष्पजे
 देपिवीरुधि॥ पक्षीकुटीग्रामकयोःपक्षःस्खलकुश्लयोः॥ तल्लीतलुन्यांतलस्तजलाधारंत
 रेपिच॥ ॥ लत्रि॥ ॥ कमलंसलिलेताम्रजलजेयोनिनेषजे॥ मृगप्रज्ञेदेकमलःकलमा
 श्रीवरस्त्रियोः॥ चपलःपारतेमीनेचोरकेप्रस्तरांतरेचपलाकलांमविद्युत्तुपुंश्चलीपि
 षालीषुच॥ चपलंरुणिकेशीध्रचपलश्चिकुरेचले॥ उपलःप्रस्तरेरत्नेशकंरायांस्तुतोपला

॥६॥

८ हे

उत्पलमांसस्यत्येस्यातकुष्टेदीचख्योपिरे॥ अनलोवसुदेवेग्रावनिलोवसुवारयोः॥ स
 कलंचविखंडेचरागवस्तुनिवक्तुलो॥ गरलंतुविषेमानेगरलंटेणश्लेके॥ तरलश्चंचलसि
 जेदारमध्यमणावपि॥ जामुरेचाथतरलायवागुसुर्योरपि॥ सरलःप्रकाष्टेस्यादुदारावक्र
 योरपि॥ कपिलोमुनिनेदेस्यात्यावकेचानपत्रके॥ कपिलाशिशपायांचरणकागोवि
 शेषयोः॥ पुंडरीककरिण्यांचपिंगेतुकपिलोन्यवत्॥ पललंचिलचलेस्यात्पललंचंक
 मांसयोः॥ पलालायातुधानेचपटलंछदिषिन्नजे॥ पिरकेनेत्रगेचतिलकेचपरिखदे॥
 जगलःपिष्टमदोचमेदकेचमनक्रमे॥ केतवखगलःखगेखगलीकागमातरि॥ दृढदारकते
 षजेखगलंतीलवाससि॥ पिषलोबोधिदृष्टेस्यात्किनेदेतिरंशुके॥ पिषलंवसतखे
 दनेदेपिसलिलंमते॥ कणायांपिषलीप्रोक्ताधवलःसुंदसेसिते॥ महेकेचाधवलीसो
 रनेय्यामुदीरिता॥ कुचलंचोत्पलेमुक्ताफलेपिबदरीफले॥ कुशलःशिक्षितेहेमपर्याप्ति
 मुक्ततोमुच॥ कुशलंमुशलंतुस्यादयोगेमुशलीमता॥ तालमुल्यामापणीगृहगोधिक
 योरपि॥ निचुलोहिजलतरौनिचुश्चलेनिचोलके॥ पिचुलोजांबुकेपिसादिकलेजलवा
 यसे॥ विपुलःपृथुलेगाधेमेरुपश्चिमनृत्ति॥ तुमलःकलिदृष्टेस्यात्तुमलंतुरणसंकु
 ले॥ बहुलःदृष्टपद्वैशितौचबहुलागवि॥ एलायोनीलिकायांचबहुलाःक्षतिकासुच॥

सु४

बहुलं प्रायः न ज्ञसो मातुलो दे मे न द्रुमे ॥ मातुलान्तरिधस्तेरे ॥ ब्रीदिने दे पि मातुल ॥ कु
 लं वाच्यं वहुने कुटिला सरिदे तरे ॥ जरिल स्तु जटामुने जटिलामां सिकोषधौ ॥ सुतलप्र
 तलौ चेति पातलं लुवन दये ॥ स्यातामहा लिका बधेततां गुलिः करे क्रमात् ॥ पितृलते ज
 सद्रये पितृलपि संगते ॥ पितृला तयपि स्थित्यतिस्तलं वर्तुने चले ॥ कुंतलः स्याद्यवे देशे के
 शलांगल योरपि ॥ ककरो नागराजः स्यात्ताम्रा प्रावारयोः क्रमौ ॥ कंबल स्यात्तरा संगे कंबल
 सलिले मतं ॥ शंबलं कलपाषेण मसरेषु मे सेरितं ॥ कंदल स्तु कपाले स्यादुपरागे न वां कुरे
 कलधनौ कंदली तु मृगहृद्विशेषयोः ॥ पिंगलः स्यान्मनोरुद्रे चंडाशोः पारिपार्श्वके
 निधिने दे च पावग्नौ पिंगलः कपिले न्यवत् ॥ वराचिकायां वेश्यायां पिंगला कुमुदस्त्रि
 यां ॥ जंगलोजलनिर्मुक्तौ देशे मांसे च जंगलं ॥ मंगले श्रेयसि श्वेतद्वयां मपि मंगला ॥ स
 वार्थरुहे चोपापि मंलं मलः कुजे ॥ कुडलं च लये पाशे कुडलं कर्णं नृषणे ॥ गुड्यां कां च
 नद्रौ च कुडलिसमुदीरिता ॥ स्यान्मंडलं दशराज के च देशे च बिंबे च कंदब के च ॥
 कुष्टप्रने दे पुपस्य के पि नृजं ने दे शुनि मंडलः स्यात् ॥ स्यादकुलं तु कलौ ले दंडे वा
 त कपाटयोः ॥ निर्मलं विमले विद्या निर्मला न्न कयोरपि ॥ शौकलं शुभ्रमास्य स्यात्
 विपि शिताशने ॥ पांशुलः पुंश्चलेश तोः खड्गो पांशुला लु वि ॥ संकुलं वाच्यं वद्यापे विस्पष्ट

॥५॥

थवचस्पि ॥ उज्जलो दीप्तशृंगारविशदेषु विकाशिति ॥ वंजुलो वेतसाशोकातिनिशेष
 थमंजुलं ॥ निकुंजेशबले मंजो जलरं कौतुमंजुलः ॥ पिंजलं तु दरिद्रा ने कुलमात्रे पिपेज
 लं ॥ पुंजलः संदरा करि पुंजलश्चात्मदेहयोः ॥ जंजलो देवता ने दे जंवीरे चापि जंजलः ॥ कुं
 जिलः श्यालके चोरे श्लोकषाया हरे कषे ॥ चंडिलो नापिते खातो हरवारस्तु शाकयोः ॥ ग्रं
 थिलो ग्रंथिसहिते करिं प्रौवीं कते ॥ वामिलो दांजिके वामे रामिलो रमणे स्मरे ॥ वार्दलं
 दुर्दिने मेला तंदाया मपि वार्दलः ॥ तंदुलाख्या विडंगे स्यात्ताध्यादितिकरे पि च ॥ वृषलः
 कथितः श्रेष्ठे चंद्रगुप्ते च वाजिनि ॥ निःकलस्तु कलाश्रुते नष्टबीजे तु जेद्यवत् ॥ पाकलं
 कुष्टं नैष जेपाकलः कुंजस्वरे ॥ पाचलो राधन प्रयेष निस्सारपि ॥ माचलो छदि चोरे स्यात्
 ग्राहयादसि चामये ॥ पाटलः श्वेतरं स्यात्ताशुब्रीहौ च पाटलः ॥ पाटलो पाटलापि स
 अस्याः पुष्पोपि पाटला ॥ लोहलः शृंगलाचार्ये न वेदव्यक्तवाचिनि ॥ लोहलो मघने दे स्यात्
 कोहलः स्यान्मुनावपि ॥ तैतिलो दांजिके प्रोक्तः स्तेतिलं करणं तरे ॥ हेमलः स्वर्णकरे स्यात्
 रुक्मलाससिलां तरे ॥ श्यामलो मेचकेश्वस्ते कोमलं मृदुले जले ॥ काष्ठलः कतुवैरो जे म
 रुदेशवसंतयोः ॥ पेचलो रुचिरे दंके गो किलो मुशले हले ॥ गौरिलो लोहकरो स्यात्गौरिलो
 गौरसर्पये ॥ फेनिलः स्यादरिष्टे च फेनिलबदरी फले ॥ मदनस्पकपे चाथवाच्यवत्केन वत्

लानल७

पि॥ शैवलाख्यातुशैवालेशैलेयेचैपिशैवलं॥ शैवलं पद्मकाष्ठेपिशैवलं च जलां च
 ले॥ १०॥ सीतलं पुष्पकासीसैशैलाजमलयोद्भवं॥ नवेदासनपण्याचशीतलाशि
 शिरेन्यवत॥ कक्षो लोहर्षउद्धासेकक्षोलःपरिपथिनि॥ पटोलातोषधीवस्तुनिध
 दोज्योत्तिपापटोत्यपि॥ काकोलोविषनेदेस्यातद्रोणकाककुलाजयोः॥ तमा
 स्तिलवेखड्रेतापिष्ठतरुणद्रुमे॥ सुवेलः प्रणतेशातेसुवेलः पर्वतांतरे॥ अवेलः
 स्तपलापेस्यादवेलापगच्छकैकपालेशिरसोस्मिन्स्यात्तघटादेशकलेत्रजेकु
 छुरोगविषेशेचगोपालो गोपक्षपयो॥ बिडालस्तान्नकलशेकिडालो लोहगृध
 के॥ पातालं नागकैलोस्यात्पातालवडवानले॥ प्रवालौ वक्षकीदंडे विद्रुमे
 नवपक्षवे॥ अगलकुटिलेसर्जरसेसमददतिनि॥ करालो दंतुरेतुगेकरालेतुक
 ठेरके॥ करालो धूणतैलेपिकरालो जीषलेन्यवत॥ शृगालो जंबुकेदेत्ये शृगाल
 डमतिविद्रुः॥ कुलाखः कुतकारेस्यात्कुतकुनेको शिकेपिच॥ उदालो युगपत्रे
 पिकुडालो जमिदारके॥ बिडालो नेत्रपिडेपिबिडालो पिखगांतरे॥ जंबालं
 वलेपं केकीला लेखधिरजले॥ वंगलः शूलयो युद्धेनौ काया श्रवतित्रके॥ अ
 तीलं चापि त्रक्षेस्यादातीलं च नयानके॥ नातीलेनातिगतां दिवं कुरेचो

॥ १५ ॥

त्रमः स्त्रिया॥ उतफुल्लकरणेस्त्रीणामुतालेपिविकस्वरे॥ शया लुः स्यादजगरेति द्राश
 लेपिकुक्कुरे॥ श्रमालुदोदृष्ट्याचश्रमावतितुवा न्यवत॥ लाङ्गलं मेहनेपुच्छेशादोली
 कसांतरे॥ व्याघ्रचपश्रुतेदेचसहस्रतनुरश्चित॥ वातलो वातसंघातेवातलेमास्ता
 सदे॥ कुक्कुलं शकुसंकीर्णश्चनेचापितुषानले॥ कुक्कुलः स्यात्तद्वकुलंतुहो मे श्रुक्ता
 श्रुकेपिच॥ जंबुलो जंबुविटपेजंबुलः क्रकचक्षदे॥ उतालो होमक्रोडेस्यात्ताजेचोत्रा
 लउतरे॥ श्रेष्ठेपिविकरालेपिस्मादुत्रालप्रवंगमे॥ चडालात्तचटायोस्यात्तचडावतितु
 वान्यवत॥ विषालाचिरवारुणां विशालो ज्ञयनीपुरी॥ विशालो दृक्नेदेपिविशालं पु
 शुलेन्यवत॥ मेखलाखड्गबंधेस्यात्कांचीशैलनितंबयो॥ मेखलापुस्कटीवस्त्रबंधे
 पिनिगडेन्यवत॥ कुचलाविद्यकल्यांतुकुचेलसुकुवाससी॥ अचलावमुधायोस्या
 तअचलः शैलकीलयो॥ चंचलातुतडिह्रक्याः चंचलः कामुकेनिले॥ इचलास्तार
 कानेदेइचलोदैत्यमस्ययो॥ पिछलाशात्मलीसिंधुतदयोतेकि कामुच॥ पिछला
 शिंषपायांचपिछलोविज्जलेन्यवत॥ सप्तलापाटलो जुजानवमालिकयोरपि॥ त्रव
 च्चर्माकपायांचमहिलातीरुगुंद्रयो॥ सिधलाप्रमथ्येस्येतसिधमलश्रवीलासि
 नि॥ संधलातुसुरंगायांतदीमंदिरयोरपि॥ रसांलासज्जिकायांस्यात्तज्जिह्वादूर्वाविदा

रिषु॥ रसालं सिरुवे बोले रसालाश्च कुचड्यो॥ विमलाशातनायां स्यात्तनुवो नेदे
 च निर्मले॥ विमलो चा मला लक्ष्माममलं विशदे त्रके॥ श्रीफली नीलिका धात्रो म
 करे श्रीफलः स्मृतः॥ खंडाली तेलमाने च सरसिका मुकसियो॥ पातिली वागुरायां
 स्यात्तारी नृत्पात्र नेदयो॥ जाबली श्रु कशिवा स्यात्तज्जगलश्च कपिजले जागुली वि
 षविद्यायां जागुलं जालिनी फले॥ बदली वैजयंता चा नायां हरिणा तरे॥ जागुली ज
 लपिषायां जागुलं कुसुमानं ने॥ शरेपि लांगले ता लगु ददारु विशेषयो॥ अंगुली क
 रशाखायां कर्णिकायां गजस्य च॥ बदली शास्मली प्रश्रीडि बिकासु च कथ्यते॥ नकुली
 कर्कटि मां स्यात् नकुलं पांडवे पत्नौ॥ नाकुली कुकुटी वंदे नाकुली च व्यरा स्यो॥ नेपा
 ली नवमाली मनः शिला सुबहा सुचा॥ ताबली नागवल्ली च तांबूलं क्रमुके पिचा॥ पा
 चाली पुत्रिका पयोः पंचालो जन देशयो॥ शास्मली तरु नेदे स्यात्तद्रूप नेदे च शास्मली
 केवली ज्ञान नेदे स्यात्त केवलस्यै क रू स्यो॥ नितो ते केवलं चोक्तं केवलः कुरुने क
 चित्॥ कादली तु तरुणां स्यात्त कादले च पशु प्रयो॥ वाघनाडु विषो तु कादला का ॥ ६६ ॥
 दलः खगौ॥ गधोली वरटी च प्राशटी पुक शिता बुधै॥ अजलि कुडवे विद्यादे जलिः कर
 संपुटे॥ ॥ लचा॥ छ॥ मदकलः स्यात्त ने मदे ना वक्रवाचि च॥ नवे कलः कलः सज्जं स

कोलादले पिचा॥ स्मृतो विचकिलो मल्ली प्रनेदे दमने पिचा॥ बृहन्नलोगुडा के
 शे महापोट प्रले पिचा॥ परिमलो विमर्द पित्या न्महरां घवत्॥ रतो मर्द विकसदे प२
 हरागादि सौर ने॥ यवफलः स्मृतो वेणो मां सी कुठर ऊयो पिरा॥ मुक्ताफलं तु क
 रीरे मौक्तिके लवली फले॥ सदाफलं स्कंध फले नालिकेरेणु दंबरे॥ विदुः कर्म
 फलं कर्म रंगे कर्म विपा कयो॥ मयुफलं महा काले बदल्या मयु फल्यपि॥ नवे
 दायु फलं शक्र का मुं के कर के पिचा॥ दलादलो विषे ज्येष्ठां दयला दला दयोरपि जे ६
 कृतदलं कौतुके स्यात्प्रशस्ते पिकु त दला॥ दला मल मदन के तथा मरु ब के पिचा॥
 महा बलं शीर्ष के स्यात्पर्कटी गदं नां यो ॥ बला द्यो पि महा बलः॥ नवे दति बलायां
 चरवत माली बलाद के॥ धमे पि कुंदरालः स्या पर्कटी गदं नां डयो॥ महा काल स्त्रि
 नय ना किम्य के प्रशयां तरे॥ मरु नीली नंगरा जे मणी नाग विशेषयो॥ नवे द
 दु फलानि रव्या मलयु पं नो वृक्षयो॥ जला जलं स्वतो वारि निर्गमेशे वले पिचा॥ गव
 री लोला वाटे स्यात्त श्रुत स्मृ लो पले गिरो उरु खलं गुग्गु लो स्यात्त डं न्यर्थे शुल खलं॥
 चक्रवालो द्वि नेदे स्यात्त चक्रवालं तु मंडले॥ स्मृतपो रगलः काशे नले पो टगु लो रूपे॥ द
 स्ति मध्ना न्म मा तंगे दस्ति मध्ना विनाय के॥ नस्मत्तलं ग्रा मरुटे पां शुवर्षे दि मे पिचा॥

बालकेलिका ला ला पो सिंगा ना द तं लेखने ॥ कतं डं स्या कर के प र्क पाद पे पि च ॥ अह
 मा ला रु स्त्रे स्या त्स्त्रु रं घ त्या म पि स्म ता ॥ मणि मा ला स्म ता दारे स्त्री णा दं त रु तां त रे ॥
 धनि का ला स्म ता वे णो का द ला वी ण यो र पि ॥ रज स्व ला पु ष्य व त्या सै र ने य रज स्व लः
 एका ष्ठी ला म पी प्रा दुः शिव म स्त्रो ष धी नि दि ॥ अति ब ला बा ला ने दे मा ब ले ति ब ला
 म तः ॥ न द्र का ली लु गं धो त्या मु ना या मो ष धी नि दि ॥ हरि ता ली न तो र रे वा द वी र व
 द्रु ता च ॥ अ क पा ली स्म ता क द्यां धा त्रि का परि रं त यो ॥ ग ध फ लि प्रि यं गो स्या को र्के
 चं प क पि च ॥ ॥ ॥ ल पं ॥ ॥ आ सु ती ब ल इ त्या र्वा क ल्य पा ल क य ज्व नो ॥ स्या त्या दु
 ७ ल कं च श्वे त कं ब ले च शि लां त रे ॥ एक कुं ड ल इ त्यो ष सौ नं दि नि ध ना धि पे ॥ न वे दु रं ड
 पा ल लु स र्प म स्य प्र ने द यो ॥ नृ पी ट पा ल नि छं ति के ति पा त स मु द्र यो ॥ न वे सु ब त
 ता ली तु ॥ द ति का या शि रः स्त्र जि ॥ ॥ इ ति लां त वर्गः ॥ ॥ ॥ वै कं ॥ वं प्र चे त सि जा नी या
 दि वा र्थे च त द व यं ॥ स्व द्वा ता वा त म ध न यो रा मी ये च प्र च र्य ते ॥ ॥ व द्धि ॥ ॥ न वः स
 सा र स त्रा सि श्रे यः शं कर ज न्म सु ॥ द वो दा व इ ति र्वा तो व ना शि व न यो र पि ॥ द्र वः प्र द्रा
 व र स यो गी नो न र्म णि चि द्र वे ॥ ध व प त्या न रे ध र्ते व द्ध ने दे पि की र्ति तः ॥ उ वो वे जि नि
 वे गे स्या त् दं द्र पु ष्ये ज वा म ता ॥ ल वो ले शे वि ला से च छे द ने रा म द ने ने ॥ ल वः का र

॥ २७ ॥

७ ल ड वं ते के कु ल के ने ल के व पो ॥ श द क्ति ग तो ल हे चं ड ल ल का क यो ॥ प्र वं गं घ र्णे
 प्रा क्तं के व ती म के पि च ॥ द वो य डो त रा द्वा ने नि दे शे पि द वो म तः ॥ श वो म तो श व ती रे
 स वः स धा न य इ यो ॥ क वः कृ ते रा जि का या न व न व्ये स त वे वि दुः ॥ ध्रु का की ले शि व श
 को व सो यो गे व ट मु ने ॥ ध्रु वा म र्वा शा ल प र्णो गी ति स्तु ग ने द यो र पि ॥ ध्रु वं तु नि श्रि
 ते त र्के नि श्व ले शा श्व ते न्य व त ॥ श्र वा र्वा स ल की म र्वा श्र ने दे पु च वि श्र ता ॥ शि व
 तो हे सु वि न द्रे स लि ले ष शि वो द रे ॥ वे दे यो गां त रे की ले बा लु के गु गु ला व पि ॥ पुं ड
 ७ ल री क रु ते चा पि शि वा रुं टी म र्वा ष यो ॥ अ न म म ल की गी री को ष्ठी मु क्त फ ला सु च ॥
 दि वं स्व र्गे अं त रि हे ली वं शं ठे ष पो रु षे ॥ जी वो द हे प्र ने दे स्या त जी वं जी वा च जी वि
 से ॥ प्र णि ति गी ष तो ॥ जी वा जी वं ति का न्द्र स्यो वी शि च्च जि त व त्रि षु ॥ व्या या य म म पि जी
 ना म्या जी वं जी वा च जी वि ते ॥ ना व स्व ता वे चि प्रा ये चे षा म ता म ज न्म सु ॥ क्रि या ली ला
 प दार्थे षु बु ध जं तु वि न्ति षु ॥ दे वः सु रे ध ने रा डी दे व मा स्या त मं द्रि यो ॥ दे वी नृ दारि का
 यां च ते ज नी स्य क यो र पि ॥ स चं गु णे पि शा चा दौ ब ले द्र व्य स्व त व यो ॥ आ त ले व्य व सा
 ये चा वि ते प्रा णि षु जं तु षु ॥ सां वं सा म वि दा हि र्ण्ये व पा पे मु नो वि दुः ॥ कि ए व पा पे मु रा
 बी जे वि चं तु श्री फ ले प ले ॥ त वं वा द्य प्र ने दे स्या त्स्वरूपे पर मा त्म नि ॥ इ स्व र व वि नो

शहोवामनार्थन्यगर्थयोः॥विश्वसमस्तजगतोर्ध्वोदेवेषु॥नागरे॥विश्वावतिविषा
 यास्यादश्वःपुंनेदवाजिनोः॥पार्श्वककाधोचक्रोपांतेपशुगणोपिच॥प्राधसुप्रणतेवा
 तिदरवत्मानिधधनो॥पक्वपरिणितार्थस्यादिनाशानिमुखिपिच॥घंघोरदस्येकलदेघं
 दंमिथुनयुग्मयोः॥ऊर्ध्वस्यादुष्टितेतुंगेचोपरिष्टादपिस्ततः॥धाववद्योःस्वर्गलोकेग
 गतेचप्रयुज्यते॥अविशैलेरवामेषेनवेन्मृषरुक्चले॥रुतुमत्यामविप्रोत्रोशिवि
 तुजिनृपांतरे॥कविःकाव्यकरेशरेबीकविर्वा॥स्त्रीकिश्रुक्रयोः॥कविस्वस्तीनेक
 शिताछविःशोभास्त्वोर्मता॥ग्रीवापिकंधरौघास्यात्रछिरया मर्षिष्यते॥रेवातरंगि
 णीतेदेरेवानीत्यास्मरन्निगां॥लदाकरंजनेदेस्यफलेवाद्यवगांतरे॥नीवीपरि
 पणोग्रयोस्त्रीणांजघनवाससि॥पृथ्वात्तमोपृथोदिगुपत्रिकाहृक्कजीरयोः॥लघ्वा
 हृस्वविवर्क्याप्रनेदेस्यदनस्यच॥॥वत्रि॥॥प्रनवोजलमूलस्याजुन्मत्तमो
 पराक्रमे॥आद्योपलब्धयोस्तानेविचनवोनिचतौधने॥प्रसवस्तुफलेपुष्पेवृक्षाणां
 गतमौचने॥लोकोत्यादेचसचिवसदायेमन्त्रिस्ततः॥कितवोधर्तवन्मतेवचके
 कनकाकपे॥त्रिदिवस्त्रिदशावासेत्रिदिवासदंतरे॥वस्त्रवस्तुपकारेस्याहोमसेनेपि
 गोदुहि॥पक्षवःकिशैलेशिगेविटपेविस्तरेबले॥शृंगारलक्ररागेपिविप्रवस्तुपलाय

३ लि

॥६८॥

रि २

नो॥बुधौचपुंगवःश्रेष्ठेषुनेषेपजांतरे॥ऊर्ध्वोमातुलेविस्तारस्तवेक्रतुपावके॥
 उसवोमदउमकेदृष्टाप्रसरकोपयोः॥केशवोवास्तुदेवस्यातपुन्तागेकेशवत्यपि॥
 कैतवंतुछलेद्यतेफेरवोऊर्ध्वकेस्तपो॥गौरवोतरकेघोरैकैतवःकितवेरिपौ॥कैरवंकु
 तुदेप्रोक्तचंद्रिकायांतुवैरवी॥नैरवंनीषणोगर्तनैरवःसमुदाहृतः॥सैधवोमणिम
 थैपिसिंधुदेशोद्गवाश्रयो॥वाडवंकरणेस्त्रिणांमौर्वेविप्रेपिवाडवः॥वाडवंवडवासं
 धेवाडवोरसमातयोः॥आश्रवःस्यात्प्रतिज्ञानेकेशेचवचनेस्त्रितो॥शात्रवंजावस
 दत्योःशत्रूणांशात्रवोद्विषि॥माधवस्तुवसंतेस्याद्वेशाखिगुरुद्वजे॥माधवीमदि
 यांचक्रुद्वन्यामपिमुक्तके॥मधुनःशर्करायांचगलवोश्रुनिलोद्ययाः॥आर्तवस्तु
 संज्ञतेस्त्रीरजःपुष्पयोरपि॥नार्गवःपरशुरामेस्यातगजेशुक्रेमुधन्यति॥नार्गवीदे
 मवत्यांचकमलासितदूर्वयोः॥आहवःसंगरेयागेराघवोरघुवंशजे॥महमीनप्रनेदे
 पिजलधेरावःस्तुतः॥ताडवंकथितंनृत्येदणनेदेपितांडवं॥निहवंनिहंतौविद्याव
 विश्वासापलापयोः॥संज्ञवःकथितोदेतावुत्तमेलकेपिच॥आधारानतिरिक्तत्वा
 आधेयस्यचसंज्ञवः॥बांधवोबंधुमुहृदापंचत्वंनिधनेस्ततः॥पंचानामपिनावाय

प्रतावशक्तितेजसोः॥अनावस्यादसत्रायामनावोनिधनेपिच॥विनावस्यात्परि
चित्तौकाम्यस्यादीपनेपिच॥निषावःसुर्पवनेराजमाषेषुदिरितः॥पावनेशंबिकाया
चनिःपाकोनिर्विकल्पके॥सुग्रीवःशोचनग्रीवेसुग्रीवो नराधिपे॥राजिवाख्यामृगेम
सेपनेराजोपजीविनि॥गोडीवगांडिवोजिह्वाःकोदंडेकामुकेपिच॥अक्षीवंवास
वेविद्यादमत्रेहीवमन्यवत्॥पार्थिवो नृपतो नृमेर्विकारेपार्थिवोन्यवत्॥पार्थिवी
स्यादुमायांचादीदिविधिषणात्रयोः॥प्रसेवःकथितो धीरवीणांगस्य तयोरपि॥वद
वास्यां नृनदास्योःस्त्रीविशेषेद्विजस्त्रियं॥कारवीमधुरादीप्यत्वकात्री नृसूजीरके
सुखवीकारवोलास्या नृसूजीरकजीरयोः॥॥वच॥॥नवेदनीषवस्तानेमद्यसं
धानयद्गयोः॥उपपन्नवःसिद्धकेयेविप्रवोत्यातयोरपि॥परिपन्नवश्चलेस्यातःआकले
पिपरिपन्नवः॥कुशीवस्तुवास्त्वमीको नदयाचकयोरपि॥रामपुत्रौकुशलवोवेकोत्रो
त्रौकुशीलवौ॥अपह्नवोपलापेचस्तेहचापह्नवोमतः॥परान्नवतिरस्कारेविनाशेपि
परान्नवः॥नवेत्यारसपारस्त्रेणेश्चासुतेद्विजातः॥शाल्म्यादीनवोदोषपरिक्लि
ष्टदुरंतयोः॥विदुःशीतशिवंशम्यांशेलेयशंपुष्पयोः॥सैधवेपिपुटग्रीवोगर्गरीता

१७

॥६६॥

मृकुं नयोः॥धार्मार्गवस्तुपामार्गदेवदास्यामपिस्मृतः॥अनुजावःप्रतावेचनिश्चये
नावस्तचने॥बलदेवस्ततोवातेकालंदीनेदनेपिच॥बलदेवामपिप्रादुस्त्रायमाणो
षधे बुधा॥जलबिम्बस्तुपंचागेककटेजलचत्रोरोहिताश्रोबृहद्गान्धोदरिश्चंद्रक
पात्मजे॥सहदेवाबलत्नादंडोत्पलासखीनेषजे॥सहदेवीसर्पेप्यरिण्यासहदेवश्चापांड
वे॥जीवंजीवश्चकोरेस्याद्रुमपक्षिविशेषयोः॥॥वपं॥॥आशितं नवमन्ताद्योत्प्लावा
णासिसंनवः॥॥इतिवांतवर्गः॥॥शदि॥॥वशमायत्रतायास्यातवशमिच्छाप्रचुत्व
योः॥वशावंध्यामुतासोषास्त्रीगवीकरिणीषुच॥कुशोरामसुतेदनेयोक्तेदीपकु
शांजने॥कुशीपालेपिवासायांकुशापापिष्टमत्रयोः॥कुशावाच्यवदाख्यातःस्पशप्र
णधियुद्धयोः॥शशोगंधरसेलोघ्रस्यात्यशौपुरुषांतरे॥दशस्तुसंगमेसूर्यचंद्रयोस्व
लोकने॥पक्षांतवैदिकविधौदर्शश्चसमुदाहृतः॥स्पशोरुजायांदातेचस्पशनेस्पश
केपिच॥विदुस्तोवैश्यमनुजप्रवेशेषुमनीषिनिः॥पाशःकचानांसघातकृणाते
शोचनतोतकः॥छत्रोघातंतिदार्थपाशःपद्मादिवंधने॥नाशपालायनेप्रोक्तोनिधना
नुपलंनयोः॥काशस्तृणस्यातकवशौवाराणस्यांचपाश्यथ॥केशोदेत्यांतरेवालेहीवे

२८

५ पु

रेचप्रचेतसि॥की शोर्गदिबरेप्रोक्तः कीशः शाखा मृगेपि च॥ईशः प्रनौशंकरे स्यात्तई
शाखा गलदडके॥वेशो वेश्या गृहे प्रोक्तो नेपथ्ये गृहमात्रके॥लेशो दुखेपिरागादौ
व्यवसायेपि च क्वचित्॥वंशो वंशो कुले वर्ज्येष्टस्यावयवेपि च॥देशस्या तखंडने दो
षे देशो मर्मणि कीर्तितः॥सर्पकृतेपि सन्नादवनमद्विकयोरपि॥अंशुलेशो रवोरश्मौ आ
शुब्रीहो च सत्तरे॥पांशुर्धूलिसमार्थचिरसंचितगोमये॥दृक् दृशते लोचने च दृश
द्वौ वीरुणेपि च॥दशा वक्त्रा ववस्त्रायां वक्त्रांशे सुदृशा अपि॥निशादारु हरिद्रायां स्या
त्रिगामा हरिद्रयो॥आशा तृष्णादिशोत्रोक्ता राशिर्मेघादिपुंजयोः॥पेशी पल्लवपिंडां च
मांसां खड्गपिधानके॥अंडने देपि पेशी स्यात्सुपुंर्वक्त्रेण पेपि च॥॥शत्रि॥॥कपिशः सि
द्धकेश्यावमाधव्यां कपिशी मता॥कुलिशो मसने दे स्यात्तदंजो लो कुलिशं मता॥वि
वशः स्यादवस्यात्मारिष्टदुष्टधियोरपि॥निस्त्रिशो निर्दये खड्गे सदृशं तच्चित्तं स मे॥बा
लिशः शावके मूर्खे लोमशो लोमसंयुजो॥मंदकं चापिकाशी शश्रुगाली जटिला सुच
लोमशश्च कशं व्याचमर्कटी कावजं घयो॥महा मेदाति बलयोः शक्ति नि निदिचेष्ट
तो॥विकाशो विजने व्यक्तौ संकाशः सदृशंति के॥प्रकाशोति प्रसिद्धे स्यात्प्रहसातपयोः

॥१००॥

३ स्त्रीप

सुटे॥निकाशोति श्रयेतु खेटताशो निर्दये खले॥की नाशः कर्षकं कूपे रुतां तोपांशु
घाति नो॥सुखांशो राजति निशेशो च नो मप्रचेतसो॥पिगाशो मसज्जिदे स्यात्त्रयाप
तावपि॥पिगाशी नलिकायां च पिगाशं जात्यकां चने॥पलाशः किंशुकेशां राहसे द
रिते न्यवत॥पत्रे पलाशं संवेशः शयने वसनेपि च॥निवेशः शिबिरोद्वाह विन्यासेषु प्र
काशितः॥निवेशो मसुते नो गे निवेशो वेतनेपि च॥प्रदेशो देशमात्रे स्यात्तर्ज्जन्त्यगु
ष्टसंमिते॥नित्रावपि प्रदेशः स्यात्प्रदेशो न्यर्षदेशयोः॥निदेशः शासनोपांत नापणे
प्रयुज्यते॥आदेशो दर्पणे टीका प्रतिपुस्तकयोरपि॥कर्कशैः पुरुषैः क्रूरैः रूपेण ति
दयेदृढे॥इक्षोसादसिक काशमर्दकं पिधयोरपि॥गिरीशो वाक्यतौरुद्रे गिरीशो प्रप
तावपि॥उडीशो ग्रंथने दे स्यात्त उडीशश्चंडिकापती॥सुगीशः शंकरे चंद्रपक्षिशस्ता
हर्षिष्ठयोः॥उपांशुर्जनेपे दे स्यादुपांशु विजने व्ययं॥दुःस्पर्शरिव्या रवरस्पर्शकं टका
यां यवासके॥विपाशाख्या सरिद्धे दपाशवर्जिगो मता॥विकेशी पटुवर्तस्यादिकेशी
निःकचस्त्रियां॥कवेशी बल्वजेषु स्यात्त कवेशः शैवले वटे॥॥शचा॥॥अपदेशः
स्मृतौ लक्ष्ये निमित्तव्याजयोरपि॥गुडाकेशयश्च पतौ तथा स्यान्मध्यपांडवे॥जीवितेशो
यमेकां ते जीवितो जीविताधिपो॥पुरोडाशो दर्विर्न देवमस्यापिष्टकस्य च॥रसे सोमलता

योचदुतशेषेचकिर्तितः॥परीवेषःपरिवृतौमानोऽसविधमंडले॥प्रतिकाशःसहायेस्याव
 तारपुरोगयोः॥उपस्पर्शःस्पर्शमात्रेस्तानाचमुनयोरपि॥नृनिस्पृकचैश्चनरयोःरु
 कस्याश्चलेशनोः॥अपल्लेशोपशब्दस्याज्ञाषाज्ञेदावपातयोः॥उपदेशोविदेशोचमेदुरो
 पिवर्तते॥खंडपशुःपशुरामेशकरेचर्णपिलेति॥खंडाप्रत्ययकज्ञेषजसिद्धिवातनयपि
 च॥पादयाशीखदुकायाश्चखलाकटकेपिच॥स्मृतापंचदशीपूर्णमास्यमावासाय
 रपि॥॥इतिशांतवर्गः॥॥षडि॥॥वृषःस्यादासकेधर्मेसौरजेयेचशुक्रले॥पुंराश
 नेदजोऽग्न्याश्विषिकश्चैवयोरपि॥कपिकश्चौराप्रोक्तावतिनामासनेवर्षा॥विषंतु
 रलेतोयेतिविषायाविषाजवेत्ता॥तुषोधात्यात्यचिरव्यातोविनीतकतरावपि॥मिषंच
 स्पर्शनेयाजेतर्षोत्तिस्मापिपासयोः॥वर्षसंवसरेवृष्टौजबदीपेघनेषिबु॥प्रावृद्धा
 लेतुवर्षाःस्फुःवर्षःवर्षणमानयोः॥माषोब्रीहंतरेत्तत्स्वमानवृद्धाषत्तदयोः॥मेषा
 राशिविशेषेस्यात्कुरणेत्तेषजांतरे॥शेषःसंवर्षलेनतेउपयुक्तेतरेवधे॥प्रसादाजिज
 तिमायेदानेशेषाचकीर्तिता॥शेषस्तृशोषणेरजयस्तस्यपिनिगद्यते॥दोषःस्यादृष
 योपापदोषारात्रौतुजेपिच॥कोस्तृषकुड्मलेपात्रेदिव्येखद्वपिधानके॥जातिकोषे
 र्घशास्त्रेचपेश्याशब्दादिसंग्रहे॥घोषस्तृघोषलेधानगोपालाजीरपक्षिषु॥घोषातु

॥१०१॥

षि३

शतपुष्पायांघोषःकांस्तेबुद्धनो॥प्रेषःस्यात्प्रेषणेत्तेशेर्मर्दलोन्मानयोरपि॥पौषोमा
 सविशेषेस्यात्पौषंतुमदयुद्धयोः॥चिदकांतोव्यवसायेचडिगीषायांरुचौगिरि॥विदु
 व्यापनेचविष्टायांशुषिशोषविलेपिच॥रुद्धवैदवशिष्टादौदीधितावपिपद्यते॥उषाव
 णस्ताराशोरुषःकामितिगुण्युलो॥रुषाणागवलायांस्यादेसारिणिरुषोमतः॥क
 र्षःकरीषदहनेकुल्यायामपिचेष्यते॥॥षत्रि॥निकषःश्याणफलकेनिकषायातुमा
 तरि॥नद्युषोराडिजुडगेकलुपंचाविलोतसौ॥विलिपंकल्मषेरागेप्यपराधेपिवि
 लिपं॥निमेषनिमेषकालप्रज्ञेदेहिनिमीलने॥परुषककुंरुस्याहेनिष्टुरवचस्य
 पि॥पुरुषःपुरुषसांख्येचपुन्रागपादयोः॥पौरुषपुरुषस्योक्तंनावेकमेणितेउसि॥वृ
 विस्रतदोपाणिनमानेत्रिषुपौरुषं॥कल्मषोराक्षसेहस्तेकल्माषःतृक्षपांडुरो॥कु
 ल्माषोयवकेप्रोक्तःकुल्माषंकाजिकेपिच॥उष्णंषंतुशिरोवेष्टिकिराटेचक्रणंतरे
 तरिषशोऽननाकारेतेलेख्यव्यवसाययोः॥रौहिषंकलणेइयंरौहिषोदरिणांतरे॥वि
 श्लेषःस्याद्विघटनिविश्लेषोविधुरेपिच॥प्रदोषःकालज्ञेदेस्यात्प्रदोषोदोषदृष्टो॥अ
 तीषुःप्रग्रहरश्चोप्रत्युषोदमुविवसो॥गंदूषोमुखपूतोस्याकरिदस्तागुलावपि॥प्र
 सृतोन्मितेचशैलृषःकथितोतटविलिप्योः॥मारिषशाकज्ञेदेस्यात्मारिषादहमातरि॥

नाद्योऽन्नाभांरिश्वायेताविषः कनकं बुधो॥ आनिघं पललेलो जेसं नो गोचो च
 शोरपि आनिघं सुंदराकरे रूपादिविषये पिचा॥ आकर्षः शारिपलके पाशं के द्युतदं पि
 ये॥ आकर्षणे पिचा कर्षः कोदंडा न्यासवस्तुनि॥ संदुर्षमा दुःखद्वियां प्रमोदे पिप्रते
 जने॥ शुश्रूषा श्रोतुमिच्छायां परिचर्या कथो नयो॥ डिगीषा देतुमिच्छायां॥ व्यवसायाप्र
 हर्षो यो॥ महिषी नृपपत्न्यां च सौरभ्या तोषधी निदि॥ ॥ पचा॥ ॥ अनिमिषः सुरेमये
 पलकषो लुक्कषो॥ अनुकषेरिथस्याधः स्थितदारुणि चेषते॥ अनुतर्षः सुरापानपा
 त्रे दृष्टान्ति लाषयो॥ वातरूषस्तवा तरोच च यो शत्रुकारुके॥ अंबरीषरणे न्नाष्ट्रे
 षांबरीषो नृपातरे॥ मातृदोस्वदपरशावात्मा तव विशोरयो॥ परिघोषो निदाते स्याद
 वाचो जलदधुनो॥ नदिघोषो जु नरे घेघोषे तदि जतस्य च॥ मादाघोषत तदायुमया
 घोषो तिघोषणे॥ स्मृता कर्कटशृङ्गा च महाघोषान्तीषितिः॥ विपुरुषः विनरे स्या
 तलोक जे देयलंबुषः॥ छर्दने लंबुषा प्रोक्ता गौडी रिस्वर्गविस्मयो॥ पलकषा गोक्षुरक
 रास्ता गुणु लुविश्रुके॥ मुंडीरी लाक्योश्चापिराक्षु सेपि पलकषः॥ ॥ दापांतवर्गः॥ ॥
 सदि॥ ॥ रसो गंधसेखादेति क्ता दो विषरागयो॥ शृंगारा दो प्रचे वीये दै ह धातुं बुपा
 रदो॥ रसा तु सत्त्वकी पाग जिह्वा धरणि कं गुणु॥ नासो नासिसमाख्या तो गोष्ठ कुकुटग

॥१०२॥

ध्रयो॥ दासः श्रेष्ठे दासपात्रे नृत्तधी वरयोरपि॥ दासिवेद्यां च क्रियां चुरासः कोला हले
 धनो॥ ताषा शृंखलके रासः क्रीडाया मपि गोदुहं॥ वासः सुवर्णचूडे स्यात्प्रज्ञे देवि
 शुपर्वण॥ नाः प्रजावे मयूषे च माः स्मृतश्चंद्रमासयो॥ अदपरस्मिन्नत्रापि गोसां
 धरसोषयो॥ वसतर्पकपल्लवि वर्षे वसंतु वक्रसि॥ गुमं संवेदरे जे दे सत्त्वके ग्रं
 थिपर्णके॥ वासो जे दे पवस्वने वा स्या सो दाट रूषके॥ व्यासो मुनी स्यादि स्तारत्रा
 सो न्नीमलि दोषयो॥ दसो विदुर्ग जे दे स्याद के विस्मो दयातार॥ योगिमात्रा वि
 जे दे पु परमात्मनि कसरे॥ निखोजे नृप तो दसः शारीर मरुदं तरे॥ असः स्वधे वि
 नागे चक सो दे त्या तरे स्मृतः॥ कास्ये च कास्यपात्रे च मान जे दे चकीर्तितः॥ मांस स्या
 दां मिषे मांसी कं कोली जटयोरपि॥ वसुर्मयरात्रिधनाधिपेषु यो केषु शे स्याद
 लुहादुके च॥ दृष्ट्याषध्याख्या नधने पुर जे वसुस्तं स्यान्मधुरे न्य वज्र॥ तासा तु
 नासिं काया स्यान्नादाघदारुणि॥ न्नातु कथिता वासि श्रेष्ठ मृत्तिवया बुधे॥ दि
 सा चोया दिवधयो शंसावचन वासयो॥ मिमिस्तु मधुरी मां स्या शतपुष्पा ज मोद
 यो॥ कासुर्विकलवाचिस्या कासु शक्त्या युधे पिचा॥ प्रसरश्चा जतन्योश्च कदली वी
 रुधोरपि॥ ॥ सत्रि॥ ॥ अलसपाद रोगे स्यात्क्रियामंदे दुमांतरे॥ अलसायां सपायां च

९ ध

रनौसोदर्विषयाः॥पतसःकंटकिफलेकंटकेकपिरुग्निदो॥सुरसःस्याममधुरेपणा
सेसुरसापिच॥सारसःपक्षि नोदक्षोसारसंसारसीरुदे॥श्रीवसौद्वकधूपेस्यात्यं वजे
पीतवाससि॥सादसुबलाकारेहतकायेदमेपिच॥वासोद्वजलनियसिजगरेस
निषर्षके॥लालसोलालसापिस्याद्यात्रावृक्षातिरेकयो॥श्रीसुकोतुसमाससुस
हेपेचसमर्थने॥कीकसःत्रमिजातोस्यादस्त्रिकीकसमिष्यते॥पायसमारमानेस्यादि
वासेपिचपायसः॥वायसोनाडिजंघेस्यास्त्रीवासेचागुंफुने॥काकोदुवरिकायाचका
कमाच्याचवायसी॥मानसंसारसीरवांतेपाश्चातोनिहंतोमतः॥आख्यायिकापरिके
देचान्यसो न्नासनेतिके॥उत्सामःप्राणनासासःगद्यबंधगुणांतरे॥इषासोधनिधन
षोर्विलासोत्तावलीलयो॥वीतसंबनोपायमृगाणापक्षिणामपि॥तेषांनेवचविश्वो
सदेतोप्रारवणेस्मृतं॥उत्तंसःकण्ठिरेस्याष्टेष्टेचावतंसवत्॥बीजसो न विवृतकरे
पुर्जनेचष्टणामनि॥विद्वानात्मविदेप्राइपडीतेचानिधेयवत्॥नृयान्वाकृतरा
थेस्यामुनरथेवदोव्यायं॥आयानवृधेतिशस्तेचरुविदेतिव्यसर्पिषोः॥रेषास्याद
यनेरुरूपणेपिचकथ्यते॥वेधाविधोबुधेविहोआगःपापापराधयोः॥वचोदी
होपुरावेचवचोरुपेपिचक्चिव॥छंदःपद्येचवेदेचखैरावाराजितापयोः॥ऐनो

रु ९

॥१०३॥

३ गुह्ये

पराधेकथं लुपेमनश्चित्तमनीषयोः॥रोदश्चरोदसीचापिदिविचक्ष्मोपृथक्पृथक्॥सहप्रयोगे
यनयोरोदस्यादपिरोदसी॥उज्ज्वलजसिधाक्तनामवष्टंजप्रकासयोः॥उज्ज्वलेचदीप्तोचते
जोधाक्षिपराक्रमे॥प्रजावतो जसोश्चाश्चरजस्यादात्रवेगुणे॥रजःपराजरेणोतुरजवत्
रिकीर्तितं॥वपुर्जव्यात्रतोदेदपयःस्याहीरनीरसो॥वयःपक्षिणिबाल्यादोवयोयौवत
मात्रके॥श्रेयस्तुमंगलेधमेश्रियांशस्तेतुवाचवत्॥३२॥श्रेयसीकरिपिष्ठात्यांअनयारा
स्तयोःपि॥श्रोतोःबुवेजंद्रिययोरोकाःसज्जनिजाश्रये॥३३॥शिरःप्रधानेसेनाग्रजाग
मस्तकयोःरपि॥तपश्चांजायणादौस्यादधर्मलोकांतरेपिच॥३४॥तपोमाधेचशिशिरेस
रस्तोयतजागयोः॥उषःप्रजातेसंध्यायामुरःश्रेष्ठेववक्षसि॥३५॥तनोधकारेस्वर्जनौ
तनःशोकेगुणांतरे॥ननोव्योमित्तनामेधेश्चावलेचपतव्यदे॥घ्राणेमृणालस्त्रे
चवर्षासुचननास्मृता॥तारोबलेचमधेचवेगेचरेतःश्रुक्चपारत॥अर्चिममुरवसि
ग्वयोवर्दिकुशदुताशयोः॥सहोबलेज्योतिषिमागंशोर्षहमतयोश्चापिसदाःप्रति
ष्टः॥रहोपिसुरतेचतत्रेमहोजवेदुसवतेजसोश्चा॥ज्योतिप्रकाशेदृशिताकासुज्योति
र्दितेशानल्योरपिस्यात्॥धनुःपियालद्रुमराशिजेदयोःशरासनेचापिधनुर्धरेचा॥
आशिरुक्तादिताशसापवनाशनदृष्टयोः॥राक्षसितिचदंष्ट्रायांराक्षसीराक्षसस्त्रियां॥

र ३

आशिरु

तामसीति च दुर्गायां तामसोऽनुजगेरवले ॥ पुष्पसीकालिकानीत्योः पु
 ष्पसः धपवेधमे ॥ १०४ ॥ नवतघनरसां प्रनिर्गसिमोरटे सुचा कर्पूरे पीलु
 पण्याचिसम्यक्सिद्धरसेपि च ॥ सर्वरसः स्मृतो वाधे नाड जेदे च धरण के ॥ स्मृतं ताम
 रसपदो तामकाचनयोरपि ॥ सिद्धसोरसेयाडिप्रत्तिषिपिदृश्यते ॥ मदारसः स्या
 खजरे कोशकारुक्शेरुणोः ॥ रासेरसुरासे स्याद्रससिद्धिबलावपि ॥ षष्ठीजागरि
 वेगोष्ठांशं गारपरिहासयोः ॥ स्वः श्रेयसं च न द्रे स्यात्परा नंदे च शर्मणि ॥ निः श्रेय
 संतुकर्याणे चंद्रचूडापवर्गयोः ॥ ऊं चीनासाविषदं ज्वाला कुलदष्टि जुजगमे ॥ ऊं
 चीनसीजनत्याचलवणारव्यास्यरक्षसः ॥ मलीमसतुमलिते पुष्पकाशिशलोदयोः ॥
 पौर्णमासपौर्णमासौ यद्वृष्टिर्गमयोः ॥ नृमात ॥ अधिः वासो निवासे च संस्कारधूपना
 दिनिः ॥ चंद्रहासो दशग्रीवकुरवासिमात्रके ॥ विश्वावसु स्यादंधर्वजेदे विश्वाव
 सुनिशि ॥ विश्वावसुर्दिनमणोदरजेदे च पावके ॥ पुनवसु तवे काकुकाचायन
 मुतावपि ॥ राजहंसो नृपश्रेष्ठे कादे बकलहंसयोः ॥ कलहंसककादे बेराजहंसे
 नृपोतमे ॥ अवधंसः पाश्र्वित्यागे निदनेष्वचूर्णने ॥ स्मृतं तामभूरसाद्राकां नृविंका
 दुग्धिकासुच ॥ नीलजलासरोजदसरिद्रदेपिविद्यति ॥ सुमेधास्तु बुधो स्यात्

१०४॥

४ स्या

जोतिष्मत्प्राप्यते ॥ सुमना पुष्पमालत्योस्त्रिदशे कोविदेपि च ॥ प्रचेतास्तु नोदष्टे
 प्रतीचीदिगधीश्वरे ॥ विहायाश्च शकुंते स्याद्विहायः सुरवर्त्मनि ॥ त्रिस्रोता जहुवन्याया
 त्रिस्रोताः सरिदंतरे ॥ अगोकाश्च नगोकाश्च सररुसंदपक्षिषु ॥ उदचिरुद्रववहोदि
 वोकाश्च तवेसुरे ॥ दीर्घायुः शास्त्रलोका के माकंडेपि च जीवके ॥ सप्तार्चिः पावेके प्रोक्तः
 सप्तार्चिः क्रूरचक्रुपि मकनीयाननुजे स्वल्पकनीयानतियुति च ॥ वरीयानतियुति
 स्यादरिष्टे श्रेष्ठयोग्यो ॥ साधीयानतिबालहस्यादतिसाधौ तु वाच्यवत् ॥ सपं
 स्यान्नं नश्चमसश्चंद्रे चित्रारूपेन्द्रजालयोः ॥ दिग्गुनिर्मास इत्येव निवेदिगुरसेपि च ॥
 दिव्यचक्रुः सुगंधस्य नंदधेचसुलोचने ॥ हिरण्यरेतसंप्रादुर्दिवाकरदविजुजो ॥
 इतिसांतवर्गः ॥ ॥ हृदि ॥ ॥ सहाबले सहामुद्रपण्यांतु नखनेषु जे ॥ सददेवानुमायो
 श्रसहः क्राते सहा लुचि ॥ ग्रहो निग्रहनिर्बंधग्रहणेषु रणोद्यमे ॥ सूर्यादौ प्रतनादौ च
 सैदि केयो परागयोः ॥ बह्वृष नस्वंधदेशे गंधवदेपि च ॥ बह्वृष केले किपिछेष्टहा
 पन्यागृहस्मृता ॥ ग्राहो ग्राहो वरादे च नादौ बंधनरूटयोः ॥ स्नेहस्नेहादिकसं
 प्रत्ये स्यात्सोददेपि च ॥ प्रोहो निपुणवै स्यात्प्रोहो हस्त्यादिपर्वणो ॥ नोदमिधं तिष्ठ
 र्वायामविद्यायां च सुरयः ॥ नोदस्तु शौस्त्रके लोहं जांगवे सर्वते जसो ॥ बृहस्प

कृ३

कलविन्यासेनिर्माणे वृंदतर्कयोः॥१॥ सिंहः कंठीरवेशौ सत्तमे चोत्तरास्तितः॥ सिं
 हीकृपावृहयोः स्यात्तस्य केराकुमातरि॥ ब्रह्मः स्यात्किं मुने च्यादिसंख्या
 स्वप्यनिधेयवत्॥ अहि वृत्रासुरे सपेपीहान्द्यमवाच्योः॥१॥ गुहातुग
 करे सिंहपुच्छांस्कंदे गुहोमतः॥ वाहानुनायां वाहस्तुमानने देवदेहयोः॥
 महीचर्मो महीनद्यां महत्सवतेजसोः॥ कुहूः स्यात्को किलात्नापनेष्टे
 कलदशयोः॥१॥ हत्त्रि॥ पटहस्तु समारंजे आनके पटहः स्मृतः॥ कलहः
 खड्गकोशे स्यात्तु मे युद्धराटयोः॥१॥ प्रग्रहस्तु तुलास्तत्रे वंदां नियमने नु
 जे॥१॥ हयादिरस्मोरश्मो वसुवर्णहिरिपादपे॥१॥ निग्रहो नर्मने प्रोक्तो
 मर्यादायां च बंधने॥ विग्रहः समरे काये विस्तारप्रविज्ञागयोः॥ संग्रहो वृद्धदुरं
 जे मुष्टिसंज्ञे पयोरपि॥ आग्रहो नृगदासुक्तो राग्रहो नृगपि च॥ प्रग्रहस्तु
 स्त्रत्रे वषादि प्रग्रहपि च॥ वराहादि विरो विज्ञा मानके पयस्त्रिभुक्तयोः॥ तवा
 हस्यात्तव दिननवारः प्रतीपतीथो॥ प्रवाहो व्यवहारस्यादपि श्रोतसिवारिणः॥

हृ३

॥१०५॥

कदा होतु तैलादिपाकपात्रे कथ्यते॥ कटाहकर्मपट्टे चस्तपे च महीषाशिशोः॥ उष्मा
 हस्तद्यमे सत्रे पारो होदैर्घमानयोः॥ आरोहणे तितं वेच समुद्रयनिषादि नोः॥
 निग्रहः शेषरेदारे निर्यासे नागदतके॥ वात्स्रहः कालकंठे स्याद्वात्स्रहश्चातके पि
 च॥ अत्स्रहानीति कायां स्यादत्स्रहश्चित्रमेखले॥ सुवहाशस्त्रकी गोधापदी सेपा
 लिमुच॥ एलापण्यां च सुवहावस्त्रकी रास्तयोरपि॥ सम्यच हेतुमुच्यो वाच्य च
 तमुदाहृतः॥ वैदेहीरोचनासी तावलि कस्त्री पिष्यलीमुच॥ वाराही मातृ होदे स्या
 द्दुष्टिनामोषधे पि च॥॥ हच॥॥ अवग्रह इ विरक्तातो वृष्टिरो ये गजालिके॥ स्वतं
 त्रार्थनिषेधे च प्रतिबंधे प्यवग्रहः॥ प्रतिग्रहः स्वीकरणे सैत्यपृष्ठे पच्यते॥ द्विजेभ्यो
 विधिचदेयेतद्गृहे च ग्रहांतरे॥ परिग्रहः परीजने पत्र्यां स्वीकारमूलयोः॥ श्रीदेवप
 ग्रहो बंधामुपयोगे नु कुलके अग्निग्रहो जियोगे तिग्रहो गौरवे पि च॥ परिवर्द्धं तु राजा
 र्वस्तु न्यपि पृष्ठे॥ पितामहो विरचे स्यात्तातस्य जनके पि च॥ तमोपहः सदस्त्रां शुभगां क
 जितवक्त्रिणु॥ उपनाहो व्रणलोपपिडे चीणनिबंधने॥ परिचाहो जलाकासे महीभूद्योग

५ वा

वस्तुनि॥ तद्वरुहंगरुहोमोर्वगरोहाटाकावपि॥ वरगरोहस्तु कथितो हस्त्यारोहा वरोहयो॥
 अवरोहो वतारेस्यावरोहगतो जमे॥ अश्वारोहा श्वगंधायां अश्वारोहा श्वचारके॥ महा
 सहामाषपण्या अम्लानकुसुमेपि च॥ गंधवहातु नासायां वायौ गंधवहो मतः॥ नवेदेवस
 हातिरव्यास्तते दं हो तप्लेषधो॥ ॥ हपं॥ ॥ प्रपितामह इत्येष विधौ पितृपितामहे॥ ॥ इति हां
 तवर्गः॥ ॥ पांताः स्फुर्यद्यपि कं तावर्गानि नो तुरोधतः॥ पृथक् क्रमेण कथं ते तथाप्येते सम
 व्यायातः॥ ॥ कृद्धि॥ ॥ अकृकले तुषे च केशकटव्यवहारयोः॥ आत्मदेपाशके चाकं तुष्ट
 सौवर्चलेन्द्रिये॥ कृद्धो प्रिजेदे नष्टकेशो कलेरुत वेधने॥ कृद्धमुक्तं च न ह्येयदः श्रीगुह्य
 देवके॥ दृक्ः परोहरवृषेतां मचूडे प्रजापतौ॥ मुनिजेदे हुने वदौ दृक् दृक् सुविस्मृता॥
 पद्मो मासाध के पाश्च्ये ग्रहे साध्य विरोधयोः॥ केशादेः परतो दृं देवले सखिसहायायोः॥ प
 तत्रेचुकिरंध्रे च देहांगे राजकुंजरे॥ लक्ष्मशरव्ये संख्यायां लक्ष्मस्तनिकथ्यते॥ प्रकादिप
 विषेशे स्यात्तु वरी गदनाडयोः॥ पिषा लेदूरपाश्च्ये च गृहस्य परिकीर्तितः॥ न्यकः परशुरामे ॥१०५॥
 स्यान्महं कास्तीति कथ्योः॥ चोदोगी तं शुचौ दाकः तथाती कृतमनो ह्योः॥ धां कृस्तु काक
 वकयोस्तु के तिकु के गृहे॥ धां की कं कौलिकायां च कदो दोर्मल कथ्योः॥ सोरजे चरणे कद

शुभे काननवीरुधोः॥ कदो ग्राहिका कां चीप्रकोष्ठगजस्तु॥ स्रष्टा पादपरीधा तपश्चादं
 चलपक्षवे॥ रथतावेपि कदास्यादी कं विस्मयदृश्योः॥ मोहो मुष्क कटके स्यादपवर्गे च मो
 चने॥ रूपादपजा तो स्याद्दृष्टो प्रेक्षण्य चिक्रे॥ तिहास्तौ च याश्चायां सेवा
 तिहितवस्तुनोः॥ प्रेका न पेदृणे बुधोरहारहण लक्ष्योः॥ ॥ कृत्ति॥ ॥ अर्धहो
 धिष्ठते प्रोक्तप्रत्यक्षे धर्मिष्यते॥ गोरं हो नागरं गे स्यादुवां च परिरक्षणे॥ आ
 रं रं रणी ये स्यादीर्षमर्मणि दतिना॥ रक्ताकः कासरे कुरे पारापत च कोरयोः॥
 सती हाग्रं च ते दे स्यात्तव बुधो निहालने॥ उभ्रेहा नवधाने स्याका व्यालं कणे
 पिच॥ नृगादी चेद्रवारुण्या नृगनेत्रा त्रियामयोः॥ गवादी शक्रवारुण्या गवा
 हो जालके कपो॥ ॥ कृच॥ ॥ वीरवृक्षस्तु जलातककुलमयो मतः॥ राजवृक्ष
 पियाले स्यात्सुवर्णलुतरावपि॥ देववृक्षे सप्तपत्तनगारादिषु गुण्योः॥ नृतवृक्ष
 शुशाखो देतथो स्यात्ताकपादपे॥ विशालाक्षो हरेताक्षो विशालाक्षी चरस्त्रिया
 सकदो टाधवद्रो स्यात्ताकसहितेपि च॥ ॥ इति हां तवर्गः॥ ॥ अथाव्ययानिवह
 ते व्यक्तं पूर्वाक्षरक्रमात्॥ अकारादिकमप्यस्मिन् अधिकं पूर्वतो विदुः॥ अस्यादनेस्व

त्यर्थे विष्ठावेषचनव्ययं॥ आडू सीमायामतिव्याप्तौ क्रियायोगे प्रदर्शयोः॥ आप्र
गृह्यस्मृतौ वा कोऽसंतापप्रकोपयोः॥ इषेदेचरुषोऽनौ चकामदेवेनव्ययं॥ इदु
खतो वने कोपे लक्ष्मणासीत्यादनव्ययं॥ उसबुद्धौ रूषोऽनौ चशिववाची चनव्ययं॥
ऊवाकारं न कृच्छ्रकारं व्यतिषनव्ययं॥ ऊवापि कुसायां देवां वायां चनव्ययं॥ एऐशेषे
तु हे हे वरस्मृत्या मंत्राणां हतिषु॥ उर्गशेषे तु हो हो वरसं बुद्ध्या कानयोर्मतोऽनुपा
पे चेषदर्थे च कुसायां च निवारणे॥ मनागल्ये च मंदे च थि कनिर्जसनिर्दयोः॥ अ
जसं बोधने दधे पुनरर्थे च कीर्तिते॥ तिर्यक् तिरोर्थे वक्त्रे च विदगादौ चनव्ययं॥ चान्वा
चये समाहारे ष्यन्योन्यार्थे समुच्चये॥ पक्षांतरग्रहे पादपूरणे व्यवधारणे॥ प्राक्
प्रताते व्यतीते च दिग्देशकालतस्मृतं॥ प्रागपि च पूर्वस्मिन् नवैतप्रागष्टवांतरे
ननु च प्रश्नदुष्टोक्तोः सम्यक् बाढप्रशंसयोः॥ किंचारं चैव साकल्ये हि रुक्ममध्यवि
नार्थयोः॥ नजप्रज्ञावे निषेधे च स्वरूपा र्थे व्यतिर्क्रमे॥ इषदर्थे च सादृश्ये तद्विरुद्धत
दंतयोः॥ ॥ अ॥ सुष्ठु प्रशंसने पिस्यादत्यर्थे पि च कथ्यते॥ अपष्टु निरबंधे स्मात् शोभना
र्थे पि च स्मृतं॥ अंतरेण पदं विद्यादिना मध्या र्थयोरपि॥ ॥ ए॥ तु पादपूरणे नेदे सनु

॥१७॥

चयेवधारणे॥ अरु स्मादत्यनुज्ञाने ष्य स्तया पीडयोरपि॥ श्वितप्रश्ने वितर्के च शश्वत्
पुनः सदा र्थयोः॥ पश्चात्प्रतीच्यां चरमे साहायप्रत्यक्तुल्ययोः॥ सन्नसहैकवारे
स्मात् आरादूरसमीपयोः॥ यावत्तावत्परिच्छेदे काश्चेन्मातेवधारणे॥ पुरस्ताच्चतुष्टुप्रा
च्यापुरार्थे प्रथमे प्रतः॥ उतप्रश्ने वितर्के स्मादुतात्यर्थविकल्पयोः॥ किमुतातिशये प्र
श्ने विकल्पे च प्रयुज्यते॥ हतदुष्टे विधादे च वाक्यारंभानुक्रमयोः॥ स्वस्त्याशीः केन
पुन्यादौ यद्वत्प्रश्नवितर्कयोः॥ नतामंगसंतोषखेदादुक्तोऽविस्मये॥ अहो बत
नु कपायां खेदे सं बोधने पि च॥ तत आदौ परिप्रश्ने पंचम्यर्थे कथांतरे॥ आनंतये
ऊतप्रश्ने पंचम्यर्थे च निद्रुते॥ अतो न वेकारणापदेशनिर्देशयोरपि॥ पंचम्यर्थे त
तः प्रोक्तं पंचम्यर्थे च शासने॥ संज्ञावनावयवयोरंततः पदमिष्यते॥ इतो यतश्च
नियमे पंचम्यर्थे विज्ञागयोः॥ इति प्रकरणे देतो प्रकाशादिसमाप्तिषु॥ निर्देशने प्र
कारे स्मादनुकर्षे च समतं॥ अतिशब्दः प्रशंसायां प्रकर्षे लुब्धने ष्यति॥ इति स्वरूपे स
निध्ये विवक्षानियमे मते॥ नितोता संप्रति के पवाचकोप्ये पदशितः॥ प्रतिप्रतिनि
॥ वीप्सालक्षणादौ प्रयोगतः॥ मात्रार्थे चातिमुख्ये च प्रतिदानादिषु प्रति॥ २६॥

अथोऽथ च संप्रश्ने मंगलारंभे योरपि ॥ अतन्तरे च कास्ते च शंशये च प्रकी
र्तितौ ॥ यथा शब्दस्तु निर्दिष्टस्तु त्वयोगानुमाने यो ॥ तथा स्यान्ति श्रयेषु
प्रतिवाक्ये समुच्चये ॥ उक्तौ चो देश निर्देश सादृश्ये तु प्रकीर्तितौ ॥ कारण
स्योपपत्तौ च सर्वथा हेतु बाढयो ॥ अन्यथा वितथार्थे स्यादन्यथा परमार्थके ॥
दृष्टानिः कारणे वध्ये दृष्टा स्याद्वाधिवर्जिते ॥ ॥ य ॥ उत्तमप्रकाशे वियोगे च
प्राच्यस्योक्तशक्तिषु ॥ प्राधान्ये बंधने तावे मोहे ला तौर्द्धकर्मणो ॥ ॥ द
नु स्या प्रश्ने विवक्ष्यार्थे प्रतीतानुनाथार्थयोः ॥ ननु प्रश्ने प्यनुनये नु हाने प्यव
धारणे ॥ आमंत्रणे चापि ननु किं ननु प्रश्नवितर्कयोः ॥ नाना विनार्थे पि नवे
नानाने को नयार्थयोः ॥ स्ताने नु कारणार्थे स्यात् युक्त सादृश्ये योरपि ॥ अ
नु हाने सहा र्थे च पश्चात्सादृश्ये नु ॥ आयात्ते च समीपे च लक्ष्मदा वनुक्रमे ॥
नि निवेशे नु शार्थाधो जाव संशय शशिषु ॥ आश्रये च नै धने मोहे दान कर्म
णि दर्शने ॥ अत न्ना वे च समीप्य को श लो परमेष्ठु च ॥ नित्यार्थे संयमे चापि हे
पार्थे पि च निश्चितं ॥ ॥ न ॥ अय स्यादपठेष्टार्थे धर्ज नार्थे वियोगयोः ॥ विषयये

॥१०८॥

२०

वामास्यादिकस्योपमयोरपि समुच्चये ॥ विशेषतः तानार्थे विस्मयहिषनव्ययं ॥ ५
पिविहृतौ चोर्थे निर्देशद्वययोः ॥ उपसामर्थ्याद्विषय दोषारव्या ना त्वयेषु
चा ॥ आचार्य करदा ने व्यापार न पूजयोः ॥ तद्योगे पि च लिप्साया मरणा
र्थी द्यमार्थयोः ॥ उपहाने धिक् प्रोक्तमा सने प्युपकीर्तितं ॥ अतिसं जावता
प्रश्नशंका गहसंस्तु चये तथ युक्त पदार्थेषु कान्ता रक्रिया सुच ॥ ॥ प ॥
वेशष्टु उपमायां स्यादोवरु लोत्वन व्ययं ॥ वै स्यात्सं बोधने पादप्ररणे नु न
ये पि च ॥ ॥ ब ॥ अति कं न्त कथने प्यति वीप्सा ति मुख्ययोः ॥ ॥ न ॥ स पा
दप्ररणे ती ते सामि नि दार्थयो र्मतं ॥ अमा सहा र्थी ति कथो नु न ति श्रित त
र्कयोः ॥ का संप्रका ने नु मता वस्तु या नु गमे पि च ॥ नाम प्रकाश्य संज्ञा व्यकुसा
न्युपगमे पि च ॥ सांप्रतं चाधुना र्थे स्याद्युक्तार्थे चापि सांप्रतं ॥ द्विवितर्के परिप्रश्ने
हे कोपे प्यनुजी विषु ॥ उप्रश्ने गीत तौ रोषे आस्तु तौ चा वधारणे ॥ उप्रश्ने चरुपोक्तौ च
प्राधनं नाना नु कु लयोः ॥ किं प्रश्ने पि च कुसाया कं शिरः सुख वारिषु ॥ उमित्यनुमितौ
प्रोक्तं प्रणवे चाप्युपक्रमे ॥ एवं प्रकारोपमयोरंगीकारे वधारणे ॥ अस्तं नृपण

पर्याप्तिवारणेषु निरर्थके॥ अलंशकौ च निर्दिष्टं शं कल्याणे सुखे पि च॥ संसंगा
 र्थे प्रहृष्टा र्थेशो न नार्थसमार्थयोः॥ जोषं सुखे प्रशंसायां तस्मीं लंघनयोरपि॥ त
 स्मीं वानुमौनेमौ नशीले वनव्ययं॥ तदि नदि न मध्ये स्यात्तदि न प्रति वासरे॥
 प्र अतीक्षु मुदुरश्रां तेशी घ्नं कषयोरपि॥ अतीक्षु पुनः पौ न पौ न्ये स्या संतते
 पि च॥ इदं नि वा क्यं नृपायां संप्रत्यर्थे च दृश्यते॥ कथं प्रश्ने संज्ञने च॥ प्रकार
 र्थे च संज्ञने॥ किं न संज्ञा वनायां स्यादिति शं च प्रकीर्तितं॥ नृशं प्रकर्षे चात्यर्थे
 अवश्यं नित्य निश्चये॥ अयि प्रश्नानुनयोः॥ समयं तिक मध्ययोः॥ अयि क्रो
 धे विषादे च संज्ञने स्मरणे पि च॥ प्रप्रकर्षे गतार्थे दुः स्यात्कष्ट निषेधयोः॥ पुन
 रप्रथमे जे दे स्वः स्वर्ग परलोकयोः॥ परा विमोह प्राधान्या प्राति लो म्येषु ध
 र्षणे॥ अति मुखे नृशार्थे च विक्रमे च गतौ वधे॥ पुरा पुराणे नि कटे प्रबंधा ॥१०९॥
 तीत न्ना विष्णु॥ परि स्था सर्वतो ज्ञा वे वज्र ने लणो के दिषु॥ पूजा लिंग न वी प्राशु
 नृषणे व्याधिशोषयोः॥ दोषारव्याने शु परमे व्याप्तौ निवसने पि च॥ प्रादु प्रा

काश्यटौ स्यात्संज्ञा व्ये च प्रयुज्यते॥ निर्निश्चये न्ना द्यर्थे निर्निःशेष निशेष
 योः॥ अंत मध्ये तथा प्रां ते स्वी का रार्थे पि चे तसि॥ उररी चो ररी चो री विस्तारे
 गीह तौ त्रयं॥ अंतरापि विधे नौ स्यात्त मध्यार्थनिका रार्थयोः॥ किल शष्प स्तु वा
 त्रियां संज्ञा व्यानुनयार्थयोः॥ खलु स्याद्वा क्यं नृपायां जिहासा दौ च संज्ञने॥ नि
 षेधने च वीसायां खलु माने च कीर्तितं॥ अचालं वन विहान विद्योग व्याप्ति सि ५
 दिषु॥ ईषदर्थे परि न वे एवो पक्षे वधारणे॥ उषारा त्रौ च दं ते स्या दनान वा
 यमप्युषा॥ दोषारा त्रिरेवे नृरात्रौ ग दं न व्यजमप्यसौ॥ नि कषा चंति के मध्ये रक्षो
 बायां च न व्ययं॥ ॥ सुपूजायां नृशार्थानुमतिस्तस्मै दिषु॥ पुरतः प्रथमे च
 जे अग्रतः प्रथमाग्रयोः॥ पुरो जे प्रथमे च स्या दंजसा तत्र तूलयोः॥ समी पे च जितः ॥
 शीघ्र सा कल्यो नय शा तिषु॥ दंत तः शा सनो त्रे हा वयव पे च पु च॥ अजितः शीघ्र सा
 कल्य संमुखो नय तो तिके॥ नृयः पुनः पुनः स्वा तं प्र नृता र्थे च न व्ययं॥ नित्य निश्च
 ये निशेधे च सा कल्या ति तयोरपि॥ तिरो तर्क्षे ति र्गर्थे मिशो न्यो न्यं मिथारहः॥ ॥
 वेद्युरिष्यते प्रातः पूर्व बुद्धिर्म वा सरे॥ शनैः शनैश्च रे स्त्रौ रे ता चैः स्त्रै रा ल्ययो मति॥

हस्यासंभोधनेपादः पूरणेन व्ययं शिवे ॥ हा विषादे च शोके च दुःखार्थेपि च कथ्यते
 हि पादपूरणे हतौ विशेषेण व्यवधारणे ॥ हि दुःखहेतावुद्दिष्टो ही विस्म विषादयोः ॥ हा हा
 खेदे च दुःखहेतौ गंधवे च न व्ययं ॥ हे हे व्यक्तौ समस्तौ च हतिसंभो संभोधनाथो
 यो ॥ हा हो चैवं विधौ हे यो संबुध्यमानो रपि ॥ सहसा कल्पसादृश्ययोगपद्यसम
 क्षिप्त ॥ विद्यमाने च संबन्धे सहस्रप्रविर्तितः ॥ अहा धिगर्थेशो केच करुणार्थवि
 षादयोः ॥ आहो तता हो धावतौ परिप्रश्नविचारयोः ॥ अह हेत्यहते खेदे ही विस्म
 यहास्ययोः ॥ अह हस्यादनुशये परितो शप्रमेदयोः ॥ इह शब्दो नियो गार्थे हे पाथे
 पितिवध्यते ॥ मं कुशीघ्रे न शार्थे च तवाथे पिब चित्तं ॥ श्री ॥ ॥ इत्यप्यपाने का
 धैर्कर्तुः ॥ यद्यप्यवतया किंचिन्ना मात्र प्रतिज्ञाति च ॥ तत्र दानिष्यतां सदि
 तं निपाययणादिभिः ॥ १ ॥ एतच्च वीजैरखिलैरवश्यं प्रयोगसंभोधप्रका
 दया ॥ येन निष्कंठं चरं ततं सर्वज्ञाता स्वप्रणयितैव ॥ २ ॥ खेरप्रचा
 रैः परिकल्पिताभिः शब्दार्थसंभोधकथाप्रथाभिः ॥ प्रावाणीतिरप्राप्तमुदात्त
 मोदमाधातुमंत्रैः परिश्रमो न ॥ ३ ॥ एतां तति ततधियः हतहत्यतावमापा

॥११०॥

दयंतु सदयं मदयंतु चेत् ॥ नित्यं महेश्वरकवेः परिज्ञावयंतो वाचः परो न
 तिरता हितवंतिलोके ॥ ४ ॥ इति सकलवैद्यराजचक्रराजशेखरस्य कविरा
 जपरमेश्वरस्य जगद्यविद्यानिधेः श्रीमन्महेश्वरस्य तौ विश्वप्रकाशे परि
 छेदो द्वितीयः समाप्तः ॥ परमेश्वरेत्यादि श्रीमत्केशवसेनदेवस्य ॥ ॥ विश्वा
 तिधानकोशानि प्रतिलोकप्रज्ञाप्यते ॥ अमरेणैकवीजैर्लोकान्तरनाममा
 लिक्ता ॥ १ ॥ अत्र कृष्णः स्वयं च शिवः श्रीरुरिश्चरः ऊरुहणमरुद्देवे देव
 दानवमातरौ ॥ २ ॥ इदं देवस्तुर्द्वारा ही न वेदे विष्णु रैशिवः ॥ उर्वेधात्सुरनंत
 स्यादंब्रह्म परमः शिवः ॥ को ब्रह्मात्मप्राकाशचक्रैः किवायुयमाग्निषु ॥ कं
 शीर्षे सुमुखे सुहृत्तमौ शब्दे च विष्णु नः ॥ ४ ॥ स्याद्देवपतिर्दयोः प्रभो वितर्क
 रमिद्वये ॥ स्वर्गे व्योमि नृपेश्वर्ये सुखे सविदिस्वारवौ ॥ ५ ॥ गस्तु गत रिगं

धर्वेजंगातेजोर्विनायके॥स्वर्गेदिशिपशौरशौकजेनूमाविषोगिरि॥६॥ज
 लेक्षिद्यस्तुघंटीशेधाकिक्किण्यावधेधनौ॥डस्तुनैवरविषयेछयोश्चश्चप्र
 चौरयौ॥७॥छःसूर्येष्टेदकेकुनिर्मलेजस्तुजेतरि॥विगतेजूननोवाचि
 पिशाच्याजवनेपिच॥जोतष्टेचारुवायौजोगायनवधरेधनौ॥८॥टंष्ट
 थिव्याकरंकेचटाधनौठोमहेश्वरे॥शून्येष्टदृष्टनौचप्रमडलेडःशिवेध
 नौ॥९॥जायेगोनिगुणेशष्टेठकायांएस्तुनिफले॥कानेशस्तस्करेकोडतुष्ट
 योस्तापुनःप्रिया॥१०॥थोशीत्राणेमहीध्रेदंपत्न्यांदादाट्टदानयोः॥छेदेव
 धेनधागुलेकेशेधातरिधिमौ॥११॥धूरैर्नोकिंपचिंतास्तुनस्तुनिबंधबुद्ध
 योः॥नित्युरंनेतरिनुःस्तुत्यानौस्तूर्यापस्तुपातरि॥१२॥पवनेजलपानेचफा
 ङ्गजानितफनयोः॥फस्तुफकारेस्यातथानिफलजाषले॥१३॥बप्रचेत

॥११११॥

नि३

सिक्कलसेबिखांडजयोर्ननुडौनोलिष्ठनयोः॥ज्ञाकांतौनूनुविस्मिनेनीर्त
 येमशिवेविधौ॥१४॥चंद्रेशिरसिमामानेश्रीमात्रोधारलेव्ययं॥मपुनर्ब
 धनेयस्तुमातरिश्चयंपशौ॥१५॥यास्तुयातरिषदांगेयानेलक्ष्यांचयोध
 नौ॥तीक्ष्णवैश्यानरेमैकोराःस्वर्णजलदेधनौ॥१६॥रीजनैरुनयेस्तूर्येतिच
 द्रेचलनेपिच॥ललावेलाःपुनःशेषेवलयेवोमहेश्वरे॥१७॥वरुणोमास
 तेचस्यादौपम्येपुनरव्ययं॥शंसुरवंशंसुजेचस्यातशीशयनेमुनिशा
 करे॥१८॥षष्टेष्टेष्टुर्गर्जेविमोहेसःपरोक्षके॥सालक्ष्याहोक्रिपानेच
 हस्तेदारुणिश्रुतिनि॥१९॥कःकेत्रेरकसीत्युक्तामालाप्राकस्तूरिसंभता॥
 नामामेकार्थनातार्थेकाक्षराणामियंमया॥२०॥॥श्रीः॥इतिश्रीमहापं
 डीतअमरविरचिताएकाक्षरनाममाला॥॥छ॥॥कःखेचरतिक्
 रम्याकोजातःकिंविच्छरणं॥कोवंधःकीदृशीलंकावीरमर्कटकंपिता॥

ग्रीष्मे विं सुप्रदेयं रणलुज विविजयी कः पुमाने वृत्तं ॥ स्त्रीणां विं चातिपे
यं रतिपतिवशिनः विं फलं कामिनीनां भुसानी तं मनोज्वरमुरसिदृढ
यज्जही ते त्रयाणां लोकानां जीवनं विं क विवरसपदी ब्रह्मवर्णे श्वत्सुतिः
॥ पयोधरा ॥ ॥ संवत् १७४३ वर्षे शाके १६०८ प्रवर्तमाने आश्विन मास गुरु
तीथ्यां निशा उस्तु देवरात्रेण लिखितं ॥ कार्तिकेयदि ३० शुक्ले ॥ सं
विश्वप्रकाश ॥